Nagari-Pracharini Granthmala Sries No. 4.

THE PRITHVÍRÁJ RÂSO

OF

CHAND BARDÂI,

VOL IV.

EDITED

BY

Mohanlal Vishnulal Pandia, & Syam Sundar Das, B. A.
With the assistance of Kunwar Kanhaiya Ju.

CANTO LV to LXI.
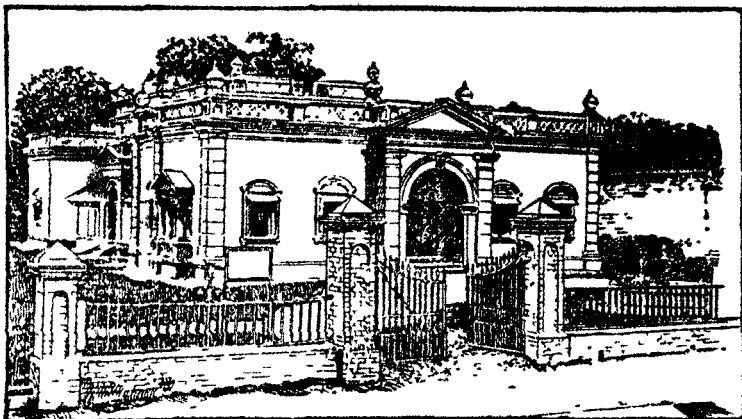
महाकवि चंद बरदाई

कृत

पृथ्वीराजरासो

भाग चौथा

जिसको

मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या और श्यामसुन्दरदास बी. ए. ने
कुँअर कन्हैया जू की सहायता से
सम्पादित किया।

पर्व्व ५५ से ६१ तक.

PRINTED BY THAKUR DAS, MANAGER, AT THE TARA PRINTING WORKS, AND PUBLISHED BY THE NAGARI-PRACHARINI SABHA, BENARES.

1910.

[Price Rs. 4/.

सूचीपत्र।

(५५) सामंत पंग युद्ध नाम प्रस्ताव।

(पृष्ठ १४१७ से १४४७ तक)

---

(५६) समर पंग युद्ध नाम प्रस्ताव।

(पृष्ठ १४४९ से १४६३ तक)

(५७) कैमास बध नाम प्रस्ताव।

(पृष्ठ १४६५ से १५०९ तक)

---

(५८) दुर्गा केदार समय।

(१५११ से १५५१ तक)

(५९) दिल्ली वर्णन समय।

(पृष्ठ १५५३ से १५६४ तक)

(६०) जंगम कथा प्रस्ताव।

(पृष्ठ १५६५ से १५७५ तक)

---

(६१) कनवज्ज समय।

(पृष्ठ १५७७ से १९५१ तक)

अथ सामंत पंग जुद्ध नाम प्रस्ताव लिष्यते।

(पचपनवां समय।)

पृथ्वीराज का प्रताप वर्णन।

कवित्त ॥ राह रूप चहुआन। मान लग्गौ सु भूमि पल ॥
दान मान उग्रहै। बीर सेवा सेवा छल ॥
बीय भंति उग्रहै न। कोइ न मंडै रन अंगन ॥
सबर सेन सुरतान। बान बंधन षल षंडन ॥
सा धम्म राह धर धरन तन। देव सेव गंध्रब्ब बल ॥
सामंत सूर सेवहि दरह। मंडे आस समुद्र दल ॥ छं० ॥ १ ॥

दूहा ॥ इक्क छष्ष महि हरष सुष। दुष भज्जै दल द्रब्ब ॥
अरि सेवें आसा अवनि। कोइ न मंडै ग्रब्ब ॥ छं० ॥ २ ॥

जयचन्द का प्रताप वर्णन।

कवित्त ॥ कनवज्जह जैचंद। दंद दारुन दल दुत्तर ॥
पच्छिम दष्षिन पुब्ब। कोन मंडै दल उत्तर ॥
छिल्लिय चिषय कोट। ओट अट्ठ दल पंगं ॥
सेव दंड अन मंड। षग्ग मंडन बल अंगं ॥
बहु भूमि द्रव्य घर उग्रहै। इम तप्पै रट्ठौर पहु ॥
सुष इंद्र व्यंद छत्तीस दर। मुकट बंधि बिन मान सहु ॥
छं० ॥ ३ ॥

अति उतंग तन बल। विभंग जग मद्धि सूर जुध ॥
अद्भुत बाहु जम दाहु। काल संकलप काल क्रुध ॥
कोप पंग को सहै। फुट्टि दल आनिक सादूर ॥
बल बलिष्ट जनु इष्ट। दिष्ट कंपहि बल कादर ॥
निम्मले सूर तन सूर जिम। समर सज्जि गज्जे सुवर ॥
आवाज कंन पंग्गह सुनी। हलकि कंपि दिल्ली सहर ॥ छं० ॥ ४ ॥

दूहा ॥ दिट्ठि सु नृप दिष्षे सकल। दिल्लावत बनि सेन ॥
मनो सकल अग सुंदरी। जग्गावत पिय मेन ॥ छं० ॥ ५ ॥

पृथ्वीराज का शिकार खेलने जाना।

कवित्त ॥ इक्क सबल सित सूर। इक्क बल सहस प्रमानं ॥
इक्क लष्य साधंत। दंति भंजै गज पानं ॥
इक्क विरुध जम करहि। इक्क जम जोर भयंकर ॥
इक्क जपहि दिन अंत। करन कलिकाल षयंकर ॥
सुभ सेव ध्रम्म स्वामित्त मन। तन छित्तन मंडै वियौ ॥
तिन रष्षि घरह प्रथिराज नृप। अप्पन आषेटक कियौ ॥
छं० ॥ ६ ॥

राजा जयचन्द की बड़वाग्नि से उपमा वर्णन।

अगस्ति रूप पहु पंग। समुद सोषन धर ढिल्लिय ॥
बयर नयर प्रज्जरहि। धूम डंबर नभ हल्लिय ॥
सजि चतुरंगिय पंग। जानि पावस अधिकारिय ॥
रज्जि रज्ज चष घुम्म। सेन संभरि उच्चारिय ॥
अरि त्रिय नयन्न बरिषा जुजल। मोर सोर डंबर कथिय ॥
प्राची प्रमान संमुह अनिय। मुष पंगुर विज्जनु मनिय ॥छं०॥७॥
अढर ढुरहि गढ़ रुरहि। मेर षर भर सुपरहि भर ॥
कसकि कमठ पर पिट्ठु। सेस सल सलहि छाड़ि धर ॥
जल साइर उच्छरहि। नैर प्रजरहि जरहि घर ॥
जल थल होत समान। बंक छारंत बंक छल ॥

हिंदवान राह पहुपंग वर । थंपि लगो अरि भान ग्रह ॥
छुट्टै न दान कर दान बिन । पञ्चा पंति मंडौ सु रह ॥ छं० ॥ ८ ॥
दूहा ॥ दान छर छुट्टै न अहि । विषम राह कमधज्ज ॥
वह जठराग्नि राग विनु । इह जठरागि न सज्ज ॥ छं० ॥ ९ ॥
अभय भञ्जार अरि भवन । भ्रमत भूमि षग धार ॥
को कमधज्जह अंग मै । सो न बियौ संसार छं ॥ १० ॥

जयचन्द का राजसी आतंक कथन ।

कवित्त ॥ श्री अंगमै सु जम्म । जम्म को करै सँघारन ॥
को मुवी कर धरै । मूर महि कोन उपारन ॥
को दरिया दुत्तरै । नभ्भ ढंको रवि चाहै ॥
को सुन्यह संग्रहै । कोन उत्तर दिसि गाहै ॥
को करै पंग सो जंग जुरि । दनु देवत्तह नाग नर ॥
कलिकाल कलम कंकह कहर । उदधि जानि ऊलटि गहर ॥
छं० ॥ ११ ॥
बेली भुजंगी ॥ चलि पंग सेन अपारयं । अनभंग छत्रिय धारयं ॥
चहुआन बलनह बंधयं । द्रुगपाल क्रम क्रम संधयं ॥ छं० १२ ॥
भव भवन रवनति छंडयं । डर डरपि मुंडति मंडयं ॥
दुअ अट्ठ दिसि बसि बिच्छुरै । जल मीन भंगति उच्छरै ॥
छं० ॥ १३ ॥
भुअ कंप लंक ससंकयं । धर डुलत मानहु चक्कयं ॥
पिय पतिय मुकति लुप्पती । कहौं दुतिन दिष्षिय दंपती ॥
छं० ॥ १४ ॥
पहुपंग घूनिय ना रहै । सुरलोक संकति आरुहै ॥ छं० ॥ १५ ॥
दूहा ॥ सुरगन सरनी तल कुदल । षनि कहुँ हूं कंद ॥
घूनी पंग नरिंद कौ । को रष्षै कविचंद ॥ छं० ॥ १६ ॥
कवित्त ॥ अग्गें सिंघ सु सिंघ । सिंघ पष्षर्‍यो झलालह ॥
पंग अमृत फल चषै । अमृत लग्गी जु तमालह ॥
आगेई वर अप्प । नाम नंदन विद्या पढ़ि ॥
आगेई वर करन । भाम सावै चिंता चढ़ि ॥

को करै पंग सो जंग जुरि। सु विधि काम दिष्षै नषी॥
रिनमान काज रजपूत गति। संभरि वै संभरि रषी॥ छं० ॥ १७ ॥

जयचन्द के सोमत्तक नाम मंत्री का वर्णन।

पंग पुच्छि मंत्रीस। मंत्र पुच्छै जु मंत्र वर॥
सोमंतक परधान। मंत विग्गन्यौ मंड धुर॥
धवल सुमंत्री मंत्र। तत्त आरिष्य प्रमानिय॥
तारा क्रत संघरिय। चित्त रावर उनमानिय॥
विधि मंत्र जंत्र आरत्ति करि। साम दान भेदह सकल॥
जानो सु बीर सो उच्चरहु। काम क्रोध साधन प्रबल॥
छं० ॥ १८ ॥

सबद वाद से वरें। इष्ट मंत्री न तत्त गुर॥
बाल वृद्ध जुवती प्रमान। जानहि स भ्रम्म नर॥
स्वामि ध्रम्म उच्चरैं। कित्ति जुग्गीरह संधे॥
उर अधीन सम प्रान। जानि क्रत जानन बंधे
सह नित्त जीव दिष्षै सु पुनि। मुनि मयंक द्रिगपाल हर॥
कालंक बिनै को तत्त वर। क्रम्म बिना लग्गै सु नर॥ छं० ॥ १९ ॥

दिल्ली की दशा।

संभरि वै तजि गयौ। छंडि ढिल्ली ढिल्ली धर॥
जुद्ध करन न्रप पंग। कोइ न दिष्यौ सु सस्त्र नर॥
ग्राम धाम तजि बीर। बहुरि पत्तौ कनवज्जं॥
तारा क्रत चित्रंग। दियो संदेस सु कज्जं॥
करि करिनि कंक चित्रंग वस। करौ जग्य आरंभ वर॥
मंत्री सुमंत्र राजन बली। ते हक्कारे मंत धर॥ छं० ॥ २० ॥

जयचन्द का यज्ञ के आरम्भ और पृथ्वीराज को अपमानित करने के लिये मंत्री से सलाह करना।

पंग पुच्छि मंत्री सुमंत। पुच्छै सुमंत्र बर॥
पहु सुमंत विग्गन्यौ। जग्य मंड्यौ जु पुब्ब धर॥

सोइ मंत्री स प्रमान। अग्य धुर बधं सु बंधे ॥
स्वामि ध्रम्म संग्रहै। किंत्ति भग्गी रह संधे ॥
सह जीव अंत दिष्षै सहज। सुनि मयंक द्रिग माल बर ॥
कालंक दग्ग लग्गै कुलह। सो मिट्टावहि मंत्र नर ॥ छं० ॥ २१ ॥

अति उज्जल न्रप भरथ। भरथ जिहि वंस नाम नर ॥
तिन कलंक लग्गयौ। पुत्र हत्तयौ अप्प कर ॥
चंद दोष लग्गयौ। कियौ गुर वाम सहिल्लौ ॥
बर कलंक लग्गयौ। राज सुत पंड बुहिल्लौ ॥
चित्रंग राव रावर समर। विनक बंक छिची निडर ॥
आहुट्ठ राइ आहुट्ठ पति। सबर बीर साधन सबर ॥ छं० ॥ २२ ॥

सुभ्र सु मंत्र परमान। पंग उच्चरिय राज बर ॥
चाहुआन उद्धरन। अग्य उद्धरन मंत धर ॥
चित्त अग्गि भय अग्गि। जग्गि जग्यौ छल राजं ॥
तारा क्रत साध्रम्म। पंग कीजै ध्रम्म साजं ॥
जा ध्रम्म जोग रष्यौ नहरि। कौन ध्रम्म ध्रम्मन गरुअ ॥
मुकलौ मंत्र जे मंत्र उर। सुबर बीर बोलन हरुअ ॥ छं० ॥ २३ ॥

मंत्री का सलाह देना कि रावल समरसी जी से सन्धि करलेने में सब काम ठीक होंगे।

तब सुमंत्र मंत्रिय प्रधान। उच्चरिय राज बर ॥
चाहुआन बंधन सुमत्त। मंडनह अग्य धर ॥
नर उत्तिम चित्रंग। राज उत्तिम चित्रंगी ॥
कर अदग्ग दग्गन। अगत्त रष्यन गज अंगी ॥
कालंक अछिअ कट्टन सु छिप्र। पर सु चार तिन तिन करय ॥
चित्रंग राव रावर समर। मिलि सु अग्य फिरि दिन धरय ॥
छं० ॥ २४ ॥

कुंडलिया ॥ फुनि न स्यंद पहु पंग बर। उभयति बर बर जोग ॥
समर मिले कमधज्ज कौं। अग्य समप्पै लोग ॥
अग्य समप्पैं लोग। उभ्भ सारंग सुनाई ॥

एकल्ले सारंग। तिमिर अप कहूं न आई॥
वियौ तिमिर भंजियै। अप्प पुलि आइ तम्मं घन॥
अप्प तिमिर भंजिये। प्रलै छाइय सु अप्प फुनि॥ छं०॥ २५॥

सोमंतक का चितौर को जाना।

कवित्त॥ पंग जग्य आरंभ। मंत प्रारंभ समर दिसि॥
सोमंतक परधान। पंग हक्कारि बंधि असि॥
सत तुरंग गति उड्ड। पंग गजराज विशालं॥
मुत्ति अवेध सुरंग। एक दस लालति मालं॥
पंजाब पंच पंचों सु पथ। अड्ड देस अध बंटियै॥
चाहुआन बंधि जग बंधिकर। जग्य अरंभ सु ठट्टियै॥
छं०॥ २६॥

जयचन्द का मंत्री को समझाना।

आहुट्टां मझझांम। समर साहस चित्रंगी॥
निविड बंध बंधे। अबंध सा भ्रम्म सु अंगी॥
चिंतानी कलपत्ति। रूक रत मोह अरत्ता॥
सिद्धानी मोगर सुभैस। सम सद्द सु गत्ता॥
चहुआन चंपि चवदिसि करिय। जग्य बेलि जिमि उद्धरै॥
चित्रंग राव रावर समर। मिलि जीवन जिहि उब्बरै॥
छं०॥ २७॥

पद्धरी॥ मुक्कलै पंग बर मंत्र वीर। आनै सु गत्ति राजन सरीर॥
मन पंग छोइ सो कलें बत्त। बिन बुलत बोल बोलें सुतत्त॥
छं०॥ २८॥

आनै सु चित्त नर नरनि बत्त। अनि रत्त रत्त ते लषहि गत्त॥
कीटी सु श्रंग ज्यौं मिलहि स्याम। डर ग्रहैं रहैं आमित्त जाम॥
छं०॥ २९॥

तिन मध्य एक सारंग सूर। सह मत्त बिद्ध आनत सपूर॥
पाषंड टंड रचै न अंग। भारथ्थ कथ्थ भीषम प्रसंग॥
छं०॥ ३०॥

भ्रगुराज पंज जिम करिय देव । मंगी सु कृत्यु जिम कृत्य सेव ॥
संतन सुमंति स्वामित्त सत्त । रष्षै जु राज राजन सु पत्ति ॥
छं० ॥ ३१ ॥

पत्तौ सुजार चित्रंग थान । चित्रंग राज मिलि दीन मान ॥
छं० ॥ ३२ ॥

रावल समरसी जी का सोमंत से मिलना और उसका अपना अभिप्राय कहना ।

दूहा ॥ समर सपति पति समर की । समर सभेद सपंग ॥
जग्य बेद जौ उद्धरौ । भूमि भेद ग्रह जंग ॥ छं० ॥ ३३ ॥

पूव कही चलतहिं न्रपति । सुबर बीर कमधज्ज ॥
दीन भये दीनत भगै । सुबर बीर बर कज्ज ॥ छं० ॥ ३४ ॥

दीन भयें अरि अंग बर । छल छुट्टियै न छत्त ॥
मय मत्तह सो हत्त है । वै पुज्जै गुन मत्ति ॥ छं० ॥ ३५ ॥

रावल जी का सोमंत को धिक्कार करके उत्तर देना ।

नाम सु मंत्री तिन धर्यौ । रे अमंत परधान ॥
दीनत भयें भयौ न जग । जग्यबेर बलिदान ॥ छं० ॥ ३६ ॥

अरिल्ल ॥ मिलिरु समर उच्चरि चौहानं । जग्य करन पहुपंग निधानं ॥
त्रेता द्वापर कर्यौ जु देव । कलिजुग पंग जग्य करि सेव ॥
छं० ॥ ३७ ॥

कवित्त ॥ समर रूप सुनि समर । पंग आरंभ जग्य धुर ॥
सत्य पहुर बलिराइ । जग्य पहुरै सु जग्य बर ॥
बियौ पहुर रघुबीर । जग्य आरंभन जग्यौ ॥
तृतीय पहुर अग्गयौ । ध्रम्म सुत ध्रम्म न लग्यौ ॥
कलि पहुर जग्गि जग्यन बलिय । सुबर बीर कमधज्ज धुअ ॥
संसार सब्ब निंद्रा छिपिग । जग्गि जग्य बिजपाल सुअ ॥
छं० ॥ ३८ ॥

स्वर्ग इच्छ बलिराइ। जग्य किय भयौ पयालख॥
चंद्र जग्य मिट्टन। कलंक [1]का कुष्ट अंग गख॥
राज इच्छ राजस्तू। राज रा पंड पंड बन॥
नघुष राजस्तू जग्य। क्रूर कर कुष्ट क्रूप जन॥
कलिजुग्गराज राजसु करौ। कह्यौ दान षोडस करन॥
सित सित्त कोम बर बीर हर। हरि विचार लग्गौ चरन॥
छं०॥ ३९॥

अस्वमेद राजस्तू। लंब गौषंभ मेद बर॥
अगनि होच बर मेद। मध्य जग मेध अप्प बर॥
कनिष्ट बंध बड़बंध। चौय आचरन ग्रेह बर॥
ब्रत संन्यास आचरन। पंच चवकलि न होहि धर॥
कलि दान जग्य षोड़स करन। बाजपेय बर उद्धरै॥
नन होइ कोइ इन जग्य बर। इँसे लोइ बहु बिग्गरै॥छं०॥४०॥

पद्धरी॥ उच्चर्‍यौ मंच चिचंग राव। कलि मध्य जग्य नहिं भ्रम्म चाव॥
बल करौ नन्न मेषह प्रमान। जग्यौ न एक भुअ चाहुआन॥
छं०॥ ४१॥

चहुआन जोग छचौ अनंभ। अन्यन कोस सिक्तए मंझ॥
वय हीन इष्ट नन बल प्रमान। जग्गहि सजोग नह लच्छि थान॥
छं०॥ ४२॥

मंचौ न कोइ बर पंग ग्रेह। [1]नन होइ जग्य मानुष्य देह॥
चैवार काल चंपै प्रमान। बरजै न तास उर जग्य जान॥
छं०॥ ४३॥

अपजस विसाहि करि कुमत मत्त। पुच्छौ सु बत्त तौ कही बत्त॥
सुद्धरै बात सो करौ बीर। आवै न समर बर जग्य तीर॥छं०॥४४॥

रावल जी का कहना कि होनहार प्रबल है।

कवित्त॥ फुनि चिचंग नरिंद। चतुर विद्या सचित्त मति॥
भव भवस्य न्त्रिम्मान। ब्रह्म भूलै न्त्रिमान गति॥

(१) ए.-ना कुष्ट।

इह अजह चिंतवी । मह प्राहारन सांई ॥
तन मनुष्ष सम देव । बुल्ल बुल्यौ बल तांई ॥
चै लोक अप्पि बलिराइ ने । राम जुद्ध चैता सु बर ॥
जदुवीर सहाइक पथ्थ बंध । तब कुबेर बरब्बी सुधर ॥ छं० ॥ ४५ ॥
पंग सुवर परधान । समर सम्हौ उच्चारिय ॥
बलि सु अग्य बिग्गर्यौ । भ्रम्म छिबी न सम्हारिय ॥
चंद अग्य बिग्गर्यौ । मंत बिन घटन सु पत्तौ ॥
दुज्ज दोष नघु क्रत्त । क्रित्त अप्पनी सु हत्यौ ॥
इह भ्रम्म क्रम्म षल षंडि षग । जित्त जगत सब बस कियौ ॥
प्रथिराज समर बिन मंडलह । अवर अग्य नह हर लियौ ॥
छं० ॥ ४६ ॥
रावर समर नरिंद । समर साधन्न समर बर ॥
समर तेज सम जुद्ध । समर आहत्य समर घर ॥
सम समंति सम कंति । समति सम सूर प्रतापं ॥
समर बिधान बिधान । सिंघ पुज्जै नन दापं ॥
भव भवसि भूत भव भव कहहि । भवतव्य सु चिंता संभरिय ॥
चित्रंग राव रावर समर । इह प्रधान सम उच्चरिय ॥ छं० ॥ ४७ ॥

रावल जी का अपने को त्रिकालदर्शी कहना ।

हम नरिंद जोगिंद । भूत सुझ्झैत भवसि गति ॥
हम त्रिकाल दरसौ सु । क्रम्मं बंधै न मोष भति ॥
जु कछु पच्छ निरमान । अग्ग मुष सोइ उच्चारै ॥
सुनि सुमंत उच्चरों । जग्ग चहुँ नसि रारै ॥
मुनि देव राज दुज विदुष बर । रही अब तबह सु बर ॥
देषियै भलप्पन पच्छि बर । तौ अग्गैंई आइ धर ॥ छं० ॥ ४८ ॥

रावल जी का ऐतहासिक प्रमाण देकर प्रधान को यज्ञ करने से रोकना ।

बंदीजन रिषि ब्रह्म । अग्य पंडव बष्षानिय ॥

अकसमात इक प्रगट। निकुल आँपिय इय वानिय ॥
द्वादस वरस दुकाल। पऱ्यौ कुरखेत धरन्नं ॥
विप्र उच्छ व्रति न्हान। न्योति रिषि धोय चरन्नं ॥
तिहि पंक माहि लोटंत हौ। अद्ध देह कंचन भयौ ॥
पूरन करन्न तुम जग्य में। आयौ मन दाग न गयौ ॥ छं० ॥ ४६ ॥

दूहा ॥ कहि सोकवि परधान कर। इह सु कथ्थ चित्रंग ॥
तौ तुम अव जग ध्रंम से। कहा करहु पहुपंग ॥ छं० ॥ ५० ॥
अस्वमेद जग छसें करि। विस्वमित्र तप जोर ॥
कहा करै न्टप मंद मति। अहंकार मन ओर ॥ छं० ॥ ५१ ॥

सोमंत का कुपित होकर जयचन्द की प्रशंसा करना।

कुंडलिया ॥ पंग प्रधान प्रमान उठि। बचन श्रवन सुनि राज ॥
रत्त द्रष्टि अरु रुद्र मुष। चंपि लुहट्टी साज ॥
चंपि लुहट्टी साज। बचन बर बीर कहाई ॥
तर उप्पर चित्रंग। करहि जुग्गन पुर नाई ॥
सज्जे पंग नरिंद। तीन पुर कंपि अभंग ॥
असुर ससुर नर नाग। पंग भय भये सु पंग ॥
छं० ॥ ५२ ॥

कवित्त ॥ बचन उद्ध दिठ उद्ध। समर तप करन उचाइय ॥
पंग खज्ज सिर मंडि। बीर ब्रह्मंड लगाइय ॥
सोइ न्रपत्ति जयचंद। नाम जिन पंग पयानं ॥
इला धरन समरथ्थ। नयन कालौ जुग जानं ॥
कविचंद देव बिजपाल सुअ। सरन जाहि हिंदू तुरक ॥
चित्रंगराव रावर समर। रज नष्षै लग्गै अरक ॥
छं० ॥ ५३ ॥

जयचन्द का राजसी आतंक वर्णन।

पद्धरी ॥ बुल्यौ सुमंत्र मंत्री प्रमान। कनवज्जनाथ करि जग्य पान ॥
मिसि सेन सज्जि आषेट रूप। चिंता न चिंत्य बंधेत भूप ॥
छं० ॥ ५४ ॥

आरज्ज सैन प्रथिराज राज। बंधिति बखइ समरइ समाज॥
बन बहल गहन दुज्जन सभूमि। सर ताल बितल कहुंति तुंमि॥
छं०॥ ५५॥
बग्गुरि समैद गोरी उपाइ। बंधि सिंध उभय पच्छिम लगाइ॥
मंडै समूल सुरतान तौर। कारनाट कारन षुरसान मीर॥छं०॥५६॥
गुज्जर सु कोह दछिन लगाइ। लग्गै न गहन कहु अरिन पाइ॥
उतरत्त बंध पुब्बह प्रमान। चढ़ि देषि पंग पावै न जान॥
छं०॥ ५७॥
तारक सु षेद बंधे प्रसार। चहुवान चपेटक जुह भार॥
पाताल पंथ नन ब्योम पंथ। बन बहन हरन दुरि सोम अंथ॥
छं०॥ ५८॥
दल सज्जि करहि न्रप सच भेद। पहुपंगराइ राजह बेद॥
॥ छं०॥ ५९॥

यज्ञपुरुष का ऋषि के वेष में नारद के पास आना।

दूहा॥ आयौ रिषि नारद सद्रिस। धरम मूल प्रतिपार॥
मनों बिदिसि उत्तारनह। जग्य रूप सिरदार॥ छं०॥ ६०॥

नारद का पूछना कि आप दूबरे क्यों हैं।

दीन दिष्षि वर वदन तिन। ता पुच्छै रिषि राज॥
किन दुष्षह तन किस्सता। किन दुष्षह आकाज॥ छं०॥ ६१॥

ऋषि का उत्तर देना कि मैं मानहीन होने से दुखी हूं।

तब रिषि बोल्यौ रिष्य प्रति। अस्त्री अस्त्र सरूप॥
तिन कारन तन जरजर्‍यौ। अग्गि बिभंगन रूप॥ छं०॥ ६२॥
कवित्त॥ अंग षंड न्रप राज। मान षंडनति बिप्र वर॥
गुरु षंडन गुरु विद्रुष। लच्छि षंडन बिनक्क घर॥
निसि षंडन तिय जोग। सु निसि षंडन अभिमानं
क्रत षंडन उरदेव। जग्य षंडन सुरयानं॥
इतने षंड कीने हुते। तदपि दुष्ष जर जर तनह॥
आनैन देव दैवान गति। सुगति बिढि न्रम्मय घनह॥छं०॥६३॥

नारद ऋषि का कहना कि आपके शुभ के लिये यथा साध्य उपाय किया जायगा।

दूहा ॥ मोनंतहु तिन विप्र कहि । नव नव चरित प्रमान ॥
तू आग्या जो देइ गौ । सो आग्या परमान ॥ छं० ॥ ६४ ॥

विअष्यरी ॥ अग्गि समान जु अग्गि प्रमानं । विप्र और औरै उच्चारं ॥
जाहि कुचील कुचील करिज्जै । तौ वह बेद भंग नव लिज्जै ॥
छं० ॥ ६५ ॥

जो वह तन अत्यंत प्रकारं । बहुत भ्रम्म आरत उच्चारं ॥
पंड मंड लीने कर धारिय । कांति सराप भई सिल नारिय ॥
छं० ॥ ६६ ॥

तहां आइ वर बाज बिलग्गे । सुनें पंग आतुर मन मग्गे ॥
जौ आग्या इन भंति सु भज्जै । तौ ग्रेह होंहिं ग्रामि गुर सज्जै ॥
छं० ॥ ६७ ॥

हंका कार दुहू न्रप भारी । पंग जाउ जानै न प्रकारी ॥
जिन इहाल क्रम्मं गुन पेख्यौ । तौन बाल भारथ्थह भेख्यौ ॥
छं० ॥ ६८ ॥

उभै बान करि मान प्रकारं । सुबर बीर संचै सिर सारं ॥
छं० ॥ ६९ ॥

सोमंत का राजा को सलाह देना कि चहुआन से पहिले रावल समरसी दोनों को परास्त करना चाहिए।

कवित्त ॥ सुमत समंती स्याम । सुमति संग्रही पंग वर ॥
बंधि राज चहुआन । बंधि चित्रंग सम्म घर ॥
कुलप लज्ज पति जीह । बैन क्रक्कस उच्चारहि ॥
* ... .
मधि भूप रूप दारुन वचन । पंगराइ अम्मर अरस ॥
सज सेन सु बंधौ बंध बल । देव राज देवह परस ॥ छं० ॥ ७० ॥

* छन्द ७० की चतुर्थ पंक्ति चारो प्रतियों में नहीं है।

सोचहि पंग नरिंद। राज जानी इह सत्तिय ॥
ता छची कों दोस। भूमि भोगवै न दुत्तिय ॥
पंग काल आरुहै। ताहि गारुरू न कोई ॥
सस्त्र मंच उब्बरै। सार धर धार समोई ॥
मयमंत सेन चतुरंग तजि। बढ़िय दंद हिंदुअ उभय ॥
दैवत्त काला दैवत्त तूं। दै दुवाह दुज्जन डरय ॥ छं० ॥ ७१ ॥

मंत्री के बचन मान कर जैचन्द का फौज सजना।

दूहा ॥ सज्जन सेन सु राज कहि। बज्जिग बज्ज सु लाग ॥
इक्कै विधिना अंगमै। बीय मनुच्छ न भाग ॥ छं० ॥ ७२ ॥

कवित्त ॥ तज्जि कमान जु तीर। छंडि अवाज गोरि चलि ॥
ज्यों गुन मुकि उठि चंग। सीह बर खग्ग अंड हलि ॥
त्यों पहुपंग नरिंद। सेन सजि धर पर धाईय ॥
असुर ससुर सर नाग। पंग पहुपंग हलाइय ॥
अच्छरत रेन अरि उच्छरत। कायर मन पछ अग्ग तन ॥
कविचंद सु सोभ विराजई। जानि पताका दंड घन ॥ छं० ॥ ७३ ॥

जयचन्द की सुसज्जित सेना का आतंक वर्णन।

कुंडलिया ॥ चढ़तें पंग सु सेन मिलि। तुछ तुछ कूंच प्रमान ॥
नदी समुद्रह सब मिलै। पंग समुद्रह आनि ॥
पंग समुद्रह आनि। सेन न्रप मंडप साचै ॥
सिंभ गंग उतमंग। रंग पल ती रंग राचै ॥
दइय पंग अनभंग। सक्क सहाय छिति डुल्लै ॥
मुदरि भान संचरी। दिसा दुरि धर पर चल्लै ॥ छं० ॥ ७४ ॥

चोटक ॥ पहुपंग निसान दिसान हुअं। सुनियं धुनि डुल्लि प्रमान धुअं ॥
विधि बंध विधिं क्रम काल डरै। जयचंद फवज्ज सु बंधि घरै ॥
छं० ॥ ७५ ॥

रथ सज्जि हयं गय पाय दलं। तिन मझि विराजति चाहि ललं ॥

नव बत्ति निसान निघोष सुरं । सुनियै धुनि धीरज तज्जि भरं ॥
छं० ॥ ७६ ॥

गजराज स घंटन घंट बजै । अनहद्द सबद्दनि जानि सजै ॥
घन नंकहि घुघ्घर पष्षर के । सु बुलै जलजात किधों जल के ॥
छं० ॥ ७७ ॥

पर टोपनि सीस धजाति हलै । तिनकी कबि देषि उपम्म कलें ॥
* चय नेचय मंडिय नेच उजास । भर मद्धि प्रगट्टि मनों कैलास ॥
छं० ॥ ७८ ॥

बँधि पंषि उमा बनि सीस सधी । बढ़ि ससि कला मनों ईस बंधी॥
चवरंग धजा फहरीति हलं । सु मनों ससि चाह बसीठ हलं ॥
छं० ॥ ७९ ॥

गुरु भान ति राह रु भूमि सुधं । सब अप्पि परी गह तात बुधं ॥
दमकै बनि कंति कती सरसी । निकसै मनु मानिक मंजर सी ॥
छं० ॥ ८० ॥

दिसि अट्ठ दुरी उपमानि जनं । सु मनों तम जीति रह्यौ रविनं ॥
ढुरि ढाल ढलं मिल सोभ धरै । चढ़ि देव विमान सु केलि करै ॥
छं० ॥ ८१ ॥

सु मनों जनु जुग्गिय जग्गिययं । सु मनों प्रलैकाल प्रथीपुरयं ॥
छं० ॥ ८२ ॥

रहस्सहि बीरति सूरति मुष्ष । मनों सतपच विकासिय सुष्ष ॥
मुरे मुष काइर भुम्भिझग मोद । मनों भए संझ सु दिष्षि कमोद ॥
छं० ॥ ८३ ॥

* यह पंक्ति छन्दोभंग से दूषित है । त्रोटक छन्द चार सगण का होता है किन्तु इस पंक्ति में एक लघु अधिक है । पाठ में कोई ऐसी युक्ति भी नहीं है कि जिस से लिपि दोष माना जाय और न किसी प्रकार शुद्ध करने का अवकाश भी है अस्तु इसे ज्यों का त्यों रहने देकर केवल यह सूचना दे दी है । छन्द ८२ के बाद के दो छन्द न तो त्रोटक हैं और न समरूप से उनकी मात्रा किसी अन्य छन्द से मिलती है इसका मूल कारण लिपि दोष है । बीच में कुछ छन्द छूटे हुए भी मालूम होते हैं ।

उभै पट फौजति पंग सजै। दिसि अद्व उभै दुरि थान लजै ॥
चल्यौ पहुपंग सु हिंदुअ थान। इतें चितरंग उते चहुआन ॥
छं० ॥ ८४ ॥

सेना सजनई का कारण कथन।

दूहा ॥ सधर धार बज्जन बहुल। धर पहार बर गज्जि ॥
पुब्ब बैर चहुआन कौ। बजे तीर कर बज्जि ॥ छं० ॥ ८५ ॥
अग्गि जलनि जैचंद दल। बल मंड्यौ छिति राज ॥
बैर बंध्यौ चहुआन सों। पुब्ब बैर प्रति काज ॥ छं० ॥ ८६ ॥

जैचन्द का पृथ्वीराज के पास दूत भेजना।

दूत सु मुक्कि प्रधान बर। दिसि राजन प्रथिराज ॥
*मातुल पष जैचंद धर। अर्द्ध सु मंगै काज ॥ छं० ॥ ८७ ॥

गोयंद राय का जैचन्द के दूत को उत्तर देना।

भुजंगी ॥ न जानं न जानं न जानंत राजं।
तुमं मातुलं वंस ते भूमि काजं ॥
दई राज अनगेस पृथिराज राजं।
लई भारथं वीर भारथ्थ वाजं ॥ छं० ॥ ८८ ॥
जमं ग्रेह पत्तौ किमं पच्छ आवै।
ततं पंग राजं सु भूमिं सु पावै ॥ छं० ॥ ८९ ॥
दूहा ॥ पंगराज सोइ भूमि बर। मतन भूमि सिरताज ॥
कहै गरुअ गोयंद मति। सामंता सिर लाज ॥ छं० ॥ ९० ॥
कवित्त ॥ सुनहु मंत भर पंग। बात आनहु न मंत बर ॥
बीर भोग वसुमती। बीर बंका बंकी धर ॥
बीरा ही अनसंक। रहै बीरा बिन बंकी ॥
है पुर षग्गह धार। सोइ भोगवै जु संकी ॥
पावंड डंड रखै नहीं। पाषंडह रखै न गुन ॥

---

* इसके बाद का एक दोहा या और कोई छोटा छंद छूट गया मालूम होता है।

क्रम विक्रम चारि चच्चर जिमसि। अहत हत्त आवै न पन ॥
छं० ॥ ९१ ॥

कवित्त ॥ काल ग्रेह को फिरै। मेघ बुट्ठै धारा घर ॥
घह तुट्टै तारिका। जाइ लग्गै न नाक पर ॥
छल छुट्टै [1]मुष सद्द। गरुअ हरुअं सु प्रमानं ॥
बुधि छुट्टै आबुद्धि। होइ पछितावति जानं ॥
संघरिय चीय बर कंत बर। गरुअ भूमि को भोगवै ॥
मातुल कहाय तातुल सु मति। मरन देव गुन जोगवै ॥
छं० ॥ ९२ ॥

दूत का गोयन्दराय के बचन जैचन्द से कहना।

कहिय बत्त यो मंचि। राज यों बत्त न मानिय ॥
अधम बुद्धि बनि तमक पोत। क्रम अक्रम न ठानिय ॥
छल छुट्टै बल बधै। सधै सिद्धंत सु सारं ॥
एक एक आवद्ध। देव देवत्त विचारं ॥
पहुपंग राय राज सु अवर। जाइ कही तामस विधिय ॥
सजि सेंन सबें चतुरंग बर। सुबर बीर बीरह बधिय ॥छं०॥ ९३ ॥

जैचन्द का कुपित होकर चढ़ाई करना।

दूहा ॥ सुतन सु पंग नरिंद सजि। सब ख्रिची छबि छाइ ॥
बर बंसी ससिपाल ज्यों। षग्ग षटक्यौ आइ ॥ छं० ॥ ९४ ॥

जयचन्द के पराक्रमों का वर्णन।

कवित्त ॥ चँदेरी ससिपाल। करन डाहाल पुच बर ॥
तिहि समान संग्राम। बान बेध्यौति बीर उर ॥
तिमिरलिंग षेद्यौ। षेदि कढ्यौ तत्तारिय ॥
सिंघराव जै सिंघ। सिंघ साध्यौ गुन गारिय ॥
जैचंद पयानौ चंद कहि। ग्रह भग्गी निग्गह भगिय ॥
भौमंत भयानक भौम बर। पुब्ब तरोवर तब रहिय ॥ छं० ॥ ९५ ॥

(१) कृ.-मुख।

दूहा ॥ सो फुनि जीत्यो पंग पहु। धरनि बीर सों बीर ॥
उदधि उलट्टिय हिंदु न्रप। बढ़ि कायर उर पीर ॥ छं० ॥ ९६ ॥

भुजंगी ॥ प्रकारे सुधारे चवै इक्क पायं। असी एक मंतेय होवंत तायं ॥
सु बंबीस मत्ते न होवंत कंदं। भुजंगी प्रयातं कहै कब्बिचंदं ॥ छं० ॥ ९७ ॥
चल्यौ पंग रायं प्रकारं प्रकारं। पुरी इंद्र ज्यों जानि बलिराय सारं ॥
घनी अंग अंगं जिती सेन सज्जं। मनो देवता देव साधंत गज्जं ॥
छं० ॥ ९८ ॥
रहै कोन अभ्यंत जंबल प्रकारं। जितै पंग सों कोन कलि आस सारं ॥
फनी फूंक भूली डुली भू प्रमानं। कंपे चारि चारं उभै यं प्रमानं ॥
छं० ॥ ९९ ॥

कवित्त ॥ धर तुट्टै घुरतार। पंग असि बर अस सज्जी ॥
हिंदु मेछ दोउ सेन। दोऊ देवत्तन बंधी ॥
दुह्नं तोन जम द्रोन। पथ्थ प्रथिराज गनिज्जै ॥
ए न डुले ए डुले। ए न रंजे ए रज्जैं ॥
जैचंद सपूरन कर पवित। परिपूरन उग्यौ अरक ॥
नर नाग देव देवत्त गुन। विधि सुमंत बज्जी धरक ॥ छं० ॥ १०० ॥

चोटक ॥ सु सुनी धुनि बेन प्रमान धरं। चढ़ि संमुष पंग नरिंद घरं ॥
सजि सूर सनाह सुरंग अनी। सु कछू जनु जोग जुगिंद्र धनी ॥
छं० ॥ १०१ ॥
बर बंक चिलक्क करच्च हसी। घन सीस उग्यौ जनु बाल ससी ॥
जल होत थलं थल होत जलं। सु कही कविराज उपंम भलं ॥
छं० ॥ १०२ ॥
जल सुक्किय ग्यानिय मोह जतं। जल बढ्ढि जलं जर बीरज तं ॥
सम बंच करूर कुरंग दिसा। पुरहै जनु कायर बीर रसा ॥
छं० ॥ १०३ ॥
स बढ़े बल सूर प्रमान रनं। सु मनो बरसें बर घेरि घनं ॥
अरकादि स धुंधर मंत दुरं। सु मनों बिन दानय मान दुरं ॥
छं० ॥ १०४ ॥
हत भंग निसानति बीर बजै। रथ बाज करी करनान लजै ॥

कलहंत करे किहि चिंत बरं। दुरि इंद्र रह्यौ पय बंधि नरं॥
छं० ॥ १०५ ॥

कुंडलिया (?) ॥ यों लय लग्गो पंग पय। तो पग सजिग सिंगार॥
*श्रवन बत्त संची सुनै। श्रवन सुनै घरियार॥
श्रवन सुनै घरियार। अंध कारिम तन मोहै॥
मिलें पंग तो पंग। अंग दुज्जन दल गोहै॥
षट विय षोडस जग्य जै। जो रजै राज राजे सुतौ॥
.... ॥
विधि बंधन बुधि हरन। दैव द्रजोध जोध सौ॥
.... ॥
तौ पंष समह जुद्दह करन। .... ॥
.... ॥ छं० ॥ १०६ ॥

दूहा ॥ पंग छच छिति छांह बर। उभै दीन भय दीन॥
पंग सूर उग्गै सजल। भयौ बीर प्रति मीन॥ छं० ॥ १०७ ॥

जैचन्द की सेना का प्रताप वर्णन।

कवित्त ॥ बन घन षग लग्गौय। हलिय चतुरंग सेन बर॥
यों हल्लिय धर भार। नाव ज्यौं रीति वाय बर॥
यों हल्ले द्रिगपाल। चंद हल्लै ज्यों धज धर॥
बद्दर पवन प्रकार। ध्यान डुल्लंति अगनि धर॥
इह मंत चिंति चहुआन बर। मातुल घर उर षग्ग षिति॥
मंगै जु पंग पहुमी सपति। सुबर बीर भारथ्थ जिति॥ छं०॥ १०८॥

जैचन्द का चहुआन को पकड़ने की तैयारी करना और उधर शहाबुद्दीन को भी उसकाना।

दूहा ॥ सु बिधि कीन सज्जिय सयन। ग्रहन चाइ चहुआन॥
तो सुरपुर भंजै नहीं। इह आधार बिरान॥ छं० ॥ १०९ ॥

* यह कुंडलिया नहीं वरन दोहा छन्द है परंतु खण्डित है और इसके बाद के कुछ और छन्द भी लोप हुए ज्ञात होते हैं क्योंकि मजमून का सिलसिला टूटता है।

पहुपंग. सु भैभीत गति। बीर डंड मझि सूर॥
ते फिरि सूर समान भय। विधि मति रत्ति करूर॥ छं०॥११०॥

नव गति नव मति नव सपति। नव सति नव रति मंद॥
चाहुआन सुरतान सों। फिरि किय पंग सु दंद॥ छं०॥१११॥

सत्त अरुझि संकरह ज्यौं। उठी बीर बर बेलि॥
बढ़न मतैं चहुआन रज। बर भारथ्थ सु केलि॥ छं०॥११२॥

कवित्त॥ भये अभय भय भवन। रजन स्वामित्त सूर नर॥
तेजल लगै न पंग। सुरस पाई न पंग धर॥
अग्ग क्रम क्रम धरिय। क्रम पच्छा न उचारै॥
मय मत्ता तिथि पत्त। गयौ वंचै न सुधारै॥
बर बन विहस्सि रह सैन कथ। रथ भंजै भंजन सु अरि॥
डंमरिय डहकि लग्गिय लहकि। दहकि रिदै कायर उसरि॥
छं०॥११३॥

जैचन्द की सेना का दिल्ली राज्य की सीमा की भूमि दबाना और मुख्य मुख्य स्थानों को घेरना।

दूहा॥ कूरलती सारस सबद। सुरसरीस परि कान॥
सूर संधि मन बंधि कें। चले बीर रस पान॥ छं०॥११४॥

पद्धरी॥ अन बुद्ध जुद्ध आवद्ध सूर। बर भिरत मत्त दीस करूर॥
बर बुद्धि जान आबुद्ध जुद्ध। सामंत सूर बर भंजि सुद्ध॥
छं०॥११५॥

इकंत तमसि तेजं करूर। कट्टैति दंत गज मंत सूर॥
बज्जी सु बाह बाहंत वज्ज। झिल्लैति बज्ज सुर्ग सु रज्ज॥
छं०॥११६॥

सामंत सूर पति तीन बाहु। चंप्योति पंग दल गिलन राहु॥
इह उहक बदन फुल्लै प्रकार। सामंत सूर सन पच भार॥
छं०॥११७॥

कंमोद ओद काइर कुरंग। उग्यौ सु भान पहुपंग जंग॥

छिति मिच छच छबी न जान। नर लोइ गत्ति ज्यों अगति वाम॥
छं० ॥ ११८ ॥

नव निजरि निकरि नव विघन सूर। जंपै सु चंद बरदाइ पूर॥
छं० ॥ ११९ ॥

कवित्त॥ भुज पहार चहुआन। उदधि रक्कन पंग बर॥
सु दिसि विदिसि वर बोरि। बीर कमधज्ज षग्ग झर॥
अति अथाह उप्पटिय। सलिल सहमत्त सयन बर॥
भ्रम्म जिहाज तिरंत। मंत बैरष्ष बंधि भर॥
धर ढारि पारि गढ़ बंक बहु। दिल्ली वै हल्लिय दिसह॥
धनि सूर न्नप्प सोमेस सुअ। तुच्छ अथाह प्रवेस दल॥छं०॥१२०॥

ऐसेही समय पर पृथ्वीराज का शिकार खेलने को जाना।

गोइंदह षल मिच। राज सेवा चुकि ग्यानं॥
ग्यान दगध जोगिंद। कुलट कैरव भगि पानं॥
वयति मध्य तामध्य। मन्नि मोचन अरि रोचन॥
तहां पंग चढ़ई। पन्यौ पारथ नह पोचन॥
भय काल काल संभरि धनी। सुनि अवाज ढिल्ली तजिय॥
मयमंत मयझत मोह गति। सुबर जुद्ध जम झत लजिय॥
छं० ॥ १२१ ॥

दूहा॥ तिन तप आषेटक रमै। थिर न रहै चहुआन॥
बर प्रधान जोगिनि पुरह। धर रष्षन परवान॥ छं० ॥ १२२ ॥

कैमास की स्वामिभक्ति।

कवित्त॥ गय सु रष्षि परधान। थान कयमास मंच वर॥
अति उतंग मति चंग। नदिय नंदन बंदन बर॥
अति उतंग मंचह। अभंग भिल्लै प्रहार कर॥
स्वामि काज स्वामित्त। करन सनमान करन धर॥
दल दुत्ति सु रिधि राजन वलिय। अभै भयंकर बल गरुअ॥
सामंत सूर तिन मंच बर। सबर बीर लग्गी हरुअ॥ छं० ॥ १२३ ॥

दिल्ली के गढ़ में उपस्थित सामंतों के नाम।

रष्षि कन्ह चौहान। अत्ततार्ई रूई भर॥
रषि तोअर पाहार। बीर पज्जून जून भर॥
रषि निड्डुर रट्ठौर। रष्षि लंगा बाबारौ॥
षीची रावप्रसंग। लज्ज सांई सिर भारौ॥
दाहिम्म देव दाहरतनौ। उद्दिग बाह पगार बर॥
अज्जोनराइ कैमास सँग। एकादस रष्षेति भर॥ छं०॥ १२४॥

जमुना पार करके दवपुर को दाहिने देते हुए कन्नौज की फौज का दिल्ली को घेरना।

गौ जंगल जंगली। देस निरवास वास करि॥
जोगिन पुर पहुपंग। दियौ दष्षिना देव फिरि॥
उतरि जमुन परि बीर। देवपुर सुनि षल षड्डी॥
अद्ध रयनि कल अद्ध। चंद उग्यौ कल अड्डी॥
अगिवान कन्ह तोंअर बलिय। हलिय सेन नन पंच करि॥
नद गुफा बंक बंकट बिकट। सुबर बैर बर बीर षरि॥ छं०॥ १२५॥

दूहा॥ विकट भूमि बंकट सुभर। अंगमि पंग नरिंद॥
सो प्रथिराज सु अंगमै। धनि जैचंद नरिंद॥ छं०॥ १२६॥

सामंतों की प्रशंसा और उनका शत्रु सेना से लड़ाई ठानना।

कवित्त॥ जमुन विहड बर विकट। हक्क बज्जिय चावद्दिसि॥
पंग सेन संमूह। सूर कढ्ढै संमुह असि॥
तेंही रत्त नरिंद। मुक्कि भग्गों चहुआनं॥
पुंडीरा नीरत्ति। नेह बंध्यौ परिमानं॥
विन स्वामि सब्ब सामंत भर। एक एक बर सहस हुअ॥
अष्षै नरिंद पहुपंग दिसि। धुअ समान सामंत भुअ॥
छं०॥ १२७॥

दूहा॥ अडर डरहिं अनमन्न महि। डरहि अठार प्रकार॥
को जयचंदह अंगमै। दोज दीन सिर भार॥ छं०॥ १२८॥

जैचन्द की आज्ञानुसार फौज का किले पर गोला उतारना।

कवित्त ॥ आयस पंग नरिंद। गहन उब्बरि संभरि सुर ॥
सवर सूर सामंत। लोह कट्ठे बट्ठे बर ॥
बीर डक्क सुनि हक्क। बज्जि चावद्दिस झानं ॥
मुष मुष रुष अवलोकि। बीर मत्ते रस पानं ॥
सद मद्द सिंघ छुट्टे तमकि। झमकि हथ्थ सिष्पर लइय ॥
दुरजन दुवाह भंजन भिरन। दइ दुवाह उभ्भै दइय ॥छं०॥१२९॥

उधर से सामंतों का भी अग्निवर्षा करना।

नराज ॥ इयं उवं उअं इयं दुअंत सेन उत्तरं।
जमी जु गंज मेत जेत बज्जि सिज्जि सुभ्भरं ॥
कुसंम किंसु किंसु कंक कस्ति मस्ति मंडयं ॥
मनो मनं मनी मनं मनी मनंत षंडयं ॥ छं० ॥ १३० ॥
जयं जयं जमंन काल व्याल पग्ग उभ्भरं।
मनो मयंक अंक संक काम काल दुभ्भरं ॥
झनं झनं झनं झनं ठनंत घंट बज्जयं।
मनो कि मद्द सद्द रद्द भद्द गज्ज गज्जयं ॥ छं० ॥ १३१ ॥
मनो कि संक काम जाम लान ताम बद्दयं।
न्वपत्ति रूप भूप जूप नूप नद्द हद्दयं ॥ छं० ॥ १३२ ॥

घोर युद्ध का आतंक वर्णन।

कवित्त ॥ धक्काई धक्काइ। मग्ग लीना षग मग्गं ॥
षग्गानी झम अग्ग। बीर नीसानति बग्गं ॥
सार झार दिष्षियै। पंग नन दिष्षि नयंनं ॥
भय भयान पिष्षियै। सद्द सुनियै नन कंनं ॥
सुष दुष्ष मोह माया न तह। क्रोध कलह रस पिष्षियै ॥
पारथ्थ कथ्थ भारथ विषम। लष्ष एक सर लष्षियै ॥छं०॥१३३॥

शस्त्र युद्ध का वाक् दर्शन वर्णन।

चोटक ॥ जु मिले चहुआन सु चाइ अनी। करि देव दुवारन दुंद घनी ॥

रनमंकाहि बीर नफेरि सुरं। मनो बीर जगावत बीर उरं॥
छं० ॥ १३४ ॥

दुअ स्वामि दुहाइय मुष्ष पढ़ै। झलकावति षग्गति हथ्थ कढ़ै॥
तिन मध्यति जोगिनी कूक करै। सुनि सद्द तिसंसिय प्रान डरै॥
छं० ॥ १३५ ॥

नचि कंध कमंधन नंचि शिवा। शिव कै उर लग्गि रही न जिवा॥
दिषि नंदिय चंदति मंद हसी। सिव स्वेद सिवा सुर भंग लसी॥
छं० ॥ १३६ ॥

गज षग्ग सु मग्गन यों रमके। सु बजें जनु झंझन के झमके॥
पय बंधि जला जल दिव्य नचै। .... ॥ छं० ॥ १३७ ॥
परिरंभ अरंभति रंभ बरै। जिनके झर सीस दुझार झरै॥
गज दंतन कढ्ढि सु सस्त्र करै। तिन उप्पर देवन पुष्फ परै॥
छं० ॥ १३८ ॥

उड़ि हंस सु पंजर भग्गि करी। पजरं तिन हंसन फेरि परी॥
अथयौ रथ हंस सु हंस लियं। भर पचनि पंच सु सथ्थ लियं॥
छं० ॥ १३९ ॥

परि डेढ़ हजार तुरंग करी। नरयं भर और गनी न परी॥
छं० ॥ १४० ॥

दूहा ॥ उभय सु षट भारथ परिग। हय गय नर भर बीय॥
मरन अवस्था लोक के। जुग ए जीवन जीय॥ छं० ॥ १४१ ॥

कन्ह के खड्गयुद्ध की प्रशंसा।

फिरिय कन्ह जनु कन्ह गिरि। भिरन भूप भर पंग॥
जनु दव लग्गो चिन वनह। भरहर पंगिय जंग॥ छं० ॥ १४२ ॥

घोर घमसान युद्ध का वर्णन।

भुजंगी ॥ लरै सूर सामंत पंगं समानं। मनों डक्क बज्जै सु भूतं उभानं॥
सुअं एक एकं प्रमानंत वाहै। मनों चच्चरीं डिंभरू डंड साहै॥
छं० ॥ १४३ ॥

तुटै अंग अंगं तरफ्फंत न्यारे। तिनं देषि कब्बी उपम्मा विचारे॥

जलं मानसं तुच्छ जल में विचारी । मनों षेल छोहेलुआ देत तारी॥
छं० ॥ १४४ ॥

तुट्टै कधं बंधं उठैं छिंछ रत्ती। कही चंद कब्बी उपम्मा सु रत्ती ॥
तरं बेलिबट्टी सु चट्टीन अग्गी। फिरी जानि पच्छी सु पाताल मग्गी॥
छं० ॥ १४५ ॥

पियै चौसठी रुद्रि गज्जं प्रहारं। घुटै घुंट लोही करै म्रत्यु न्यारं ॥
मनों मोर बंध्यौति मोरंत अष्षै । फरस्सी कपूरं मनौं मुष्ष नंषै ॥
छं० ॥ १४६ ॥

तुटै बीरमं बीर बंसी निनारै। दलं मध्य सोहै मनों मुक्ति भारै ॥
प्रजा पत्ति दच्छं जचै ईस अग्गै। भजै पुब्ब बैरं फिरै सीस मग्गै ॥
छं० ॥ १४७ ॥

उडै षग्ग मग्गं तुट्टै सीस सज्जै । जंपै झंपि केकी मनों मीन बज्जै ॥
तुटी दंत दंतीन के दंत लग्गी। मनों चंच हंसी म्रनालंति षग्गी ॥
छं० ॥ १४८ ॥

फुली भान दिष्षै अरुन्नं समेतं। मनों तारका राह गुर काल हेतं॥
छं० ॥ १४९ ॥

कुंडलिया ॥ सार प्रहारति सार झर । बरन बिहसि दल्लिराज ॥
सो दिष्यौ भारथ्थ में । कथ्थ कहिग सिरताज ॥
कथ्थ कहिग सिरताज । सार सम्हौ सहि बीरं ॥
धार षग्ग उभझरी । मुष्ष उभझरि नह नीरं ॥
मवति मत्ति उज्जली । बीर बीरह लगि वारं ॥
गजदंती बिच्छुरै । सूर 'टुट्टै धर सारं ॥ छं० ॥ १५० ॥

दिल्ली की सेना के साथ चित्तौर की कुमक का आ मिलना।

कवित्त ॥ सुहत पंग आभंग । रंग रवनी रवनंगन ॥
मो हत अंगम काल । अंग अंगमै देव धन ॥
सार धार देवत्त । देव दुज्जन दावानल ॥
पंग सहायक सूर । वीर मारुत मारुत कल ॥

(१) ए..टुंटे।

चहुआन वैर चिचंग दोउ । दुअ सज्जन बंधी अनी ॥
पूजै न कोइ भारथ्थ में । नव निसान जुद्धं पनी ॥ छं० ॥ १५१ ॥

राजा जैचन्द का जोश में आकर युद्ध करना और उस की फौज का उत्साह ।

भुजंगी ॥ भुक्यौ पंगराजं प्रकारं प्रकारं । मनो सूर दृष रासि उग्यौति सारं ॥
महा तेज मुष रत्त द्रग बीर लसै । भयं छंडि भूपाल अलि थान हसै ॥
छं० ॥ १५२ ॥
मनों जोगमाया जुगं जुद्ध तारं । भुक्यौ पंग पंगं सु लभ्भै न पारं ॥
न जानं न जानं न जानंत सेनं । तिहूं लोक पंगंति सेनं समेनं ॥
छं० ॥ १५३ ॥
तितंची तितंची तितंची प्रकारं । मनों उज्जलं सूर ज्यों पंग धारं ॥
दिषै भूमि नाहीं अनी सेन देषै । घनं बद्दलं मद्धि षन्हं विसेषै ॥
छं० ॥ १५४ ॥
तजै तारुनी तार अहकार तारं । हसे सार सों सार बज्जै करारं ॥
ततथ्थे ततथ्थे तथुंगं चिनेतं । रहै कोन अभिमंन रावत्त हेतं ॥
छं० ॥ १५५ ॥
महाबीर बंके भयं ढिग्ग दूरं । तिने उपम्मा चंद ससि सैस सूरं ॥
प्रलै ते प्रलैकाल पंकीति मेघे । मनो द्वादसं भान छुट्टै प्रसेघे ॥
छं० ॥ १५६ ॥
दुहै तीन बंधे सुरं तीन जोधं । तिनं बासुकी बुद्धि ब्रह्मा विबोधं ॥
छं० ॥ १५७ ॥

साटक ॥ सासोधं पहुपंग पंगुर गुरं, नागं नरं नर सुरं ॥
सब्बं भै विधि भानं मान तजयं, अष्टा दिसा पालयं ॥
भूपाले भूपाल पालन अरिं, संसारनं सारियं ॥
सोयं सा तिहुकाल जंगमि गुरं, नं काल कालं गुरं ॥ छं० ॥ १५८ ॥

जैचन्द का प्रताप वर्णन ।

कवित्त ॥ हय गय नर भर अहरि । सहरि सज्जिय सनाह बर ॥
ज्यों द्रप्पन भूडोल । सिंभ विभ्भूत धरा धर ॥

मुकर मध्य प्रतिबिंब। अग्नि मद्धे सु सांत सधि ॥

....

पहुपंग सेन सजि सुक्रित बर। बजि निसान उन मान रिन ॥
अंगमै कोन पहुपंग कौ। धीर छंडि बीरह तपन ॥ छं० ॥ १५९ ॥

कैमास का राजा पृथ्वीराज के पास समाचार भेजना।

कुंडलिया ॥ सुनि अवाज संभरि सुबर। ग्रह न रहै गुरराज ॥
ज्यौं दैवत्त सु अंगमै। सो पहुपंग विराज ॥
सो पहुपंग विराज। बीर बुल्लै प्रतिभासं ॥
मंत्री बर संभर्‍यौ। राज पुछ्यौ कैमासं ॥
गह वारुन्न गुर घरिय। प्रीत प्रत्तह प्रति प्रतिपनि ॥
हय मुलतान सु जान। राज ऐसी अवाज सुनि ॥ छं० ॥ १६० ॥

कन्नौज की सेना का जमुना किनारे मोरचा बांधना और इधर से सामंतों का सन्नद्ध होना।

कवित्त ॥ जमुन बिहड़ गहि बिकट। निकट रोकै पहुपंगं ॥
सार धार चहुआन। पान बंधें प्रति जंगं ॥
सुनत सिद्धि विधि समति। लोह कढ्यौ प्रति देवै ॥
मवन मत्त चहुआन। राज बंध्या ढिल्लीवै ॥
रहि सब्ब सूर सामंत बर। गहिग ठौर बंकट करस ॥
न्टप राज कमंधन सुनि भए। अंमर कै अंमर अरस ॥छं०॥१६१॥

निढ्ढुर और कन्ह का भाईचारा कथन।

दूहा ॥ भैया निढ्डुरराइ बल। तिन बल कन्ह नरिंद ॥
तिन समान जौ देषियै। तौंवर लिषियै कंद ॥ छं० ॥ १६२ ॥

भान के पुत्र का कहना कि राजा भाग गया तो हम क्या प्राण दें? इस पर अन्य सामंतों का कहना कि हम वीर धर्म के लिये लड़ेंगे।

दूहा ॥ हम बंधे बर नेक बर। तूं मुक्के धर राज ॥

जिय संगमै सु अप्पनौ । भान पुत्त किं काव ॥ छं० ॥ १६३ ॥

कवित्त ॥ कहै सूर सामंत । सुनहि वर पुहमि ईस वर ॥
अप अंगमै सु जीव । पुत्त बंधहति भान वर ॥
जोग जोइ अंगमै । नेह नारी नह रष्षै ॥
बीर राग आनंद । राज तिन हत्त विसष्षै ॥
लिष्षवै सोइ जीवत्त वर । सुहत्त बत्त लिष्षै न वर ॥
तिन काज सूर सामंत वर । राज बरजि बरजियति गुर ॥
छं० ॥ १६४ ॥

यह समाचार पाकर जैचन्द का अपने में सलाह करना ।

दूहा ॥ गुरु भ्रत गुरु जानी न विधि । रिधि रष्षन कमधज्ज ॥
तिहित बीर पहुपंग सुनि । मतौ मंत्ति कमधज्ज ॥ छं० ॥ १६५ ॥

सामंतों का एका करके सलाह करना कि किला न छोड़ा जावे ।

कवित्त ॥ व्यंजं वरन कवित्त । जंपि कन्हा चहुआनं ॥
वर रट्ठौर नरिंद । राव निड्डुर उनमानं ॥
गरुअ गब्र गहिलोत । मतै कैमासह सूरं ॥
मतै डिट्ठ कैमास । चंद डिट्ठ कलहति सूरं ॥
तिन मभ्भ रिनह नर सिंह बलि । रेनराम रावत्त गुर ॥
सामंत सूर सामंत गति । कौन बीर बंधैति धुर ॥ छं० ॥ १६६ ॥

सामंतों की पुरैन पत्र से उपमा वर्णन ।

दूहा ॥ तज सुमत इन मत्त किय । भयन तजिय भय राज ॥
पंगानी इर सुजल मधि । भए सतपत्र विराज ॥ छं० ॥ १६७ ॥
सुवर बीर सतपत्र इर । पंग नीर प्रति बढ्ढ ॥
सुवर बीर प्रथिराज कौ । अंग अछूत न चढ्ढ ॥ छं० ॥ १६८ ॥

गाथा ॥ जंमुक्का पहुपंगं । तेछचीय सूर बीराइं ॥
माइं चवथि प्रमानं । साछिप्पीय लोययं सब्बं ॥ छं० ॥ १६९ ॥

कन्नौज की फौज का किले पर धावा करना ।

जंबंघा चक्का चहुआनं। पग्गं सेनाय पंगयं दलयं॥
बालं ससी प्रमानं। सा बंदैस दीन उभयाइं॥ छं०॥ १७०॥

कवित्त॥ स्वामि छम्म रने। सुमंत लग्गै असमानं॥
अजुत जुद्ध आरुह्द। बीर मत्त रस पानं॥
हथ्थ थकत अम करहि। मनति अम सों उच्चारहिं॥
.... । ....॥
धरि धार भार हरि हरुअ घट। कन्यौ घट्ट गरुअत्त जुर॥
इन परत सूर सामंत रिन। लन्यौ न को फिरि बहुरि भर॥छं०॥१७१॥

दूहा॥ बंदिय बल जिन निय न्रपति। न्रपन मजाद उलंघि॥
कपि साधन रघुवंस दल। ज्यौं दैवत्त प्रसंग॥ छं०॥ १७२॥

दिल्ली घेरे जाने की बात सुन कर पृथ्वीराज का दिल्ली आना।

बाघा॥ संभरि बत्त जु पंग अवज्जं। बीर बिरा रस बढ्ढिय कंनं॥
है गै मै गै मत्त प्रमानं। उग्गिय जान कि बारह भानं॥छं॥१७३॥
लंबिय बाहु कषाइत नेनं। गुंज्या सिंह लग्या सिर गेनं॥
है दल पैदल गैदल गह्नुं। सूर सनाह सनाह सबह्नुं॥ छं० ॥१७४॥
यों रच्चै पहुपंगति सारं। कच्छे जोग जु गिंद्र विधारं॥
मत्त निरत्त अमत्त निसानं। गज्जे ज्यौं आषाढ़ प्रमानं॥छं०॥१७५॥
को अभिनंतु रहै रन षग्गं। सो दिष्यं चियलोक न मग्गं॥
धारै कंध वराहति रूपं। रहै अग्र नन डट्ठति भूपं॥छं०॥१७६॥
सयल गयल चिहुं दिसान धावहि। कहै राज ढिल्ली गढ़ ढावहि॥
रत्त नेन कषाइत अंगं। जानि विरच्चिय बीरति जंगं॥
छं०॥ १७७॥
नंचै भैरव रुद्र प्रकारं। जानि नटौ नट रंभ प्रकारं॥
अग्गों होइ गिवान मुनारं। बंध्या ज्यौं बर कोटति सारं॥
छं०॥ १७८॥
ढाहै गाहै साहैं राजं। मानों सासुद्र बांधे पाजं॥
उट्ठी मुंछ धरा लगि गैनं। बंक ससी सरि राजत नैनं॥ छं०॥ १७९॥

भवै दान प्रोहित्त राजं । अर्प्पै मेर सुमेरति साजं ॥
यों कीनी धर पंगति सावं । जै जै वाय सु वायति नावं ॥
छं० ॥ १८० ॥

धावै दल मलिनं पहुपंगं । बूड़त नाव नीर गुन रंगं ॥
यों धाए पहुपंग सयंनं । मंस काज दीपी उनमंनं ॥
छं० ॥ १८१ ॥

वार धुरा धरयौ भर इल्ली । वाय विषंम पात बहु यल्ली ॥
एहि प्रकार चल्यौ चित राजं । कहि ढिल्ली ढिल्ली उन काजं ॥
छं० ॥ १८२ ॥

पृथ्वीराज के आने से कन्नौज की सेना का घबड़ाना ।

दूहा ॥ जा ढिल्ली ढिल्ली धनीं । दल हल्लिय पहुपंग ॥
मानो उत्तर वाय ते । चावहिसा विभंग ॥ छं० ॥ १८३ ॥

बाहरी तरफ से पृथ्वीराज का आक्रमण करना ।

कवित्त ॥ संमुह सेन प्रचंड । पंग सज्जी चतुरंगनि ॥
ज्यौं उग्गै इय सूर । बैर करि तपै कमोदनि ॥
सुबर सोभ कविचंद । हितू चक्रवाक प्रकारं ॥
बरै विरह बिरहनी । हेत उड़गन ससि सारं ॥
सा बैर नैर नारिय निकट । विकट कंत विछुरहि बधुअ ॥
पहुपंग राव राजन बली । सजी सेन सेनह सु भुअ ॥ छं० ॥ १८४ ॥

दो दल के बीच दब कर कन्नौज की फौज का चलचित्त होना ।

कुंडलिया ॥ बंधि कविज्जै बीय बर । दिसि दच्छिन अरु पुब्ब ॥
सुबर बीर सम्हौ भिरिग । करि भारथ्थ अपुब्ब ॥
करि भारथ्थ अपुब्ब । कोन अंगम पल पोलै ॥
मार मार उच्चारि । असिर अवसानति डोलै ॥
सो भग्गा घट सेन । माग आकारति संध्यौ ॥
बीय बच्छि तजि मोह । मरन केवल मग बंध्यौ ॥ छं० ॥ १८५ ॥

दूहा ॥ संभरि जुध अरुद्ध गति। बर विरुद्ध रति राज ॥
चाहुआन चंपी अनी। सब संती सिरताज ॥ छं० ॥ १८६ ॥

युद्ध वर्णन।

कवित्त ॥ सुबर बीर आरुहिय। बीर हक्कै चावहिसि ॥
मत्त सार बरषंत। बीर नचहंत मंत कसि ॥
बंको असि के सुद्ध। केय लंबी उभ्भारैं ॥
घात घंभ निरघात। जानि भ्भरि भ्भारै ॥
बुट्टंत रस न संनाह पर। अबुठि बुट्ठि पच्छें परैं ॥
मानों कि सोम पारथ्थ यों। बर चंनं नन विथ्थुरैं ॥छं०॥१८७॥

इस युद्ध में मारे गए सामंतों के नाम।

परिग सुभर नारेन। रूप नर रष्षि बंधि बिय ॥
परिग सूर पामार। नाम पूरन्न पूर किय ॥
बघ्घसिंघ बिय पुत्त। परे हरसिंघ सु मोरिय ॥
पऱ्यौ सूर सूरिमा। सेन पंगह ढंढोरिय ॥
बग्गरी बीर बाहड़ हरिय। मुकति मग्ग षोल्ली दरिय ॥
दह परिग भिरिग भंजिग अरिय। ब्रह्मलोक घर फिरि करिय ॥
छं० ॥ १८८ ॥

पऱ्यौ भीम भट्टी भुआल। बंधव नाराइन ॥
पऱ्यौ राव जैतसी। भयौ अजमेर पराइन ॥
परि जंघारौ जोध। कन्ह छोकर अधिकारिय ॥
सरग मग्ग जित्तयौ। ब्रह्म पायौ ब्रह्मचारिय ॥
भौ भंग बंक संके दुते। जुद्ध घात घातं सु रन ॥
आवरत सूर पहुपंग दल। सुबर बीर संमर अरन ॥ १८९ ॥

जैचन्द के चौसठ बीर मुखियाओं की मृत्यु।

दूहा ॥ घाव परिग सामंत सह। सुबर सूर सिसु सास ॥
इन जीवत चहुआन निज। फिरि मंडी धर आस ॥ छं० ॥ १९० ॥
चौ अग्गानी सट्ठि परि। डोला पंग नरिंद ॥
इलकि जमुन जल उत्तरिग। कहिग कथ्थ कविचंद ॥ छं० ॥ १९१ ॥

केहरि वर कंठेरिया । डोला मध्य नरिंद ॥
दंद गमाए अमुन कह । कहि फिरि मंडे दंद ॥ छं० ॥ १९२ ॥

जैचन्द का घेरा छोड़ कर चले जाना ।

आतुर पंग नरिंद घरि । अमुन विहड़ तजि बंक ॥
धर पद्धर ग्रह विकट तजि । जुग्गिनि पुर ग्रह संक ॥ छं० ॥ १९३ ॥

स्वामिभक्त वीरों की वीर मृत्यु की प्रशंसा ।

भुजंगी ॥ क्रमं क्रम्म कहु क्रमं तंति सब्बं । रनं निर्वसीयं निवासीय तब्बं ॥
छिती छत्र भेदं अभेदंति सारं । तिनं जोग मग्गीय लब्भै न पारं ॥
छं० ॥ १९४ ॥

कवित्त ॥ जोग मग्ग उथ्थापि । थप्पि मुगती धर धारं ॥
सहस बरस तप करै । मुगति लब्भै न सु पारं ।
छिनक षग्ग मग अंग । अंग सोई क्रत छंडै ॥
धार धार विस्तरै । मुक्ति धामह धर मंडै ॥
धर परै बहुरि संगी न [1]को । तिन तिनुका सब नेह मनि ॥
रजक्रम्म भासयं देह सब । सुनहु सूर कबिचंद भनि ॥ छं० ॥ १९५ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके सामंत पंगजुद्ध नाम पचपनवों प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ५५ ॥

(१) "संगी को" पाठ है ।
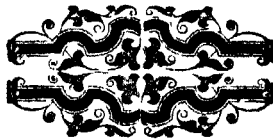
अथ समर पंग जुद्ध नाम प्रस्ताव लिष्यते।

(छप्पनवां समय।)

जैचन्द का चित्तौर पर चढ़ाई करना।

दूहा ॥ तरउप्पर धर पंग करि। जुग्गनि पुर सहदेस ॥
चित्रंगी उप्पर तमकि। चढ़ि पंगुरौ नरेस ॥ छं० ॥ १ ॥

पद्धरी ॥ चित चिंति चित्त चित्रंग देस। चढ़ि चल्यौ स गुरि पंगुर नरेस ॥
दिसि संकि दिसा दस कंपि थान। कलमलिय सेस गय संकि पान ॥
छं० ॥ २ ॥

धुम्मलिय विदिसि दिसि परि अंधेर। उरझै कुरंग प्रज्जरह नैर ॥
मिटि भान थान तजि रहिय तक्कि। अरि घरनि अटनि रहि लटकि थक्कि॥
छं० ॥ ३ ॥

बज्जै निसान सुर मान सद्द। सुत ब्रह्म रीझ कहुंति हद्द ॥
विप्फुरहि किति कामधज्ज सूर। नन रहत मान सुनतह करूर ॥
छं० ॥ ४ ॥

जैचन्द की चढ़ाई का समाचार पाकर समरसी जी का सन्नद्ध होना।

कवित्त ॥ श्रवन सुनिग समरेस। पंग आवाज बीर सुर ॥
अति अनंद मति चंद। दंद भंजन सु अग्नि धर ॥
बजि निसान घुम्मरिय। चित्त अंकुरिय बीर रस ॥
मोह कोह छिति छांह। मुक्कि मंड्यौ जुअंग जस ॥
श्रुत सील लक्त द्रिग चित अचल। चलं हथ्थ उर विप्फुरहिं ॥
चित्रंग राव रावर समर। भिरन सुमत मत्तह करहि ॥ छं० ॥ ५ ॥

युद्ध की तय्यारी जान कर दरवारी योद्धाओं का परस्पर वार्तालाप करना।

अरिल्ल ॥ सकल लोग मत जे बर जानिय। समर सज्य समरह परिमानिय ॥
अप्प बचन मुष तूल [1]प्रकासिय। सकल लोय गुरु जन परिभासिय ॥
छं० ॥ ६ ॥

सकल लोक मन सोच विचारिय। तत्त बचन मत्तह उच्चारिय ॥
एक कहत भारथ्थ अपुब्बं। एक कहत जीवन सुष सब्बं ॥
छं० ॥ ७ ॥

दूहा ॥ एक कहत सुष मुगति है। एक कहै सुष लाज ॥
एक कहै सुष जियन रस। जस गुर तस मति साज ॥ छं० ॥ ८ ॥

साटक ॥ यस्या जीवन जन्म मुक्ति तरसं। तस्या ननं वै [2]सुषं ॥
नैवं नैव कलानि मुक्ति तरसं। सुष्यंति नरके नरं ॥
धन्यो तस्यय जीव जन्म धनयं। माता पिता सत्गुरं ॥
सो संसार अहत्त कारन मिदं। सुप्राय सुप्रंतरं ॥ छं० ॥ ९ ॥

अरिल्ल ॥ अंतर त्यागिय अंतर बोधिय। बाहिर संगिय लोग प्रमोधिय ॥
एकय एक अनेक प्रकारं। समर राव भारथ्थ उचारं ॥ छं० ॥ १० ॥

रावल जी का वीर और ज्ञानमय व्याख्यान।

दूहा ॥ समर राव भारथ्थ मति। ग्यान गुभ्झ उच्चार ॥
जहति प्रान पवनह रमे। मुगति लभ्भ संसार ॥ छं० ॥ ११ ॥

योग ज्ञान वर्णन।

त्रिभंगी ॥ तन पंच प्रकारं, कहि समरारं, तत उच्चारं, तिह्वारं ॥
मुनि ग्यान प्रसंसं, नसयति संसं, वसयति हंसं, जिह्वारं ॥
मन पंच दुआरं, भमय निनारं, रुक्कि सबारं, अनहद्दं ॥
सुरकन्न सबद्दं, चिंतय अद्दं, नासिक तद्दं, तन भद्दं ॥ छं० ॥ १२ ॥
गुरु गम्य सु थानं, चिंतियध्यानं, ब्रह्म गियानं, रमि सोयं ॥
मन सून्य रमंतं झिलिमिलि मंतं, नन भुलि अंतं, सो जोयं ॥
तजि कामय क्रोधं, गुर वच सोधं, संचित बीधं, सब्बानं ॥

(१) ए.-प्रकासिय। (२) ए.-सुषे।

अंगुष्ट प्रमानं, भौंह विचानं, निगम न जानं, तिज्ञानं ॥ छं० ॥ १३ ॥
गुर सुष्पय बत्तं, चिंतिय गत्तं, सिद्ध रमंतं, मुनि मोती ॥
घट मध्यं थानं, पिंड समानं, मँडि सु ध्यानं, दिठ जोती ॥
जब लष्यिय रूपं, भजि भ्रम कूपं, दीपक नूपं, सो भूपं ॥
तब नंसिय संसं, मुक्ति रमंसं, जोगय जं सं, सो रूपं ॥ छं० ॥ १४ ॥

मनुष्य के मन की वृत्ति वर्णन ।

दूहा ॥ कलिय काल कालन कलिय । बल भ्रम्मह बल चित्त ॥
समरसिंह रावर समर । ग्यान बुद्धि गुरु हित्त ॥ छं० ॥ १५ ॥
घरी एक घट सुष्य में । घरी एक दुष थान ॥
घरी एक जोगह सलै । घरि इक मोह समान ॥ छं० ॥ १६ ॥
छिन छिन में मन अप्पनौ । मति बिय बीय रमंत ॥
चित्रंगी रावर समर । तिन बेरा चितवंत ॥ छं० ॥ १७ ॥

रावल जी का निज मंत्री प्रति शारीरिक ज्ञान कथन और अमर समाधि का क्रम वर्णन ।

पंच तत्व तन मांहि बसहि । कोठा सत्तरि दोइ ॥
तत्त अभिय रावर समर । मंचनि जंपत होइ ॥ छं० ॥ १८ ॥
उभय सेन संमुह मजे । चित्रंगी पंगान ॥
समर समय रावर समर । मंचिन जंपत ग्यान ॥ छं० ॥ १९ ॥

रावल जी की समुद्र से उपमा वर्णन ।

सर समुद चित्रंगपति । बुद्धि तरंग अपार ॥
तर्क मीन मेदन भमर । ब्रह्म सु मध्य भँडार ॥ छं० ॥ २० ॥
षग धारौ लज्जा सु जल । विद्या रतन बषान ॥
आनि जीव परमातमा । आतम [1]पालन ग्यान ॥ छं० ॥ २१ ॥

जीवन समय की दिवस और रात्रि से उपमा वर्णन ।

(१) क. को.-पालत ।

पद्धरी ॥ जोगंग जुगति जे अंग जानि। कहि चंद चंद सम [1]भनत भान ॥
सब देह जीव धर लषि विनान। धर टंकि बस्त राषन परान ॥
छं० ॥ २२ ॥
मध्यान प्रात लषि संभ मान। भ्रमि आइ काल रष्षै छिपान ॥
पूरन्न ग्यान जब प्रगट आइ। ब्रहमंड देह कर धर बताइ ॥
छं० ॥ २३ ॥
आवंत काल सहजह लिषाइ। तब पूर्न तत्व केवल लगाइ ॥
चिंतंत स्याम तन पट्ट पीत। टरि आइ काल भय अमर मीत ॥
छं० ॥ २४ ॥
तिहु काल काल टारन उपाय। हरि रूप रिदय इन ध्यान ध्याय ॥
जब ग्रसन समय संभया प्रकार। चिंतियै सेत धुंमर अपार ॥
छं० ॥ २५ ॥
उपदेस गुरह लषि प्रात गात। जिन धरत ध्यान भुल्लहि सनात ॥
चिंतियै जोति सुभ कर्म सिद्ध। झर दीप कूल ठहराइ मद्धि ॥
छं० ॥ २६ ॥
अष्टमी बीय पंचमी थान। के टहितिकाल मुनि जोर वान ॥
पूरन्न पान ताटंक माल। तन धरै धवल दिष्षिय विसाल ॥छं०॥२७॥
तन लषै सुद्धि नह बिय प्रकार। जनु भयौ ब्रह्म इच्छा भँडार ॥
रेचक कुंभ ताटंक पूर। जो गंग जुगति इह जतन मूर ॥
छं० ॥ २८ ॥
*षग मंग कहै चिचंग राव। मन सुद्ध समर पूरन्न भाव ॥
छं० ॥ २९ ॥
दूहा ॥ अंग समुद दोऊ समर। षग हिल्लोर छिति पान ॥
फिरि पुच्छत आहुट्ठ पति। तत्त मत्त निरवान ॥ छं० ॥ ३० ॥

कनकराय रघुवंसी का मानसिक वृत्ति के विषय में प्रश्न करना।

(१) कृ. को.-मनत।

* यहां के कुछ (दो या तीन) छन्द नष्ट हो गए जान पड़ते हैं।

कवित्त ॥ फुनि पुच्छे फिरि ग्यान । कनक केवल रघुवंसी ॥
मोहि एक आचिज्ज । तुम सु उत्तर भ्रम नंसी ॥
घरी मध्य आनंद । घरी वैराग प्रमानं ॥
घरिय मध्य मति दान । घरिय सिनगार समानं ॥
वैराग जोग श्रृंगार कव । द्दुय दरिद्रय विग्रहत ॥
चित्रंग राव रावर चवै । अंतकाल मति उग्रहत ॥ छं० ॥ ३१ ॥

गाथा ॥ केवल मत्ति सउत्तं । चित्तं चित्रंग मत्ति उनमानं ॥
कहि जोगिंद सुराइं । प्रानं वसि गच्छ कंठामं ॥ छं० ॥ ३२ ॥

रावल समरसी जी का, हृदय कुंडली और उस पर मन के परिभ्रमण करने का वर्णन करना ।

त्रोटक ॥ सु कहै रघुवंसिय रावरयं । सुनि बत्त सु धंम न लावनयं ॥
पुब दष्षिन उत्तर पच्छिमयं । अगनै वरु वाय विसष्पनयं ॥
छं० ॥ ३३ ॥

नयरत्ति इसानय कम्म धरं । इह अष्ट दिसा दिषि तत्त परं ॥
सु तड़ाग तनं सुष दुष्ष भरं । तहँ पंकज एक रहै उघरं ॥
छं० ॥ ३४ ॥

दिसि पूरब पंत कमल्ल सुरं । तिन रत्तरि पंषुरि हम्म धरं ॥
तिहि थंम वसै मन आइ नरं । सु कह्यौ तु अचित्त सु चित्त धरं ॥
छं० ॥ ३५ ॥

गुरु बुद्धि कल्यान रु दान मती । वर भोगव बुद्धि सुक्रम्म गती ॥
अगिनेव दिसा दिसि पंषुरियं । तहां नील बरन्नह उघ्घरियं ॥
छं० ॥ ३६ ॥

तहां यद्यपि आइ वसै मनयं । तिय दोष वढ़ै मरनं तनयं ॥
दिसि उत्तर पंषुरियं [1]ररं । तहां पीतह रंग सु हम्म धरं ॥
छं० ॥ ३७ ॥

उघरै प्रति कुम्मय क्रम्म गती । तजि भोगय जोग गहै सु मती ॥

---

(१) क. को.-सुरं ।

नयरत्ति निरमय धुंमरियं। नभ भम्मि रहै तन घुम्मरियं॥
छं० ॥ ३८ ॥

पच्छिम दिसि नील बरन्न करं। तहाँ प्रात पुरष्ष सजै समरं॥
दिस बायवयं बनि क्रष्ण रँगं। दुरबुद्धि ग्रहै तस अंस अगं॥
छं० ॥ ३९ ॥

दिसि दष्षिन उज्जल रन्न धरं। मजि मातुक मत्ति ततं अमरं॥
ईसायन यं रग सुक्कसयं। उपजै सु उचाट मनं नभयं॥
छं० ॥ ४० ॥

ब्रह्म मंडय पंढ कहै गुरयं। घर मद्धि अनेक मनं सुरयं॥
मन हथ्थ करै प्रथमं मनुषं। हुअ निर्भरयं तन बढ्ढि सुषं॥
छं० ॥ ४१ ॥

जिम दीपक बात बसं हलयं। इम क्रम्मय चिंत नरं चलयं॥
मन हथ्थ भयें सब हथ्थ भयौ। प्रगटै तन जोति रु अंध गयौ॥
छं० ॥ ४२ ॥

रावल जी का मन को वश करने का उपदेश करना।

कवित्त॥ मुगति कठिन मारग्ग। क्रम्म छुट्टै न पंच बर॥
मन लिप्पै मन छिपै मन। सु अवतरै घरघ्घर॥
मन बंधै क्रम राज। मन सु क्रम जमय छुडावै॥
मन साषी सुष दुष्ष। मनह जावै मन आवै॥
मन होइ ग्यान अग्यान तजि। गुर उपदेसह संचरै॥
मन प्रथम अप्प बसि किज्जियै। समर सिंघ इम उच्चरै॥छं०॥४३॥

दूहा॥ समर सिंह भारथ्थ में। जोग इहै गुन जान॥
सो निकस्यौ भर समर तें। को जिन करौ गुमान॥ छं० ॥ ४४ ॥

ढुंढाराय का कहना कि राजा का धर्म राज्य की रक्षा करना है।

कवित्त॥ तब ढुंढारह राइ। मत्त मन बत्त सु कथ्थिय॥
समर सिंघ रावरह। समर साहस गति पथ्थिय॥
तुम बीरन गंजागि। भूप साहस रस पाइय॥
भारथ्था रजपूत। स्वामि आचारा धाइय॥

आचार धार भरथ्थ मति। तत्त बत्त जानौ जुगति॥
अग्गै सु पंग अनभंग सजि। राज रष्षि कीजै सुमति॥छं०॥४५॥

मंत्री का कहना कि सबल से वैर करना बुरा है।

दूहा॥ कहै मंचि भर समर सुनि। सरभर करि संग्राम॥
सबला सूं मंडत कलह। धर भर छिज्जै ताम॥ छं०॥ ४६॥

रावल जी का उत्तर देना।

कहि मंत्री रावर समर। सुनि मंत्री बर बैंन॥
तमकि तेग तन तोक बँधि। करि रत्त बर नैंन॥ छं०॥ ४७॥
चौपाई॥ ससिर रित्त रित राजह संधि। गम आगम सित उष्ण प्रबंधि॥
तपति सूर रत्ते रन रंगं। दुरिग सीत भगि कायर अंगं॥
छं०॥ ४८॥

रावल जी का सुमंत प्रमार से मत पूछना।

दूहा॥ बंधि परिग्गह गुर जनह। मंत्री सजन सु इष्ट॥
भृत्त सु लोइ पुच्छै न्रपति। सुमति सुमंच अदिष्ट॥ छं०॥ ४९॥

सुमंत का उत्तर देना कि तेज बड़ा है न कि आकार प्रकार।

कवित्त॥ सुनि सुमंत पंमार। इक्क गरुडह् रु नगन गन॥
अगस्ति एक सायर सु। इंद्र इक्कै रु कूट घन॥
निसचर घन काली सु। पंच पंडव रु लष्य अरि॥
तारक चंद अनेक। राह चंपै सु वसन जुरि॥
मद करी जुथ्थ पंचाइनह। मत्त एक धक्कह वहै॥
चित्रंग राव रावर कहै। अतत मंत मंत्री कहै॥ छं०॥ ५०॥

सिंह जू का रात्रि को छापा मारने की सलाह देना।

कवित्त॥ स्वामि बचन सुनि सिंह। जूह रतिवाह विचारिय॥
सबला सों संग्राम। भार भारथ्थ उतारिय॥
जं जानै सब कोइ। जीभ जंपै जस लोइय॥

अरि भंजै तन भजै। टरै दीहंतन दोइय ॥
आघाय घाय घट निघ्घटै। हय गय हय मंचै रव न ॥
भंजै न भ्रम्म जम्मन मरन। तत्त मंत सद्दै रवन ॥ छं० ॥ ५१ ॥

रावल समरसिंह जी का कहना कि दिन को युद्ध कर स्वच्छ कीर्ति संपादन करनी चाहिए।

समरसिंह रावर नरिंद। रति उथपि दीह थपि ॥
दीह धवल दिसि धवल। धवल उठ्ठहि सु मंच जपि ॥
धवल दिव्य सुनि कन्न। धवल कढ्ढै धवली असि ॥
धवल वृषभ चढ़ि धवल। धवल बंधै सु ब्रह्म बसि ॥
धवलही लीह जस विस्तरै। धवल सेद संमुष लरै ॥
यों करौं धवल जस उब्बरै। धवल धवल बंधै बरै ॥ छं० ॥ ५२ ॥

सुनिय मंच बर मंच। गुझ्झ गामार मंच सुनि ॥
जनम लभ्भ सोइ किति। किति भंजियै तनह फुनि ॥
जु कछु अंत न्त्रिमयौ। कहै सब माया मेरी ॥
मरत न माया कहै। निमष चलहु न मुष हेरी ॥
पहु जग्ग दान अप्पन मुगति। जुगति मोह भंजै भरै ॥
भोगवौ दुष्ष जीवत बहुत। जु कछु कहौ जिन उब्बरै ॥छं०॥५३॥

चढ़ाई के समय चतुरंगिनी सेना की सजावट वर्णन।

चोटक ॥ जु सुनं धनि बैन प्रमान धरं। चढ़ि संमुष पंग नरिंद परं ॥
सजि सूर सनाह सुरंग अनी। सु कछै जनु जोग जुगिंद रनी ॥
छं० ॥ ५४ ॥

बर बंक तिलक्क चिलक्क रसी। घन मद्धि उग्यौ जनु बाल ससी ॥
सह बीर बिराजि सनाह इयं। जनु राहह बंधि सु भान दियं ॥
छं० ॥ ५५ ॥

सब सेन सु सिंगियनाद कियं। सुर मोहि सिवापति दंद दियं ॥
जुग वद्द निबंधि सनाह कसी। उर नद्द चिपंडिय बद्दर सी ॥
छं० ॥ ५६ ॥

बजि बीर अनेक प्रकार सुरं । हर चूर चमंकति गंग बरं ।
बजि बीरन नद्द सु सद्द रजं । सु उलद्दति मद्दति भद्द गजं ॥
छं० ॥ ५७ ॥

सहनाइ नफेरि अनेक सुरं । बर बज्जि छतीस निसान घुरं ॥
दुति देव वसिष्ट निसाचरयं । जम तेज सु बंधन निढ्ढुरयं ॥
छं० ॥ ५८ ॥

चितरंगपती चतुरंग सजी । तिन दिष्षत पंति समुद्द लजी ॥
चतुरंग चमू चमकंत दिसं । पहुपंड निसान दिसा कु रसं ॥
छं० ॥ ५९ ॥

नल बज्जि हयं बहु सद्द रजे । पटतार मनौं कठतार बजे ॥
घन घुघ्घर पष्पर बज्जि करी । सुर बंधि सुरप्पति चित्त हरी ॥
छं० ॥ ६० ॥

*चान्द्रायन ॥ बिधि बिनान चतुरंग ति, सज्जि हहक्कि हय ।
समर समर दिसि रज्जि, बाल अरु वृद्ध वय ॥
उद्यौ छच नयजानिय, मानिय पंग त्रिय ।
कढ्ढि लोह बढ़ि कोह, समाहिरु बीर वय ॥ छं० ॥ ६१ ॥

युद्ध वर्णन ।

रसावला ॥ कटै लोह सारं, विहथ्थंति भारं । तुटैं सार भारं, सरोसं प्रहारं ॥
छं० ॥ ६२ ॥

करै मार मारं, सह्नरं पचारं । जगी क्रूक वारं, उड़ैं छिंछ सारं ॥
छं० ॥ ६३ ॥

सु नंदी हकारं, कटं कंध पारं । कमड्डं निनारं, रुधिं छिंछ सारं ॥
छं० ॥ ६४ ॥

* मूल प्रतियों में इसे मुरिल्ल करके लिखा है । किन्तु मुरिल्ल से और इस से कोई सम्बन्ध नहीं है । यह छन्द वास्तव में चान्द्रायण ही है । अन्त में जो इस छन्द में रगण के स्थान में नगण का प्रयोग है वह लिपि भेद मात्र है । पढ़ते समय हं+य का उच्चारण है और व य का उच्चारण "वै" होगा । इस प्रकार से सगण का उच्चारण होता है । अस्तु इसीसे हमने इस छन्द को चान्द्रायण नाम से सम्बोधन किया है ।

स चुंथै करारं, तुटै गग्ग भारं। अपारंत मारं, वहै दिव्य भारं॥
छं० ॥ ६५ ॥

रसं बीर सारं, पती देव पारं। सुमंती डकारं, चवट्ठी सु भारं॥
छं० ॥ ६६ ॥

रुधी धार पारं, उछारैति वारं। उमापत्ति लीनं, जपै जंग भीनं॥
*गहै मुत्ति तथ्यं, उछारें विहथ्यं। .... ॥ छं० ॥ ६७ ॥

पंग के दल का व्याकुल होना।

दूहा॥ दल अग्गी अग्गी अनी। हलमलियौ दल पंग॥
यों उभ्भौ सुभ्भै सुभुञ। तिहुंपुर मंडन जंग॥ छं० ॥ ६८ ॥

पंगराज का हाथी छोड़ कर घोड़े पर सवार होना।

कवित्त॥ इक्कि मंगि गजराज। छंडि गज ढाल सु उत्तर॥
रत्तें रेन विसाल। तेग बंधी दल दुत्तर॥
कै हथ्थी जमजाल। काल छुट्टा मय मत्ता॥
कै अप्पानै अप्प। सेन रावत्त विरत्ता॥
उत उतंग बहु पंग दल। समर समह भारथ भिरिग॥
सारथ्य किष्ण सम बान बढ़ि। रोकि भीम कंदल करिग॥छं०॥६९॥

भुजंगी॥ चढ्यौ पंग जंगं सु मानिक्क बाजी। नियं वर्न सेनं मनं नील साजी॥
√फिरै पष्परं भार कूदै उतंगा। मनों बायपूतं धरै द्रोन अंगा॥
छं० ॥ ७० ॥

जसं पंग जग्यौ जुलै पंग धारी। घनं सार चोरं न गंगा विचारी॥
चमक्कंत नालं विसालंत मोहै। उभै चंद बीयं घटा जानि सोहै॥
छं० ॥ ७१ ॥

रवी रथ्य जोरें सु भौंरै भ्रमावै। मनंषी न अंषीन पंषी न पावै॥

---

* ये युद्ध वर्णन के छन्द या तो छन्द ७४ के बाद होने चाहिए थे या इन्हीं छन्दों के ऊपर का कुछ अंश लोप या खंडित होगया है। क्योंकि कवि ने सर्वत्र इसी प्रकार से वर्णन किया है कि पहिले सेना की तैयारी फिर दोनों सेनाओं का जुड़ाव और तिसके पीछे युद्ध का होना परन्तु यहां का पाठ इस क्रम से बिलकुल विरुद्ध पड़ता है।

मनों वाय गंठी गयौ ब्रह्म बंधी। पियै अंजुली नीर उत्तंग संधी॥
छं० ॥ ७२ ॥

डमं सीस डोलं त्रिभंगीति सोहै। गिरं नंचि केकी कला जानि मोहै॥
छं० ॥ ७३ ॥

रावल जी के वीर योद्धाओं का शत्रु को चारों ओर से दबाना।

कवित्त॥ समर सिंघ रावर समान। हय नंषि समर हर॥
कन्ह जैत बर बीर। भान नारेन सिंघ हर॥
पल्हदेव न्नप सोम। अमर न्नप ब्यंटि जानि जम॥
प्रति प्रताप तन समर। ताप भंजन सांई भ्रम॥
बंकम्म बीर बलिभद्र बर। भ्मर तरवारनि अधर झर॥
चतुरंग चंपि चावद्दिसा। धार पहार बिभार भ्मर॥ छं० ॥ ७४ ॥

युद्ध की तिथि और स्थल का वर्णन।

दूहा॥ बार सोम राका दिवस। पूरन पूरन मास।
समुष सूर संमुह लरै। मुकति सु लूटन रासि॥ ७५॥
नद षारी दुरगा सु पुर। प्रथम जुद्ध बर बीर॥
दुतिय जुद्ध परि समर सों। पत्ति सु पट्टन धीर॥ छं० ॥ ७६ ॥

दोनों सेनाओं का परस्पर घमासान युद्ध वर्णन।

त्रोटक॥ षग षोलि बिहथ्थ सु बथ्थ परें। दुहु सीस सु रंग सुभ्मार भ्मरें॥
सिरदार सु गाहत पंग अनी॥ सुमनो जल बारधि पंति घनी॥
छं० ॥ ७७ ॥

फुटि षग्ग किरच्च जुझार भ्मरं। मनु भ्मिंगन भद्दव रेनि परं॥
उडि छिंछनि रत्त तरत्त भए। बिरुझाइन धाइन सूर नए॥
छं० ॥ ७८ ॥

घन घाइ घटं घट अंग रजै। जनु देव प्रसूनय बंधु पुजै॥
बिफरै बहु हथ्थनि पाइ फुरै। बहु सूर उचीरन से उचरें॥
छं० ॥ ७९ ॥

चित डोलन पिंड को जाइ कहीं। दिषि बीर भरं लपटाइ तहीं ॥
दोउ सूर महाबल के बरकें। सु बजें मद मोषन के सुर कें ॥
छं० ॥ ८० ॥

करि भंजि कुँभस्थल षग्ग लसी। कुवलथ्थलके झर में करसी ॥
रुधि बिंद द्रवै कठ सोभ जगै। मनु इंद्रबधू चढ़ि पुट्ठि लगै ॥
छं० ॥ ८१ ॥

उपमा पलयं चलयौं न कही। सकुचें सरसी जु समुद्द मही ॥
गज भंजि कुँभस्थल पग्ग दमैं। सु नचै जनु बिज्जुल बद्दल में ॥
छं० ॥ ८२ ॥

गजराज धुकै बहु कंपि करी। तिन सथ्थ महावत कून परी ॥
इन भेषय गज्जय मान छरं। दस कंधय डुझि किलास बरं ॥
छं० ॥ ८३ ॥

गज राजति षग्गति मथ्थ गसं। मनों तेरसि को ससि अद्धनिसं ॥
गजमुत्ति लगै षग यों दमकै। तिन की उपमा दिषि देव जकै ॥
छं० ॥ ८४ ॥

मुठि चंपि द्रढं करपान गसी। निचुरैं मनु नीर सु मोतिग सी ॥
छं० ८५ ॥

रावल समर सिंह जी के सरदारों का पराक्रम वर्णन।

कवित्त ॥ समरसिंह सिरदार। सेनगाही जुरि भझिय ॥
आहुट्टां मझझाम। परिय द्वादस चमरझिय ॥
पंग समानन तक्कि। भूमि नंषत षग वग्गिय ॥
बीरा रस बलबंड। हथ्थ दच्छिन झर लग्गिय ॥
जिम परत पतंग जु दीप कन। तूटि तूटि निक्करि परत ॥
धुरतार धरैं हय षुटि धरनि। षलन पलक षग्गह झरत ॥ छं० ॥ ८६ ॥

पद्धरी ॥ झर करत विदुल भर लोह मार। छुट्टंत नाल उड्डत पहार ॥
उठ्ठंत धूम धर आसमान। बुड्डंत सार रुधि गूद मान ॥ छं० ॥ ८७ ॥
रुंडंत व्योम अंती अनंत। छुट्टंत नेह घट जीव जंत ॥
गुड्डंत गिद्ध धर वंच बोथ। उथ्थलकि थलकि बाराह मोथ ॥
छं० ॥ ८८ ॥

कमधज्ज सेन आहुट्ठ ऐम । राहु अरु केत रवि सोम जेम ॥
सुझ्झै न अंषि नह सब्द कान । भर रैंन दीह रच्छत्त भान ॥
छं० ॥ ८९ ॥

चट्टे जु समर मुष समर राव । पत्ते कि पत्त डंडूर वाव ॥
रन रह्यौ रोपि वाराह रूप । पेषिय सु भयंकर पंग भूप ॥
छं० ॥ ९० ॥

दूहा ॥ भयति भीति दुअ जुद्ध हुअ । अवति वंत सत सूर ॥
दह अग्गै अस्तुति सुबर । न्रप भारथ्य करूर ॥ छं० ॥ ९१ ॥

कवित्त ॥ कढ्ढि समर विच समर । समर रुक्यौ जु समर भर ॥
अजुत जु अति बुध सस्त्र । सस्त्र वज्जै सुमंत झर ॥
भय अभ्भित मय राम । बीर छुट्टे घन छुट्टै ॥
अघट घट्ट घूंटंत । ईस ग्यानह व्रत छुट्टै ॥
संक्रांति जेठ आषाढ़ मधि । नीर दान सम दान नहि ॥
सामंत सूर साईं भिरत । जोग न पुज्जै मंत लहि ॥ छं० ॥ ९२ ॥

सत्त विरत सांईं सु । मत्त लग्गे असमानं ॥
इतत जुद्ध आरुद्ध । बीर मत्ते रस रानं ॥
हय थक्कत श्रम करै । मन न श्रम सों उच्चरैं ॥
गान दगध सों कथ्थ । गुरु न मंचह विस्तारैं ॥
घन धार भार हरुअंत घट । कऱ्यौ घट्ट गरुअंत जुरि ॥
दिन पंच परें पंचो बिपत । लऱ्यौ न को रबि चक्कतर ॥
छं० ॥ ९३ ॥

भुजंगी ॥ न जानं न जानं न जानं प्रमानं । न रुद्रं न रुद्रं न रुद्रं न जानं ॥
न सीलं न सीलं न सीलं न गाहं । गुरं जा गुरं जा गुरं जासु चाहं ॥
छं० ॥ ९४ ॥

घनं जा घनं जा घनं जानि लोभी । मुकत्ती मुकत्ती मुकत्तीत सोभी ॥
छिमंते छिमंते छिमंते समानं । भ्रमंते भ्रमंते भ्रमंते भ्रमानं ॥
छं० ॥ ९५ ॥

उरंगं उरंगं उरगंति धारं। ततथ्थे ततथ्थे ततथ्थे सु भारं॥
छं० ॥ ९६ ॥

समर सिंह जी के शत्रु सेना में घिर जाने पर १२ सरदारों का उनको वेदाग बचाना।

दूहा ॥ भयति भरवि भ्रम सयन भर। गयनति गुर गुर गाज ॥
लरन सूर पहुपंग कों। करि भारथ्थ सु काज ॥ छं० ॥ ९७ ॥
सार सार सज्जे सु इत। सु इत बचन सुनि काज ॥
सो सिर मंडिय लीन बर। जित छिति छित्ती भ्राज ॥ छं० ॥ ९८ ॥
कल सु म्रित्त मत्तह सु म्रित। रषि भ्रप करन उपाय ॥
भर भारथ्थति मुंच तह। रहै सु जीव न चाय ॥ छं० ॥ ९९ ॥

कवित्त ॥ सबर सूर रजपूत। पत्ति देष्यौ घुमत्त घट ॥
समर समर बिच चपत। नीठ [1]कढ्यौ द्वादस्स भट ॥
[2]बीच घत्त सो मड्डि। पग्ग पल रुक्कि भंजि अट ॥
बीर रंग बिप्पहर। समर संमुह सुभम्यौ नट ॥
अनभंग पंग दल भंग किय। अठिल थाट ढिल्लिय सुभट ॥
प्राक्रम्म पिष्षि भ्रम्मेव सुर। सीस कज्ज भ्रमि धर जट ॥
छं० ॥ १०० ॥

इस युद्ध में दो हजार सैनिकों का मारा जाना।

दूहा ॥ उभय सहस भर लुथ्थि परि। तिन में सत्त सु सूर ॥
द्वादस अग रावर परत। न्रिप कढि निठ्ठ करूर ॥ छं० ॥ १०१ ॥

रावल जी को निकाल कर वीरों के विकट युद्ध का वर्णन।

पद्धरी ॥ कढि सेन समर अस मभ्भिभ्फ सेन। रुक्कयौ पंग भर भिरि करेन ॥
लावार लोह भिरि समर धेन। धावंत तप्पि सब पग्ग देन ॥
छं० ॥ १०२ ॥
तन बीर रूप लज्जा प्रहार। कढ़ि असि सूर बर करि दुधार ॥

(१) ए.-कढ्यौ। (२) ए. कृ. को.-बीस घटत।

झम झमी तेग बर तड़िग रूप। बाहेवि हथ्थ करि आन भूप ॥
छं० ॥ १०३ ॥

ढल मली ढाल गज फिरति सून। नग पंति दंति दीसै सदून ॥
तरफरहि लुथ्थि घट घाय धुक्कि। उच्छरें मीन जल जानि सुक्कि ॥
छं० ॥ १०४ ॥

आघात घात घट भंग कीन। बर भइग सूर तन छीन छीन ॥
परि समर सुभर रषि समर रूप। ढुंढयौ षेत सह पंग भूप॥
छं० ॥ १०५ ॥

रावल जी के सोलह सरदारों का मराजाना।

दूहा ॥ गरूअत्तन तन हरूअ भय। घाट कुघाट सु कीन ॥
समर सूर सोरह परिग। मुगति मग्ग जस लीन॥ छं० ॥ १०६ ॥

सरदारों के नाम।

कवित्त ॥ कन्ह जैत जैसिंघ। पंच चंपे पंचाइन ॥
सोम सूर सामला। नरन नीरह नारायन ॥
रूप राम रन सिंह। देव दुज्जन दावा नल ॥
अमर समर सब जित्ति। समर सध्यौ साईं छल ॥
बैकुंठ बट्ट जिन सङ्घयौ। रषि सांईं जिन सस्त्र बल ॥
माहेस महनसी महन बर। महन रंभि जित्यौ सकल ॥छं०॥१०७॥

रावल जी का विजयी होना और आगे की कथा की सूचना।

दूहा ॥ कन्ह भतीज उठाय लिय। हय नंष्यौ बर अग्ग ॥
पंग ढूंढि भारथ्थ भर। सह मिथ्यौ जुरि हग्ग ॥ छं० ॥ १०८ ॥
समर सु सङ्घे समर बर। बाल [1]सुयंबर लोग ॥
जिन बर बर उतकंठ भय। पानि भरै संजोग ॥ छं० ॥ १०९ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्राथिराज रासके जैचंद राव समरसी जुद्ध नाम छप्पनवों प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ५६ ॥

(१) ए. कृ. को.-सयंबर।

अथ कैमासबध नाम प्रस्ताव लिष्यते ।

(सत्तावनवां समय ।)

राजकुमार रेनसी और चामंडराय का परस्पर घनिष्ट प्रेम और चंदपुंडीर का पृथ्वीराज के दिल में संदेह उपजाना ।

कवित्त ॥ दिल्लीवै चहुआन । तपै अति तेज षग्ग बर ॥
चंपि देस सब सीम । गंजि अरि मिलय धनुद्धर ॥
रयन कुमर अति तेज । रीहि हय पिट्ठ विसंमं ॥
साथ राव चामंड । करै कलि किति असंमं ॥
मेवास वास गंजै द्रुगम । नेह नेह बढ्ढै अनत ॥
मातुलह नेह भानेज पर । भागनेय मातुल सुरत ॥ छं० ॥ १ ॥
सयन इक्क संवसहि । इक्क आसन आस्रम्महि ॥
[1]बीरा नह विहार । भार जब राह सुरम्महि ॥
भागनेय मातुलह । जानि अति प्रीति सु उभ्भर ॥
चिंति चंदपुंडीर । कही प्रति राज हित्त भर ॥
चावंड रयन सिंघह सु [2]घर । अप्प नेह बंध्यौ असम ॥
जानौ सु कत्य वारनह कलि । कलै भ्रम्म धरनिय बिसम ॥
छं० ॥ २ ॥

दूहा ॥ चिंत्ति बत्त पुंडीर चित । अप्प सु गुन गंभीर ॥
समय काज प्रथिराज न्रप । हिय न प्रगट्टिय हीर ॥ छं० ॥ ३ ॥
दल बद्दल भर भीर भरि । चवत सूर सुर छंद ॥
सामंत सूर [3]सम्मूह सजि । क्रीड़त ईस नरिंद ॥ छं० ॥ ४ ॥

पृथ्वीराज का नगर के बाहर सभा रचकर वर्षा की बहार लेना और सायंकाल के समय महलों को आना ।

(१) ए. कृ. को.-वारी । (२) मो.-पर (३) ए. कृ. को.-सनाह, समोह ।

पद्धरी ॥ संबत्त एक पंचास पूर। आषाढ़ मास नवमी सनूर ॥
रचि विमल षष्य उद्योत भान। प्राचीय जमल [1]फट्टिय पयान ॥
छं० ॥ ५ ॥

सत सूर पूर सम रूढ़ राज। मंच्यौ सु देव देवन समाज ॥
सत रंज राज बर षेल मंडि। मंचीन अप्प आरंभ थंडि ॥
छं० ॥ ६ ॥

पज्जूनराव बर [2]चंद्रसेन। विचरंत राव कर [3]दष्षि नेत ॥
चामंड जैत कर वाम तेन। मुष अग्ग कन्ह निढ्ढुर सु देन ॥
छं० ॥ ७ ॥

अरु सलष लषन विंझल नरिंद। दस निकट रंग सोमेस नंद ॥
कविचंद अग्र [4]विचर सु छंद। तिहि प्रत्ति राज उच्चरि प्रबंद ॥
छं० ॥ ८ ॥

इक जाम सूर कीनौ पयान। उघघरिय धुंध धरनीय थान ॥
मिट्टौ सु वाय चर चक्र होत। दष्षिनह वाम अनकूल सोत ॥
छं० ॥ ९ ॥

आएस स्वामि किन्नौ सझूर। बहुरे सु सकल सब भर सपूर ॥
फट्टेव [5]घूर यट्टे सु ताप। उघघ-यौ गेंन रवि धूप धाप ॥
छं० ॥ १० ॥

उक्कसे घोर घन गरुअ गुंज। दिस दिसा उमड़ि बद्दरन पुंज ॥
[6]कालपंत किलकि कल हल्ल राज। क्रीडंत रेनि इंछनि समाज ॥
छं० ॥ ११ ॥

झमकिय सु बूंद बढ्ढिय विसाल। विछुरेय सुब्भगन प्रातकाल ॥
ठढ्ढौ सु आइ दीवान राज। किन्नौ सु हुकम न्रप हदक काज ॥
छं० ॥ १२ ॥

(१) मो.-काट्टिय। (२) ए. कृ. को.-सेव।
(३) ए. कृ. को.-दच्छिनेव। (४) मो.-विहुरै।
(५) मो.-सूर। (६) ए. कृ. को.-"कालांत किलकि कल महल राज"।

दूहा ॥ दूत दूत दरबार बहु। सजे सूर भर साज ॥
सजे बीर दुंदुभि बजे। हदफ पेलि प्रथिराज ॥ छं० ॥ १३ ॥

कवित्त ॥ चल्यौ राज प्रथिराज। सज्जि बर थट्ट बाज गज ॥
मंचि बोलि कयमास। राव पज्जून चंद्र रज ॥
रा चामँड बर जैत। कन्ह निढ्ढुर नर नाहं ॥
सलष लषन बघेल। नरिंद विंझा षग वाहं ॥
कम्मान कठिन हथ हथ्थ करि। बान विविध बाहंत बर ॥
बाहुरे सूर रवि [1]अथ्थमित। सोर घोर पावस अतर ॥ छं० ॥ १४ ॥

हाथी के छूटने से घोर शोर और घबराहट होना।

स्वान माल हथ्थान। जोर घेरे षवास रज ॥
बेढ़ि कूट कंठेर। बग्घ बायात कोरि हर ॥
इक्क बत्त कहति वहि। बंधि गजराज डारि कर ॥
.... ॥
बहुरेव सूर मुष अथ्थमित। जूथ जितंतित तुंग बर ॥
छुट्टौ सु पाट गजराज सुनि। घोर सोर पावस अतर ॥ छं० ॥ १५ ॥

हाथी का थान से छूट कर उत्पात करना और चामंडराय का उसे मार गिराना।

पद्धरी ॥ संवत्त एक पंचास अंग। आषाढ़ मास दसमी सुरंग ॥
डंडूर बात जल जात उढ्ढि। घन पूरि सजल थल प्रथम बुढ्ढि ॥
छं० ॥ १६ ॥

घहराइ स्याम बद्दल विसाल। विथ्थुरिय सयल सिर मेघ माल ॥
उभ्भरिय चसिय चप्पिय सु अप्प। संदेस भेस केकी सु दप्प ॥
छं० ॥ १७ ॥

क्रीलंत केलि चढ़ि अप्प राज। सामंत सूर सब सजे साज ॥
शृंगारहार गजराज पट्ट। मयमंत मत्त मद झरत [2]पट्ठ ॥
छं० ॥ १८ ॥

(१) मो.-अथ्थमन। (२) ए. कृ. को.-उपट्ट।

बंध्यौ सु षंभ संकर गुराह। मानै न सद्द उनमत्त थाह॥
गज्ज त मेघ धुनि सुनिय अप्प। धुन्निय सु षंभ संकर सु दप्प॥
छं०॥ १९॥

उप्पठ्यौ अप्प चलल्यौ विराह। मानै न अनिय अंकुस दुबाह॥
ढाहंत मट्ट मंडप अनूप। प्राकार द्वार देवाल जूप॥ छं०॥ २०॥
ढाहंत उंच आवास धक्क। मानै न मार प्राहार हक्क॥
फारंत उंच तरु चौ उरारि। लग्गौ सु लोग सब्बह हँकार॥
छं०॥ २१॥

पय तेज तुरिय पावै न जानि। मंडै सु [1]दुयस चौपय प्रमान॥
मदगंध अंध सुभ्भै न राह। सनमुष्ष मिल्लिग चामंड ताह॥
छं०॥ २२॥

दाहिम्म षेलि आवंत ग्रेह। संकरे रोहि मिलि गज सु रेह॥
गजराज देषि चामंडराइ। उप्पारि सुंड सनमुष्ष धाइ॥
छं०॥ २३॥

चामंड देषि आवंत गज्ज। पच्छै जु पाइ चिंतिय सु लज्ज॥
उप्पारि संग है संघ देस। उक्कसिय कंध अद्दह असेस॥
छं०॥ २४॥

लाघवी दीन वहि षग्ग धार। सम सुंड दंत तुट्टिय सुजार॥
ढ़हि पऱ्यौ संत धरनीय सीस। सब लोकदेव दीनी असीस॥
छं०॥ २५॥

चामंडराव निज ग्रह अघार। भातेज सथ्य रयनं कुमार॥
संभलिय बत्त पुहमी नरेस। कलमलिय चित्त अप्पह असेस॥
छं०॥ २६॥

शृंगारहार का मरना सुन कर राजा का क्रोध करना और चामंडराय को कैद करने की आज्ञा देना।

कवित्त॥ सुनिय बत्त प्रथिराज। हन्यौ सिंगारहार गज॥
चिंति बत्त पुंडीर। अवर गंठी सु गुभ्भ रज॥

(१) ए. कृ.को.-दुयय।

अप्प कोप उर धरिय । गल्ह [1]कातिन्न कलारिय ॥
रामदेव गुर राज । मुष्प अग्गे अभ्भारिय ॥
वेरी सु आनि दीनि न्नपति । जाय पाइ चामँड भरौ ॥
संकोच प्रीति सनमंध सुष । नतरु षंड धरनी करौ ॥ छं० ॥ २७ ॥

षिझ्यौ बीर प्रथिराज । राज दरबार रुकाइय ॥
हाहुलिराव हमीर । बोल पज्जून लगाइय ॥
आज राज गज मारि । काल्हि बंधे फिरि तेगा ॥
राजनीति नन होइ । स्वामि अग्या तजि वेगा ॥
तब देन पाइ पच्छे न भय । हांसीपुर दीने तवै ॥
इहि काज कीन अव अग्रमन । स्वामि गज्ज मारन अवै ॥
छं० ॥ २८ ॥

लोहाना का बेड़ी लेकर चामंडराय के पास जाना ।

कहै राज प्रथीराज । मीच चामंड न मारौ ॥
सुनहु सूर सामंत । मरन कहुत अत्तारौ ॥
लोहानौ आजान । हथ्थ वेरी लै चल्लं ॥
साम दान करि भेद । पाइ चामंड सु घल्लं ॥
अनभंग अंग है राम गुर । राज रीति राषन्न तिहि ॥
दाहिम्म राव दाहर तनय । सुनि अवाज चर चित्त रहि ॥छं०॥२९॥

चामंडराय के चित्त का धर्मचिंता से व्यग्र होना ।

दोय सहस दाहिम्म । पहिरि सन्नाह सु रज्जिय ॥
बज्जि साहि बर अग्र । बीर बाहै कर बज्जिय ॥
चिंत राव चामंड । ध्रत्त इह भ्रम्म न होइय ॥
सामि सनंमुष लोह । सामि द्रोही घर जोइय ॥
पूछियै सेव जिन देव करि । दुष्ट भाव किम चिंतियै ॥
करतार घरह घर कित्ति कौ । दुहु धर मरन न जित्तियै ॥
छं० ॥ ३० ॥

(१) ए. कृ. को.-काढिन ।

गुरुराम का चामंडराय को बेड़ी पहनाना।

लै बेरी गुर राम। गए चामंड राव ग्रह॥
कर दीनी दाहिम्म। रीस गजराज घून कह॥
तब लीना दाहिम्म। भ्रम्म स्वमित्त सुद्ध मन॥
सो लीनी करभ्भेलि। प्रेम धारी पय अप्पन॥
धनि धन्नि भ्रन्य सब नयर हुअ। सयल धन्य संचरि सु सद॥
चामंडराय दाहर तनै। नीति रेह रष्षी सु हद॥ छं०॥ ३१॥

चामंडराय का बेड़ी पहिनना स्वीकार कर लेना।

दूहा॥ बंदि लई चामंड ने। बेरी सम्हौ हथ्थ॥
साम भ्रम्म जुग रष्षयौ। जीरन जग्ग सु कथ्थ॥ छं०॥ ३२॥
यौं घल्लौ चामंड पय। ज्यौं मद मत्त गयंद॥
लाज [१]राज अंकुसन मिटि। धनि दाहिम्म नरिंद॥ छं०॥ ३३॥
यौं अग्या प्रथिराज की। मन्नी दाहिम इंद॥
ज्यौं सुनि मंत्रह गारडी। मानत आन फुनिंद॥ छं०॥ ३४॥

इस घटना से अन्य सामंतों का मन खिन्न होना।

अरिल्ल॥ भर बेरी चामंड राज जब। भए अति विमन सु मन सामंत सब॥
भ्रमत राज आषेट पंग भय। ग्रह रष्षौ कैमास मंच रय॥
छं०॥ ३५॥

पृथ्वीराज का शिकार खेलने जाना।

दूहा॥ तिहि तप आषेटक भ्रमै। थिर न रहै चहुआन॥
जोगीनिपुर बर रष्षि कैं। [२]दस सामंत प्रधान॥ छं०॥ ३६॥
चौ अग्गानी बीस बर। संग मुक्कि कैमास॥
आषेटक चहुआन गौ। न्रप दुग्गीबन पास॥ छं०॥ ३७॥

राजा की अनुपस्थिति में कैमास का राज्य कार्य्य चलाना।

(१) मो.-काज। (२) ए. कृ. को.-गय।

कवित्त ॥ राज काज दाहिम्म। रहै दरबार अप्प वर ॥
आषेटक दिल्लिय। नरेस षेलै कमंध डर ॥
देस भार मंचीस। राव उद्धार सु धारै ॥
न को सीम चंपवै। हद्द तप्पै सु करारै ॥
लोपै न लीह लज्जा सयल। स्वामि ध्रम रष्षै सुरुष ॥
क्रत नीति रीति बढ्ढै बिसह। [1]बंछै लोक असोक सुष ॥
छं० ॥ ३८ ॥

दिन विशेष की घटना का वर्णन।

सुर गुर वासर सेष। घटिय दसमीय देव दिन ॥
पुब्ब षाट भद्दों सु गाढ़। घन वट्ट कोक मन ॥
गहकि मोर दद्दुरनि। रोर बद्दर बगपंतिय ॥
बन दिसान गहरान। चाप वासव चित मंतिय ॥
दरबार आय कैमास न्रप। कीय महल सिर रज्ज भर ॥
[2]घन संकुस तुछ सथ्थे सयन। चित्त मित्त दुअ [3]पंच बर ॥
दाहिम्म मिल्यौ इमि दासि सम। षीर मद्ध जिम नीर मिलि ॥छं०॥३९॥

कैमास का चलचित्त होना।

राज चित्त कैमास। चित्त कै रास [4]दासि गय ॥
नीर चित्त वर कमल। कमल चित्त बर भान गय ॥
भंवर चिंत भमरी सु। भँवर रत्तौ सु कुसुम रस ॥
ब्रह्म लोय रत्तयौ। लोय रत्तौ सु अधम रस ॥
उतमंग ईस धरि गंग कौं। गंग उलटि फिरि उद्धि मिलि ॥
छं० ॥ ४० ॥

करनाटी की प्रशंसा और उसकी कैमास प्रति प्रीति।

दूहा ॥ नंदी देस बनिंक सुअ। बेसब नंजन हत्त ॥
बीन जान रस बनसु घर। राजन रष्षिय हित्त ॥ छं० ॥ ४१ ॥

(१) ए. कृ. को. बंधे। (२) ए. को.-छन।
(३) ए. कृ. को.-घन। (४) मो.-दाहिम्म।

दिव्य दास रष्षिय दिवस । सुग्रह पवारिय द्वार ॥
तिन अवास दासिय सघन । अह निसि रस रषवार ॥ छं० ॥ ४२ ॥

कवित्त ॥ समुष समुष ग्रह राज । [1]महल साला सु रूव रँग ॥
तहं सु रोहि कयमास । [2]सजन आवरिय अप्प अँग ॥
ऊँच महल करनाटि । देषि डंबर घन अंमर ॥
बैठी गवष ससष्षि । सुमन [3]मंती अरु संमर ॥
सम दिट्ठि उठ्ठि दाहिम्म दुअ । जग्गि मार उब्भार चित ॥
अंकूरि द्रष्ट अंतर उरिय । प्रीति परठ्ठिय [4]कालक्रत ॥छं०॥४३॥

दूहा ॥ नव जोवन शृंगार करि । निकरि गवष्षह पास ॥
देषि उझकि बर सुंदरी । काम द्रष्टि कयमास ॥ छं० ॥ ४४ ॥
करनाटी दासी सुवर । चित चंचल तिय वास ॥
काम रत्त कैमास तन । दिष्ट उरझिझय तास ॥ छं० ॥ ४५ ॥
करनाटी कैमास मन । राजन नथ्थि अवास ॥
भावी गत को मिट्टई । ज्यों जनमेजय व्यास ॥ छं० ॥ ४६ ॥
द्रष्टि द्रष्टि लोकन जरिग । मति राजन ग्रह काज ॥
सहिय करत असहिय समर । असहवान तन साज ॥ छं० ॥ ४७ ॥

दोनों का चित्त एक दूसरे के लिये व्याकुल होना, और करनाटी का अपनी दासी को कैमास के पास प्रेषित करना ।

ग्रह बाहुरि सामंत गय । रहि चौकी कैमास ॥
करनाटीं सहचरि उभै । मुक्कि दई तिन पास ॥ छं० ॥ ४८ ॥

बाघा ॥ लग्गी द्रष्टि सु द्रष्टि अपारं । धरकी दुअर धार ना धारं ॥
कलमलि चित्त अभित्त दुआनं । लग्गे मीन केत क्रत बानं ॥
छं० ॥ ४९ ॥

(१) मो.."माहिल साली सु सूव रँग" । (२) ए. कृ. को.-सुजब ।
(३) मो.-मतिनि । (४) मो.-कालक ।

किय दाहिम्म केविक्रत काजं। उद्यौ सूर अस्त मनि साजं॥
अप्प ग्रेह कैमास सपत्तौ। मेन बान गुन ग्यान बियत्तौ॥ छं० ॥५०॥

छिन अंदर भीतर आवासं। नन धीरज्ज हंस रहै तासं॥
मठी मत्ति रति गत्ति उदासं। अविगत देव काल निसि नासं॥
छं० ॥ ५१ ॥

घटिय पंच पल बीस सबें कल। बित्तिव निसा उसास समुक्कल॥
अति झंषत करनाटिय [1]ऊरं। काम कटाछ्य सु लग्गि करूरं॥
छं० ॥ ५२ ॥

कवित्त ॥ कन्नाटिय कैमास। प्रिष्ठ देषत मन लग्गो॥
कलमलि चित्त सुहित्त। मयन पूरन जुरि जग्गो॥
गयौ ग्रेह दाहिम्म। तलप अलपं मम किन्नौ॥
बोलि अप्प सो दासि। काम कारन हित दिन्नौ॥
[2]लै मंच राज अप्पं सरिस। जौ हम आनें चित्त हर॥
सम चली दासि कैमास दिसि। जंपिय भेव सनेह बर ॥छं०॥५३॥

करनाटी के प्रेम की सूचना पाकर कैमास का स्त्री भेष धारण कर दासी के साथ होलेना।

दूहा ॥ सुनि दासी करनाटि बच। निज संचरि सथ सुद्ध॥
मत्ति घटी अरुझी सुरति। काल निसा क्रत निद्ध॥ छं० ॥ ५४ ॥

सहचरि बर मोकल्लि कै। तकै बट्ट कैमास॥
सम समझि सज्जें रह्यौ। करि करि हिये विलास॥ छं० ॥ ५५ ॥

निसि भद्दव कद्दव कहल। आषेटक प्रथिराज॥
दाहिम्मौ दहि काम रत। काल रैनि कै काज॥ छं० ॥ ५६ ॥

दासिय हथ्थ सु हथ्थ दिय। चिय अंबर आछादि॥
दासिय अंतर अप्प हुअ। [3]दरन स पिष्यौ सादि॥ छं० ॥ ५७ ॥

---

(१) मो.-कुंअर।

(२) ए. कृ. को.-" लै अप्प राज मंत्री सरिस "। (३) मो.-दरसन।

साटक ॥ राजं जा प्रतिमा सुचीन प्रतिमा, रामा रमे साभती ॥
* नित्तौ रंकरि काम वाम वसना, सज्जीन संग्या गती ॥
आधारेन जलिन छीन तड़िता, तारा न धारा रती।
सो मंची कयमास मास विषया, दैवी विचिचा गती ॥ छं० ॥ ५८॥

सीढ़ी चढ़ते हुए इंछिनी रानी का कैमास को देख लेना।

कवित्त ॥ मध्य महल कैमास। दासि सम अप्प संपत्तौ ॥
ग्रेह निकट पामारि। काम [1]कामना न मत्तौ ॥
घन सुगंध सुर भास। जानि वित इंछिनि चिंतिय ॥
आषेटक दिल्लि स। कहा सुर वास सु भत्तिय ॥
निसि स्याम चिलजि चीया वसन। चढ्यौ अप्प सिड्डिय सुमन ॥
इष्यौ सु द्वार इंछिनि तड़ित। नर सु [2]पित्त कोइ काम रत ॥
छं० ॥ ५९ ॥

सुग्गे का इंछिनी प्रति बचन।

सुक चरिच दासिय परषि। कहि इंछिनि संजोइ ॥
काग जाइ मुत्तिय चरै। हरति हंस का होइ ॥ छं० ॥ ६० ॥
सुक जंपै इंछनिय। एक्क आचिज्ज परष्षिय ॥
बीर भजन मृगमदक। षाय कग्गं तन दिष्षिय ॥
बचन पंषि संभरै। बाल चरचित चित किन्ना ॥
बर आगम गम जानि। भेद सुक कौं किन दिन्ना ॥
निसि अद्ध अध्य सुभझै नहीं। बार बज्जि निसचर हरिय ॥
कैमास क्रम्म गहि दासि भरि। जेम क्रम्म सम्हा भरिय ॥
छं० ॥ ६१ ॥

इंछिनी का पत्र लिख दासी को दे कर पृथ्वीराज के पास भेजना।

* यह साटक और इसके आगे की एक पंक्ति मो. प्रति में नहीं है।
(१) ए. कृ. को.-कामन मन। (२) ए. कृ. को-पिट्ट।

गयौ मध्य कैमास। रयनि संपत्त जाम इक॥
तंबुल्लिय सषि साष। पट्ट रागनिव निकट सिक॥
बाय घात दिय पूर। भ्रमिय पिय किय अति अंतह॥
अति सरोस पिक पानि। सु नष लिषि सषि कर कंतह॥
असि असन वारि मग्गह षरिय। अवधि दीन दो घरिय कह॥
पल गयन सु राइह संचरिय। अयन सयन प्रथिराज जहँ॥
छं०॥ ६२॥

रोला॥ *बर चढ्ढिय चतुरंग तुरंगम चारु सु नारिय।
इंछनि हथ संदेस चली बोलह अवधारिय॥
दीनौ संग पवारि उभै तब चढ़ि चतुरंगं।
निसिनि अद्ध बढ़ि तिमर गई बाली अनुरंगं॥ छं०॥ ६३॥

दासी का पृथ्वीराज के पड़ाव पर पहुंचना।

कवित्त॥ विमल बग्ग सुर अग्ग। धाम धारा ग्रह सुब्बर॥
जल सु थान अभिराम। दिल्लि अंम्यौति संस[1]तर॥
मंडे वासुर स्वगय। निसा प्रावट्टि मंनि मन॥
उभय सत्त हय तथ्थ। ताम विश्राम [2]श्राम तन॥
सिंगनि सु बान पर्यंक दुअ। अरिय सेज न्रप सयन किय॥
सूतौ सुथान निद्रा सकल। अति उर कंपिय दिष्यि जिय॥
छं०॥ ६४॥

राजा और सामंतों की सुसुप्ति दशा।

सनमुष साला सुभट। सकल विश्राम नींद भर॥
जाम देव बलिभद्र। बरन चहुआन संघहर॥
तोंवर राइ पहार। सिंघ [3]रनभय पावारं॥

---

* मूल प्रतियों में इसका पाठ चौपाई करके लिखा है। ए. प्रति में प्रथम पंक्ति का पाठ "वर चढ़िय चतुर तुरंगम नारिय" पाठ है।

(१) र. कृ. को.-समंतर। (२) ए. कृ. को.-श्रम।

(३) ए. कृ. को.-नृम्मय।

खंगी लंगरराव। सूर सा अल्ह कुआरं॥
आजानबाह गुज्जर ¹कनक। सोलंकी सारंग बर॥
सामलौ सूर आरज कमँध। बाम जु इष्य विसग्ग भर॥
छं०॥ ६५॥

गाथा॥ यों राजंत कमानं। राजन सयनेव सुभ्भियं एमं॥
ज्यों स्त्री बल भरति अंगं। श्रम थक्के दंपती उभयं॥ छं०॥ ६६॥

दूहा॥ रष्या करीब देव तुहि। सोवत न्वप भ्रत सब्ब॥
दासी चौकी चक्रित हुअ। कर धरि छित्तिय जब्ब॥ छं०॥ ६७॥
न्वप सूतौ अंतर महल। जाइ संपतिय दासि॥
जुग्गिनिवै चहुआन कौ। गुन किन्नौ अभिलास॥ छं०॥ ६८॥

दासी का राज शिविर में प्रवेश।

²बंध्यो थंभ सु रंभ हय। अप्प चली जहं राज
विसग सथ्थ दिष्यौ सकल। उर मन्यौ अविकाज॥ छं०॥ ६९॥

दासी का नूपुर स्वर से राजा को जगाने की चेष्टा करना।

गाथा॥ भू भ्रत सु चित्त निद्रा। सिंगी सार रयन्न जग्गियं॥
विद्ध दीपक अरंत मंदं। नूपुर सद्दानि भान अच्छानि॥छं०॥७०॥

साटक॥ भूपानं जयचंद राय निकटं, नेहाय जग्गाइने॥
संसाहस्स बसाइ साहि सकलं, इच्छामि जुद्धायने॥
मिद्धं चालुक चाइ मंच गहनो, दूरेस विस्वारने॥
अग्यानं चहुआन जानि रहियं, देवं तु रष्या करे॥ छं०॥ ७१॥

स्लोक॥ पंग जग्यो जितं वैरं। ग्रह मोषं सुरतानयं॥
गुज्जरी ग्रह दाहानि। दैवं तु रष्या करे॥ छं०॥ ७२॥

दूहा॥ सुनिय सु नूपुर सद्द न्रिप। सषी सु चिंतिय चित्त॥
मन्निय कारन सिद्ध मनि। न्वप गति दुक्रित नित्त॥ छं०॥ ७३॥

दासी का राजा को जगाना और इंछिनी का पत्र देना।

(१) मो.-कमल। (२) ए. कृ. को.- बंध्यौ रंभ सुथंभ।

* चान्द्रायण ॥ छत्तिय हथ्थ धरतं नयंनन चाहुयौ।
दासिय दष्षिन हथ्थ सु बंचि दिषाययौ॥
जिन बाना बलबान रोस रस दाहयौ।
मानहु नाग पतित्त अप्प जगावयौ॥ छं० ॥ ७४॥

साटक ॥ जग्यौ श्री चहुआन भूपति भरं, सिंघं समं पिष्षियं॥
दिल्लीनं पुरलोक चुंकति ग्रहं, तेजंबु कायं मुषं॥
सा संकी वय ग्रास धीरज रनं, वीराधि वीरं अरी॥
करनाटी वर दासि दाहिम वरं, मंची सरो भिष्टयं॥ छं० ॥ ७५॥

दूहा ॥ बंचि बीर कग्गद चरह। तरकि तोन कर सज्ज॥
निर तिन [1]कह दीनो न्रपति। सब सामंतन लज्ज॥ छं० ॥ ७६॥

पृथ्वीराज का इंछिनी के महल में आना।

आयौ न्रप इंछिनि महल। राज रीस चित मानि॥
अगनि दझ्झ कैमास कै। बीर बरन्निय पानि॥ छं० ॥ ७७॥

राजा प्रति इंछिनी का बचन।

वहनि वच्छ महि अच्छ रस। इहि रस महि रसकंत॥
दनुकि देव गंध्रब्व जछि। [2]दासी निसि विलसंत॥ छं० ॥ ७८॥

† चान्द्रायण ॥ संग सयंनन सथ्थ न्रपत्ति न जानयौ।
दुहु विचक्ष इक दासिय संग समानयौ॥
इंद नरिंद फुनिदर अष्षि समानयौ।
घरह घरी दुअ मद्धि ततच्छिन आनयौ॥ छं० ॥ ७९॥

दूहा ॥ रति पति मुच्छि आलुझ्झि तन। घन घुम्यौ चिहुँ पास॥
पानिन अंपन संचरै। महल कहल कैमास॥ छं० ॥ ८०॥

इंछिनी का राजा को कैमास और करनाटी को दिखाना।

संदरि जाइ दिषाइ करि। दासी दुहुं दाहिम्म॥

(१) ए. कृ. को.-किन। (२) ए.-दीसी।

* इस छन्द को चारों प्रतियों में रासा करके लिखा है परन्तु यह छन्द चान्द्रायण है। रास या रासा में २२ मात्रा और तीन जमक होते हैं। † रासा।

वर मंची प्रथिराज कहि। दइ दुवाह वर क्रम्म ॥ छं० ॥ ८१ ॥
ना दानव ना देवगति। प्रभु मानुष वर चिन्ह ॥
सु रस पवारि गवारि कह। प्रौढ़ मुगध मति किन्ह ॥ छं० ॥ ८२ ॥
रमनि पिष्षि रमनिय विलसि। रजनि भयानक नाह ॥
चित्त दिषात सु चिंचनी। मोन विलग्गिय बाह ॥ छं० ॥ ८३ ॥
निमष चित्त देष्यौ दुचित। सलष सलष्यिय नैंन ॥
हृदै सुयस....सुंदरिय। दुत्र थप थंपिय बैन ॥ छं० ॥ ८४ ॥
नीच बान नीचह जनिय। विलसन कित्ति अभग्ग ॥
सुनहु सरूप सु मुत्ति कर। दासि चरावति कग्ग ॥ छं० ॥ ८५ ॥
करकुँवंड लीनौ तमिक। [1]अरूचि दान विधि जोय ॥
चरिय कग्ग तरवर सबै। हंसनि हंसन होइ ॥ छं० ॥ ८६ ॥

विजली के उजेले में राजा का वाण संधान करना।

निसि अद्धी सुझ्झै नहीं। वर कैमासय काज ॥
तड़ित करिग अंगुलि धरम। बान भरिग प्रथिराज ॥ छं० ॥ ८७ ॥

कैमास की शंका।

श्लोक ॥ अर्जुनः सायको नास्ति। दशरथो नैव दृश्यते ॥
स्वामिन् अषेटकं हत्ति। न च वानं न चयो नरः ॥ छं० ॥ ८८ ॥

वाण वेधित-हृदय कैमास का मरण।

दूहा ॥ बान लग्ग कैमास उर। सो ओपम कवि पाइ ॥
मनों हृदय कैमास कै। हथ्थै बुझ्झय लाइ ॥ छं० ॥ ८९ ॥

कवित्त ॥ भरिग वान चहुआन। जानि दुरदेव नाग नर ॥
दिट्ठ मुट्ठि रस डुलिग। चुक्कि निकरिग्ग इक्क सर ॥
दुत्ति आनि दिय हथ्थ। पुठि पामार पचार्‍यौ ॥
बानि हत्त तुटि कंत। सुनत धर धरनि अषार्‍यौ ॥
इय कब सब सरसै गुनति। पुनित कह्यौ कविचंद तत ॥

(१) ए. कृ. को.- अरुचि।

यों पऱ्यौ कैमास आवास तें । जानि [1]निसानन छिचपति ॥
छं० ॥ ९० ॥

गाथा ॥ सुंदरि गहि सारंगो । दुज्जन दुभनोपि पिष्षि सायकं ॥
किं किं विलास गहियं । किंकिनो दुष्ष दुष्षाई ॥ छं० ॥ ९१ ॥

कविकृत भावी वर्णन ।

श्लोक ॥ भवित्यवेवं भवित्यवेवं । ललाटपटलाक्षरं ॥
दासिकाहेत कैमासं । मरणं हस्त राजभिः ॥ छं० ॥ ९२ ॥

पद्धरी ॥ नदि चलिय पूर गहराइ अत्ति । शृंगार तरुन मन मिलन पत्ति॥
मेदनी नील सोभंत रूप । प्रज रचिय सचिय सम दिष्ट भूप ॥
छं० ॥ ९३ ॥

गहकंत दृक्ष बद्दर विरूर । पहु मुष्प मंच बहु ढुक्कि क्रूर ॥
कुरलंत पुष्टि कोकिल कलच्छि । मैं मंत संढ जनु तंब पिच्छ ॥
छं० ॥ ९४ ॥

बर गजिय व्योम रजि इंद्वान । गहि काम चाप जनु दिय निसान ॥
नीलभा [2]गहर तरु रज्जि माल । गुन थक्कित जानि तुट्टे भुआल ॥
छं० ॥ ९५ ॥

मुकल्यौ अप्प भासंत पब्ब । मोहियौ रुक्कि मनि मुनि सु तब्ब ॥
.... ॥ छं० ॥ ९६ ॥

कैमास की प्रशंसा ।

कवित्त ॥ जिन कैमास सुमंचि । षोदि षट्टू धन कढ्यौ ॥
जिन कैमास सुमंचि । राज चहुआन सु चढ्यौ ॥
जिन कैमास सु मंचि । पारि परिहार मुरस्थल ॥
जिन कैमास सु मंचि । मेछ बंध्यौ बल सब्बल ॥
चिहुं ओर जोर चहुआन न्रप । तुरक हिंदु डरपन डरह ॥
बाराह बघघ बाराह बिच । सु बस्सि बास जंगल धरह ॥ छं० ॥९७॥

(१) ए. कृ. को.-" निसान छित्त पति "
(२) मो.-गरह ग्त्तर ।

अन्यान्य सामंतों के सम दूषण।

साटक॥ कन्ह' कायक कांति कंत वहनं, चामंडतिय दावरं॥
हरसिंघं बिय बाल बालय व्रतं, रामंच सलषं व्रतं॥
[1]है कंता बड़ गुज्जरं च कनकू, परदारते विम्मुहा॥
रामो काम जिता सनास विविधं, कैमास दासी रता॥ छं०॥ ९८॥

कवित्त॥ जिन मंची कैमास। ग्रेह जुग्गिनि पुर आनी॥
जिन मंची कैमास। बंध बंध्यौ पंगानी॥
जिन मंची कैमास। भीम चालुक्क पहारं॥
जिन मंची कैमास। [2]जिवन बंध्यौ षट वारं॥
सोमत्त घट्ट कैमास की। दासि काज संदोह हुअ॥
दुष्पहर चाह दस दिसि फिरै। कोइ छची ग्रब्बहन तुअ॥ छं०॥ ९९॥

राजा का कैमास को गाड़ देना।

दूहा॥ षनि गड्यौ कैमास तहं। दासी सम करि भंग॥
पंच तत्त सरसे सुषै। प्रात प्रगट्टै रंग॥ छं०॥ १००॥
जो तक पंगति उप्पज्यौ। बैनन दिषि कविचंद॥
साम प्रगट बर कंधनह। बर [3]प्रमाद मुष इंद॥ छं०॥ १०१॥

करनाटी का निकल भागना।

षनि गड्यौ न्रप सम धनह। सो दासी सुर पात॥
दिब धारनै जलद्धि तें। लीला कद्दिग सु प्रात॥ छं०॥ १०२॥
षनि गड्यौ तिहि गबषनह। तजि गौषति गई दासि॥
षनि गड्यौ कैमास बर। कित दै दासी भासि॥ छं०॥ १०३॥
कर्नाटी कैमास दुति। दासि गई तन थान॥
संकर रस संकर न्रपति। बर दंपति चहुआन॥ छं०॥ १०४॥
क्रित्य कुलच्छिन हीन चित। जीरन जुग जुग हास॥
निसि निद्रा ग्रसि चिंत बर। पुच्छिय इंछिनि भास॥ छं०॥ १०५॥

(१) मो.-है। (२) मो.-" जिनव बंधी बहु वारं "।
(३) ए. कृ. को.-प्रसाद।

उपोद्घात।

मुरिल्ल ॥ उभै दासि कैमास सपत्तौ। दासी प्रनह अमंत सु रत्तौ ॥
जामनि गई सुक्र आभासी। बिय निसपत्त प्रपत्तय दासी ॥
छं० ॥ १०६ ॥

देवी का कविचंद से स्वप्न में सब हाल जताना।

दूहा ॥ बर चिंता बर राजई। सुपनंतर [1]कविचंद ॥
जुगति मंद मौ मंद दै। भै वीचं भी विंद ॥ छं० ॥ १०७ ॥
गरै माल न्रप कित्ति भय। सोहंती तन माल ॥
सुपनंतर कविचंद सों। विरचि देवि कहि ताल ॥ छं० ॥ १०८ ॥

गाथा ॥ न्रप हति बीर कैमासं। [2]सुर घट्टी रहि निस्सया ॥
बर गौ पुब्बह धनयं। रैंनं निंद्रा गई बानं ॥ छं० ॥ १०९ ॥

दूहा ॥ सुष रत्ती पत्तौ न्रपति। दिसि धवली तमछिन्न ॥
चिंति मग्ग गहि सूर मन। पुरष प्रवानी खिन्न ॥ छं० ॥ ११० ॥

कविचन्द के मन में शंकाएं होना।

मुरिल्ल ॥ बाल सु अत द्रिगया मन किन्नी। रवि सुष भरि दिषि वल्लभ भिन्नी ॥
की पुच्छै किन उत्तर दीयौ। तजि आषेट भम्म हत लीयौ ॥
छं० ॥ १११ ॥

दूहा ॥ भ्रम परंत दिल्लिय नयर। चित सुहि संधि करूर ॥
गौ हरम्म हरि माननी। चित सामंतन सूर ॥ छं० ॥ ११२ ॥
दिन नष्षे हरि पूज बिन। निसि नष्षे बिन काम ॥
प्रात भई गत रोस गम। अरधि अग्गि सित ताम ॥ छं० ॥ ११३ ॥
गयौ न्रप्प बन अद्ध निसि। सुंदरि सौंपि [3]सहाय ॥
सुपनंतर कविचंद सों। सरसे बद्दिय आय ॥ छं० ॥ ११४ ॥

देवी का प्रत्यक्ष दर्शन देना।

(१) ए. कृ. को.-सुनि।
(२) मो "सुर घटी रहि नीलया"।
(३) ए. कृ. को. ।पसाय

मुरिल्ल ॥ तब परतष्यि भई ब्रह्मानी। बीना पानि हंस चढ़ि ध्यानी ॥
त्रिमल चीर हीर विन मंडं। तिहि काल कित्ति कही सु प्रचंडं॥
छं० ॥ ११५ ॥

जिहि निसि सो बर वित्तक वित्ती। ज्यों राजन कैमास सु हत्ती॥
बर ब्रंनत सर अंबर छाइय। तबहि रूप चंदह कवि ध्याइय॥
छं० ॥ ११६ ॥

दरसन देवि परस्सिय कव्वी। सुपनंतर कविचंद सु दिव्वी॥
बद्रिय युक्ति उचार तुंब बर। बरन उचार कियौ आसा उर॥
छं० ॥ ११७ ॥

भइ परतष्यि सु कव्वि मनाई। उगति जुगति कहि कहि समुझाई॥
बाहन हंस अंस सुष दाई। तब तिहि रूप ध्यान कबि पाई॥
छं० ॥ ११८ ॥

सरस्वती के दिव्य स्वरूप की शोभा वर्णन।

नराज ॥ मराल बाल आसनं। अखित्त [१]साय सासनं॥
सुहंत जास तामरं। सुराग राग धामरं॥ छं० ॥ ११९ ॥
कलिंद केस सुक्करे। उरग्ग बाल विथ्थुरे॥
लिलाट रेष चंदनं। प्रभात इंद बंदनं॥ छं० ॥ १२० ॥
कपोल रेष गातयौ। उवंत इंद्र पाथयौ॥
उछाइ कीर षंजनं। तरुन्न रूप रंजनं॥ छं० ॥ १२१ ॥
चाटंक झंक झंकई। तिलक्क पान संकई॥
सुहंत तेज भासई। रुलंत मुत्ति पासई॥ छं० ॥ १२२ ॥
उपंम चंद झंपयौ। चुनंत कीर सीपयौ॥
विभूअ जूअ पंचयौ। कलंक राह चंचयौ॥ छं० ॥ १२३ ॥
चिभंग मार आतुरं। चिबुक्क चारु चातुरं॥
श्रवन्न चाट पिष्षयौ। अनंग रथ्थ चक्कयौ॥ छं० ॥ १२४ ॥
जु बाल कीर सुभ्भयौ। [२]उपम्म तासु लुभ्भयौ॥
दिपंत तुच्छ दिठ्ठयौ। विचै अनार फुट्टयौ॥ छं० ॥ १२५ ॥

(१) ए. कृ. को.-छाय। (२) ए. कृ,को.-"तंकंत रत्त विंबंयौ"।

सु ग्रीव कंठ मुत्तयौ। सुमेर गंग पत्तयौ ॥
सुमंत कुच्च तुंमरं। [1]सुरच्छि लग्गि अंमरं ॥ छं० ॥ १२६ ॥
नषादि ईस अच्छनं। धरंति सुच्छि लच्छिनं ॥
सुरंग हथ्थ सुंदरी। सो पानि सोभ सुंदरी ॥ छं० ॥ १२७ ॥
सुजीव भम्म बालयं। सुगंध तिष्य तालयं ॥
कनक बिप्प पल्लया। सुराज सिंभ दिब्बया ॥ छं० ॥ १२८ ॥
विविच्च रोम रंगयं। पपील सुत्तरंगयं ॥
हरंत छब्बि जामिनी। कटिं सुहीन सामिनि ॥ छं० ॥ १२९ ॥
सदैव ब्रह्मचारिनी। अबुद्ध बुद्धि कारिनी ॥
अभाष दोष बंचही। सुहंत देवि संचही ॥ छं० ॥ १३० ॥
अपुट्ठ रंभ नारिनी। सुजुत्त श्रोप कारनी ॥
नयन्न नास कोसई। बरट्टि कट्टि भेसई ॥ छं० ॥ १३१ ॥
झलक तेज कंबुजं। चरन्न चारु अंबुजं ॥
सुरंग रंग ईडुरी। कलीति चंपि पिंडुरी ॥ छं० ॥ १३२ ॥
सबद्द सद्द नूपुरे। चलंत हंस अंकुरे ॥
सु पाइ पाइ रंगजा। जु अद्ध रत्त अंबुजा ॥ छं० ॥ १३३ ॥
दरस्स देवि पाइयं। सु कब्बि कित्ति गाइयं ॥ छं० ॥ १३४ ॥

सरस्वत्यौवाच ।

दूहा ॥ मात उचारत चंद सौं। भेद दियौ ग्रह काज ॥
दासि काज कैमास कौं। अप्प हन्यौ प्रथिराज ॥ छं० ॥ १३५ ॥

गाथा ॥ अंबुज विकसि विलासं। देवी दरसाइ भट्ट कवि एहं ॥
अद्धं बचं परष्यं। चरचरितं चंद कवि एयं ॥ छं० ॥ १३६ ॥

पावस वर्णन ।

अरिल्ल ॥ अंबुज विकसि बास अलियायौ। स्वामि बचन सुंदरि समझायौ ॥
निसि पल्ल पंच घटी [2]दू आयौ। आषेटक जंपिरु न्रप आयौ ॥
छं० ॥ १३७ ॥

(१) ए. कृ. को.-सुरत्ति। (२) ए. कृ. को.-अद्ध।

हनूफाल ॥ घन धुम्भियं चिहुपास। आषेट राजन वास ॥
निर्घोष घन घहरंत। आकाल कलि किलकंत ॥ छं० ॥ १३८ ॥
द्रिगपाल पेंड़न सुद्ध। [1]दल जलज बद्दल उद्द ॥
धर पूर वारि विसाल। गिरि थंभ पूरित माल ॥ छं० ॥ १३९ ॥
तिन भगय राजन सेन। धर स्याम अभ्भनि गेन ॥
निसि अद्ध नवनिति बिज्जि। चिहु ओर घन घन गज्जि ॥
छं० ॥ १४० ॥
थित पंति पंति सु सज्जि। छिन दीप छिन छिन रज्जि ॥
झिमझुम्म षुंम विपष्य। बहु बत्ति जल अति काष्य ॥
छं० ॥ १४१ ॥
दूहा ॥ अच्छौ दिन अच्छै महल। नवबति बज्जि बिसाल ॥
चव श्रत ग्रह कैमास मत। भग्गी पीठ रसाल ॥ छं० ॥ १४२ ॥

कैमास और करनाटी का कामातुर होना।

लघु नराज ॥ जुग सत्त पुर पंचासयं। भव भद्द मास अवासयं ॥
अग मन्न पष्य सु बारयं। दिसि दसमि दिवस उचारयं ॥ छं० ॥ १४३॥
तम भूमि तंमि नितं तयं। गत महल गुरु गत मंतयं ॥
परजंकयं परमोदयं। जनु चंद रोहिनि कोदयं ॥ छं० ॥ १४४ ॥
इल मिलिति मिलि जुग मंतयं। जुग जामि जामिनि पत्तयं ॥
सिष सिष्ययं पट रंगिनी। मन सज्ज सज्जित दंगिनी ॥छं०॥१४५॥
[2]दसयं धनं धन अच्छियं। सामानि केलि सु कच्छियं ॥
लिषि भोजयं भरि दासियं। दिय दोर ओर पियासियं ॥छं०॥१४६॥
दुति जाम पल दुति अंतयं। सषि स्वामिनी इह भंतियं ॥
असु हंकयं पल विर्म्मयं। रुषि राज सेन सु इत्तयं ॥ छं० ॥ १४७ ॥
भुअ सचित सेन निसुम्भयं। घन प्रथल रस [3]वस उभ्भयं ॥
तन तेज दीपक अलपयं। रुचि राज राजित तलपयं ॥छं०॥१४८॥
दम दमकि दामिनि दोसयं। झम झमकि बूंद बरोसयं ॥

(१) ए.-जल। (२) ए. कृ. को. सदयं। (३) ए. कृ. को. मो-रस।

धुनि नूपुरं क्षत मंदयं। गत जहां सयन नरिंदयं ॥ छं० ॥ १४९ ॥
हिय पानि मंडित जागरं। कर मड्डि निरषत कागरं ॥
छिन बंचियं असु हंकियं। क्रम क्रमत राजन बंकियं ॥
छं ॥ १५० ॥
रस तिय निमेष अतीतयं। घनघोर रोर क्रतीतयं ॥
द्रिग द्रिगन दिष्षन अंगयं। कलमहल कलह अलंगयं ॥
छं ॥ १५१ ॥
सम परस पर प्रति दासियं। मुष-भिन्न भिन्न प्रकासियं ॥
छं० ॥ १५२ ॥

कैमास का करनाटी के पास जाना।

कवित्त ॥ नाज रूप कैमास। बाल नन चिपति भुष्ष गुर ॥
मदन बढ्यो गुर जोर। लगी तन ताप तलप उर ॥
नाह नारि छंडयौ। चिष्ष लग्गिय श्रोतानं ॥
लाज बैद गयौ छंडि। रोग रोगी न पिछानं ॥
पीडयौ प्रेम मारुत सु तरु। राम नाम मुष ना कहिय ॥
जंभाति प्रकंपति सिथल [1]तन। बर प्रजंक पलक न रहिय ॥
छं० ॥ १५३ ॥

इंछिनी रानी का पत्र।

दूहा ॥ कग्ग अरोह्यौ हंस ग्रह। महल सु राज दुआर ॥
कहती राज न मानते। लिषि पट्ठयौ पावार ॥ छं० ॥ १५४ ॥
श्लोक ॥ न जानं मानवो नागो। न जानं जष्य किन्नरं ॥
ऐ अपूरबं देहं। दासी महल मनुष्ययं ॥ छं० ॥ १५५ ॥

पृथ्वीराज का इंछिनी के महल में जाना। इंछिनी का राजा को सब कथा सुना कर कैमास करनाटी को बतलाना।

दूहा ॥ सुनि रु बचन चल्ल्यौ न्त्रपति। जहां इंछिनिय अवास ॥
कह्यौ क्रत्त कैमास कौ। जो दिष्यौ ग्रह दासि ॥ छं० ॥ १५६ ॥

(१) मो.-नन।

हनूफाल ॥ जल सजल अच्छित सेनं। धर हरत धुम्मर ऐनं ॥
दम दमकि दामिनि दूरि। जलजात नैषद पूरि ॥ छं० ॥ १५७ ॥
करि इच्छिनिय ग्रह पंति। जनु मैंन रति सम पंति ॥
द्रिग दिष्षि क्रूलन वाज। तिय तरित अच्छित दाज ॥ छं० ॥ १५८ ॥
इक पंच धुन कर चंपि। तर तरकि दुअ बिच कंपि ॥
कैमास प्रति सम दीस। तहां बैनं कोन प्रकीस ॥ छं० ॥ १५९ ॥
इक चुक्कि राजन जाम। पच्चारि इंछनि ताम ॥
बिप धऱ्यौ राजन पानि। कर करषि करन सु तानि ॥छं०॥१६०॥
बिय बुद्ध लगि [1]वहि गात। भर हरिय [2]भूमि निपात ॥
तकि तिष्ष धष्षि न सिद्ध। बढि तोमरं तन बिद्ध ॥ छं० ॥ १६१ ॥
कहि क्रन्न बनिता बैन। अरि पऱ्यौ प्रभु [3]असु ऐन ॥
बानावली बर धाइ। चुकि नांहि जुग्गिनि राइ ॥ छं० ॥ १६२ ॥
गहि सुंदरी सारंग। दह नेव दुव्वनि अंग ॥
दिषि राज भवषित भग्ग। मन सोक सोच विलग्ग ॥ छं० ॥ १६३॥
[4]गड्यौ सुधन न्रप अप्प। बर उड्डि राजन तप्प ॥
.... ॥ छं० ॥ १६४ ॥

राजा का कैमास को मार कर गाड़ देना और करनाटी का भाग जाना।

कवित्त ॥ रवन कंपि रव रवन। भवन भूषन धरि हरि परि ॥
आइय दंपति इष्षि। दिष्षि दाहिम उर उब्भरि ॥
चितें राज गति राज। कठिन मन्ने मन अंतरि ॥
षनि गड्यौ कैमास। पाच सम दासि [5]तपं उर ॥
चलि सु दासि बोलन्न जो। सो भग्गी मन मानि भय ॥
समपी सुरिड्डि पांवारि कर। फिऱ्यौ अप्प बन पिथ्थ [6]रय ॥
छं० ॥ १६५ ॥

(१) मो.-वाढिय। (२) ए. कृ. को.-भूषन। (३) ए. कृ.-वसु।
(४) ए. कृ. को.-गडयो सु। (५) मो.-मयं उर। (६) मो.-रथ।

पृथ्वीराज का अपने शिविर में लौट कर आना।

दूहा ॥ गयौ राज बन जहां सयन । जहं सामंतरु सूर ॥
संभ्रम सर सति चंद सों । सब बहै सम्मूर ॥ छं० ॥ १६६ ॥

देवी का अन्तरध्यान होना।

गई मात कबिचंद कहि । भइय प्रात अनुरत्त ॥
दुचित चित्त अनुप्रात भय । चिंति भट्ट प्रापत्त ॥ छं० ॥ १६७ ॥

प्रभात वर्णन ।

कवित्त ॥ बजिग प्रात घरियार । देव दरबार नूर घुलि ॥
भ्रम्म सुक्रत अंकुरिय । पाप संकुरिय कुमुद मिलि ॥
सूर किरन बिसतरन । मिलन उद्दिम सत पची ॥
[1]काम घरी संकुटिय । उड़न पंपी मन मची ॥
मिलि [2]चक्क सु चक्क चकोर धर । चंद किरन बर मंद हुअ ॥
बिड्डुरिग बीर बीरं रहन । सूर [3]कंट मन कंद धुअ ॥ छं० ॥ १६८ ॥

पृथ्वीराज का रोजाना दरबार लगना और कविचन्द का आना।

*कवित्त ॥ अंतर महल नरिंद । महल मंडिय बुलाय भर ॥
तेज तुंग आक्रत्य । देषि अबधूत धूत नर ॥
विरद भट्ट विरदैत । नैंन बीरा रस पिष्पिय ॥
सो ओपम कविचंद । रूप हरनार सदिष्पिय ॥
सामंत सूर मंडलि रषिय । कं चित्तें कैमास जिय ॥
भावी विगत्ति जाने न को । कहा विधाता न्निम्मयिय ॥ छं० ॥ १६९ ॥

वार्त्ता ॥ [4]राजन महल आरंभै । नीकी ठौर बैठक प्रारंभै ॥
सूर सामंत बोले । दरीषानै दुलीचे षोलै ॥
छच चमर कर लीने । मूढ़ा गादी सामंतन को दीने ॥ छं० ॥ १७० ॥

---

(१) ए. कृ. को.-काम घटी संकुरी । (२) मो.-चक्क ।
(३) ए. कृ. को.-सुर कंद मन कंद हुअ । (४) ए. कृ. को.-राज ।

*अरिल्ल ॥ मद्धि पहर पुच्छैं प्रभु पंडिय। कहि कवि विजै साहि जिहि मंडिय॥
सकल सूर बेठवि सभ मंडिय। आसिष आनि दीय कवि चंदिय॥
छं० ॥ १७१ ॥

दरबार का वर्णन।

भुजंगी ॥ ढरै कनक दंडं विराजैत रायं। नगं तेज जोत्यं झलक्कंत कायं॥
ढरें चौंर सोहै लगै छच ढोरै। तहां चंद कब्बी उपम्मानि जोरै॥
छं० ॥ १७२ ॥

ग्रहं एकठे मंडली अट्ठ षेलैं। लग्यौ राह निद्दंतियं अप्प भेलैं॥
मिलो मंडली थत्य [1]विच न्रप्प भारी। मनों पारसं पावसं साम धारी॥
छं ॥ १७३ ॥

भरं भार कारी करें [2]वित्त सेनं। कसे संकमानं धनुद्धार तेनं॥
[3]विरद्दाप चंदं बरद्दाय सब्बी। दिपी जोति चौहान संजोति हब्बी॥
छं० ॥ १७४ ॥

पृथ्वीराज की दीप्ति वर्णन।

दूहा ॥ मूढ़ा धरि गादी धरी। धुर सामंता राज॥
देषि देव ग्रब्बं गरै। न्रप सिंघासन साज॥ छं० ॥ १७५ ॥

रासा ॥ कनक दंड चामर छच विराजत राज पर॥
रयन सिंघासन आसन सूर सामंत भर॥
राजस तामस सत्त चयं गुन भिन्न पर॥
मनहुं सभा मँडि वंभ बिय छिन अप्प कर॥ छं० ॥ १७६ ॥

उपस्थित सामंतों की विरदावली।

चोटक ॥ सभ वन्नन भट्ट कविंद कियं। सब राज दिसा रजपूत बियं॥
भुज [4]दष्षिन लष्षिन कन्ह हुअं। रन भूमि बिराजत जानि धुअं॥
छं० ॥ १७७ ॥

---

* छन्द १६९ और छन्द १७१ मो.-प्रति में नहीं हैं।

(१) मो.-विचित्र भारि। (२) ए. कृ. को.-चित्त, चिंत्त।

(३) मो.-वरदास। (४) ए. कृ. को.-'दच्छिन, लच्छिन।

जिन बीर महंमुद मान हन्यौ । अरि[1] अच्छ अछच पवार धन्यौ ॥
हरसिंघ हसिंह सुवाम [2]भुजं । उन मछि विराजत राज [3]दुजं ॥
छं० ॥ १७८ ॥

नरनाह सनाह सुस्वामि हुअं । जब चालुक भीम मयंद भुअं ॥
बर बिंझ विराजत राज दलं । जब चालुक चार नछिच हलं ॥
छं० ॥ १७९ ॥

परमाल चंदेलति संष धरै । न्रप जाहि बकारत रौरि परै ॥
बर वीर सु बाहरराय तनं । अचलेसर भट्टिय जासु रनं ॥
छं० ॥ १८० ॥

कर बीर सिंघासन जासु चंपै । नर निढ्ढुर एक निसंक तपै ॥
जिहि कुप्पत गज्जत देस कंपै । धर विग्रह जाहि जिहांन जपै ॥
छं० ॥ १८१ ॥

* लरि लष्यन देषन दो ललियं । मुँह मारि मुरस्थल स्वस्थ हियं ॥
सनमान सबै दिन चन्द लहै । [4]पुठियं जुध वत्त सु आह कहै ॥
छं० ॥ १८२ ॥

रिसि पाइ के चावँड लोह जन्यौ । मदगंध गयंदन सों सु लन्यौ ॥
गहिलौत गयंद सु राज [5]बरं । भुज ओट सु जंगल देस धरं ॥
छं० ॥ १८३ ॥

तप तोंवर सोभि पहार सही । दल दिष्य सु [6]साह सिताब ग्रही ॥
मुष मुच्छ सु अल्ह नरिंद मुषं । जुध मंडय साह सहाब रुषं ॥
छं० ॥ १८४ ॥

बड़गुज्जर राम कनक्क बली । जिहि सज्जत पंगुर देस हली ॥
कुवरंभ पजूनति राज बलं । जिन पग्ग सु जुग्गिनि जूह षलं ॥
छं० ॥ १८५ ॥

---

(१) मो.-अनूअ ।　　(२) ए. कृ. को.-भुअं ।　　(३) ए. कृ. को.-दुज ।

* यह पंक्ति केवल मो. प्रति में है ।　　(४) ए. कृ. को.-पुच्छियं । " चावंड रिसाइ कै लोह जन्यौ "　　(५) मो.-वरी, धरी ।　　(६) ए. कृ. को.-ताह ।

नअगौर नरेस न्रसिंघ सही। जिन रिद्धि समंतन माझ लही॥
परमार सलष्यन लष्य गनै। इक पठ्ठिय कंगुर देस तनै॥छं०॥१८६॥
दस [1]पुत्रति मानिकराइ तनै। कहि को [2]तिनही उतपत्ति [3]बनै॥
जिन बंस जराजित बीर हुअं। सर संभरिजा उतपत्ति भुअं॥छं०॥१८७॥
नवनिक्करि के नव मग्ग गए। नवदेस अपूरब मारि लए॥
तिन पट्ट सु प्रथ्थय राज तपै। कलही कलही निसि द्योस जपै॥
छं०॥ १८८॥
कर सिंगिनि टंक पचीस गहै। गुन जंग जंजीरनि तीन रहै॥
सर संधि समंतत तेज लहै। सबदं सर हेत अनंत बहै॥छं०॥१८९॥
गुन तेज प्रताप जो द्वन्न कहै। दिन पंच प्रजंत न अंत लहै॥
सम मंडप मंडित चित्त कियं। कवि अप्प सु अग्ग हकारि लियं॥
छं०॥ १९०॥
गाथा॥ *हक्कारिय चन्द कव्वी। देवी वरदाय वीर भट्टायं॥
तिहु [4]पुर परागद वानी। अग्गें आव राव आएसं॥ छं० ॥१९१॥
पद्धरी॥ बेमग्गराइ दारिद विभाड़। अचगल्ल राइ जाड़ा उपाड़॥
अनपुठ्ठराय पुठ्ठिय पलानि। मुह वंठराय तालू लगान॥छं०॥१९२॥
असपत्ति राय उथ्थापि हथ्थ। अस कत्ति राय थापन समथ्थ॥
महाराज राज सोमेस [4]पुत्त। दानवह रूप अवतार धुत्त॥छं०॥१९३॥

कविचन्द का राजा के पास आसन पाना।

दूहा॥ †आयस सुनि अग्गे [5]भयौ। दयौ मान कर अप्प॥
[6]सहि न जास कविचंद पै। निकट न्रपत्ति सु तप्प॥ छं०॥१९४॥

कन्ह का कविचन्द से मानिक राय के पुत्रों की पूर्व्व कथा पूछना।

(१) मो.-पुत्रनि। (२) ए. कृ. को.-तिनकी। (३) ए. कृ. को.-गनै।
* यह गाथा मो.प्रति के सिवाय अन्य प्रतियों में नहीं है।
(४) मो.-पूर। (५) मो.-गयौ। (६) ए. कृ. को.-"सह्यौ न जाइ"
† इस छन्द क बाद का पाठ मो. प्राति में नहीं मिलता।

जराजित्त मानिक सुतन । कन्ह पुच्छि कविचंद ॥
तिहि बंधव कारन कवन । काढ़ि दिए करि दंद ॥ छं० ॥ १९५ ॥

कवि का उत्तर कि "मानिक राय की रानी के गर्भ से एक अंडाकार अस्थि का निकलना"।

अरिल्ल ॥ तक्षक पुर चालुक ग्रह पुत्तिय । मानिकराव परिनि गज गत्तिय ॥
तिहि रानी पूरब क्रम गत्तिय । इंडज आकृति हड्ड प्रसूतिय ॥
छं० ॥ १९६ ॥

मानिक राय का उसे जंगल में फिकवा देना।

कवित्त ॥ कह जानै कह होइ । अस्ति गोला रँभ अंदर ॥
हुकुम कियो मानिक्क । जाइ नंषौ गिरि कंदर ॥
नह मन्यौ रागिनी । करे अपमान निकासिय ॥
सँभरि कै उपकंठ । रहिय चालुक पुरवासिय ॥
सोवी विगत्ति मन सोचि कै । बहुत भंति घन जतन किय ॥
दिन दिन अधिक्क बधतो निरषि । हरषि आस बढ्ढिय सु हिय ॥
छं० ॥ १९७ ॥

दूहा ॥ मुरधर षंडह काल परि । लैब सही सँग भंड ॥
आय कमधती कर रहिय । चालुक पुर गुढ़ मंड ॥ छं० ॥ १९८ ॥

मानिक राय का कमधुज्ज कुमारी के साथ व्याह करना।

कवित्त ॥ सोलंकिन मन मोच । पठय परधान विचच्छन ॥
दै असंष धन धान । लगन थप्पाइ ततच्छन ॥
पानिग्रहन कर लियौ । कुंअर हड्डा कमधज्जनि ॥
दसह दिसि उड़ि बत्त । सुने अचरज पति गज्जनि ॥
आरंभ गोल करि फौज को । गोला रँभ उप्पर चलिय ॥
नीसान डंक के बज्जते । नव सुलष्य साहन मिलिय ॥
छं० ॥ १९९ ॥

गजनी पति का मानिक राय पर आक्रमण करना।

भुजंगी ॥ नवं लष्प सेना सजे गज्जनेसं। चल्यौ चढ्ढि मग्गं अछिंदं दिनेसं ॥
पलक्कंत अंदू गजं मद्द छक्के। कमठ्ठं दिगंपाल नागं कसक्के ॥
छं० ॥ २०० ॥

प्रजारंत ग्रामानि धामं मिवासं। प्रजा कोक भज्जी उरं लग्गि चासं ॥
दरं कूच कूचं धरा हिंदु लेनं। सुन्यौ संभरीनाथ आवंत सेनं ॥
छं० ॥ २०१ ॥

करेचा परे ताम नीसानं घायं। सतं मुष्प कम्यौ सु मानिक्क जायं ॥
पचीसं हजारं चमू चाहुआनं। मिली जाम मध्ये प्रथमं मिलानं ॥
छं० ॥ २०२ ॥

पुरं चालुकं जाय डेरा सु दीनं। भज्यौ रूस नो रागिनी गोठि कीनं ॥
फिरे चढ्ढियं देय नीसान बंबं। गरज्जे मनों सापरं सत्त अंबं ॥
छं० ॥ २०३ ॥

उस अस्थिअंड का फूटना और उसमें से राजकुमार का उत्पन्न होना।

परज्जंद उट्ठे अग्राजं सबद्दं। नचै बीरभद्रं जिसे वीर हद्दं ॥
बज्यौ सिंधु औ राग सारं करारं। तबे हड्ड फट्यौ प्रगट्यौ कुमारं ॥
छं० ॥ २०४ ॥

प्रचंडं भुजा दंड उत्तंग छत्ती। नरं नारसिंघं अवत्तार भत्ती ॥
कवचं कसे उत्तमंगं सटोपं। धरा बाहरा अश्व आरूढ़ कोपं ॥
छं० ॥ २०५ ॥

पहुंच्चे पिता अग्ग दौरे पहिल्लं। अरी फौज में जोर पारे दहल्लं ॥
नषं तिष्प धारा गरग्गं सु धारे। हिरंनंकुसं गोल रंभं विदारे ॥
छं० ॥ २०६ ॥

इसे लोह वाहे छछोहे दुदीनं। मनो इंद्र वृत्तासुरं जुद्ध कीनं ॥
वहे रत्त धारान के षाल नालं। परे भूमि झूमे भरं विक्करालं ॥
छं० ॥ २०७ ॥

परी पंषिनी जोगिनी बीर ईसं। नचै नारदं आदि पूरी जगीसं ॥
कहां लग्गि चंदं बरन्नै सँग्रामं। भगी साह सेना तजे ग्रब्ब मामं ॥
छं० ॥ २०८ ॥

गजं बाज लूटे असंषित्त मालं। लियौ संग्रहे अस्सपत्ती भुआलं ॥
छं० ॥ २०९ ॥

उक्त राजकुमार का नाम कर्ण और उसका सम्भर का राजा होना।

कवित्त ॥ गोला रंभ रिन गंजि। भंजि नवलष्य भुजा दंडि ॥
सतरि सहस मयमत्त। करे सिर दंड साह छंडि ॥
पुनि सेंभरि पुर आय। पूजि आसा वर माइय ॥
उर्द्ध पाल दिय नाम। विरद हाड़ा बुल्लाइय॥
असुरान मेटि करि हिंदु हद। पिता राज लद्धिय तबै ॥
अस्तिपाल हुअ संभरि न्रपति। हड्ड मंड फट्टिय जबै ॥
छं० ॥ २१० ॥

संभर की भूमी की पूर्व्व कथा।

पद्धरी ॥ सेंभरिह मझ्झ सेंभरादेव। मानिक्क राव तिन करत सेव ॥
सुप्रसन्न होइ इन दिन बरज्जि। मति लेय दंड करि सिर परज्जि ॥
छं० ॥ २११ ॥

चढ़ि पवँग पहुमि षरि है जितक्क। अनषूट रजत ह्वै है तितक्क ॥
करि हुकुम मात सेंभरि पधारि। चहुआन ताम हय चढ़ि हकारि ॥
छं० ॥ २१२ ॥

द्वादसह कोस ऊतर क्रमंत। भवतव्य कोन मेटै निमंत ॥
मन आनि भ्रंति फिरि देषि पच्छ। ह्वै गयौ लवन गरि सर प्रतच्छ॥
छं० ॥ २१३ ॥

उपजीय चित्त चिंता निरास। छंडिय सु देह चंदहु प्रकास ॥
अनचिंत म्रत्त हुअ कलह बढ्ढि। बड़ पुच जराजित बंध कढ्ढि ॥
छं० ॥ २१४ ॥

परजंन लाज गुरजन्न मुक्कि। गोहड्ड नंषि जल घाट रुक्कि॥
पंधार लार करि सिल्लह बंधि। उत्तारि आय निज देह रुंधि॥
छं० ॥ २१५ ॥

धर बेध षेध लग्गिय अनादि। रघु भरथ पंड कुरु जुद्ध बादि॥
लिय राज पाट हय गय भँडार। मेटै न चित्त उपित्त षार॥
छं० ॥ २१६ ॥

हो तौ सु जानि फिरि कदंब गोत। डेरा उपारि बिय रवि उदोत॥
अनि अन्नि साष थप्पित उतन्न। उगरीय जीय मानिक्क तन्न॥
छं० ॥ २१७ ॥

*इह कथा जाम कहि रहिय चंद। फिरि निकट बोलि लिय तब नरिंद॥
छं० ॥ २१८ ॥

अरिल्ल ॥ मध्य प्रहर पुच्छै न्रप पंडिय। कहि कवि विजै साह जिन मंडिय॥
सकल सूर बैठे विस मंडिय। आसिक तहां दीय कवि चंदिय॥
छं० ॥ २१९ ॥

कविचन्द का आशीर्वाद।

साटक ॥ केके देस नरेस सूर किद्रसं, आचार जोवा न्रपं।
किंकिं देन प्रमान मान सरसा, किंकिं कयं भष्ययं॥
किंकिं भेस कि भूप भूषन गुनं, का सो प्रमानं धरं।
[1]किंनारी नर मान किं नर वरं, जंपे कविंदं तुअं॥
छं० ॥ २२० ॥

कवित्त ॥ नरह नरेस विदेस। भेस जूजू रसया रस॥
कै मंडे जस रस समूह। काल भ्रमया न केन बस॥
सबे षाइ संसार। किनै संसार न षायौ॥
मोहनि चित्त निहार। जगत सब बंध नचायौ॥

*छन्द १९३ से लेकर छन्द २८० तक की कथा क्षेपक मालूम होती।

(१) ए.कृ.को.-नारी।

नच्चै न मोह जग द्रोह जिम । मुगति भुगति करि ना नचै ॥
बसि परै पंच पंचो अग्गनि । मोह छांह सब को पचै ॥छं०॥२२१॥

चौपाई ॥ [1]हुंकरि चंद देवि बरदाइय । भट्ट विरद तिहुंपुर ताइय ॥
उमा जिनै जुग जुगति जगाइय । मुगति भुगति अप संगह छाइय ॥
छं० ॥ २२२ ॥

राजोवाच ।

दूहा ॥ सबै सूर सामंत [2]जुरि । बिना एक कैमास ॥
[3]तस जानौ बरदाइ पन । मंचि जोग नन पास ॥ छं० ॥ २२३ ॥

अरिल्ल ॥ प्रथम सूर पुच्छै चहुआनय । है कयमास कहौ कहुं जानय ॥
तरनि छिपंत संझ सिर नायौ । प्रात देव हम महल न पायौ ॥
छं० ॥ २२४ ॥

राजा का कहना कि यदि तुम सच्चे बरदाई हो तो बतलाओ कैमास कहां है ।

दूहा ॥ उदय अस्त तौ नयन दिठि । जल उज्जल ससि कास ॥
मोहि चंद है विजय मन । कहहि कहां कैमास ॥ छं० ॥ २२५ ॥
नन दिठ्ठौ कैमास कवि । मो जिय इय [4]संदेह ॥
चामंडा बीरह सुमन । अप्पौ न्रप्प सु छेह ॥ छं० २२६ ॥
नाग पुरह नर सुर पुरह । कथत सुनत सब साज ॥
दाहिम्मौ दुस्सह भयौ । कहि न जाय प्रथिराज ॥ छं० ॥ २२७ ॥
का भुजंग का देव ससि । निकम कवित्त जु षंडि ॥
कै बताउ कैमास मुहि । हर सिद्धी बर छंडि ॥ छं० ॥ २२८ ॥

कवित्त ॥ जौ प्रसन्न बरदाय । देव संचौ बर अप्पौ ॥
कहि अदिष्ट कैमास । देवि बर छंडि न जप्पौ ॥
तीन लोक संचरै । सत्ति तिनकी बरदाई ॥
तूपन अप्पन छंडि । जोग पाषंडह षाई ॥

(१) ए. कृ. को- हकारि (२) ए. कृ. को- तुरि ।
(३) ए. कृ. को- तम (४) ए. कृ. को- अंदेस ।

मानहु सु बात अरु वेग बत। कहिग साच कविचंद तत॥
मन बच्च क्रम्म कैमास धन। जौ दुरगा सच्ची सुभत॥
छं०॥ २२९॥

कवि का संकोच करना परंतु राजा का हठ करना।

दूहा॥ जौ छंडे सेसह धरनि। हर छंडै विष कंद॥
रवि छंडै तप ताप कर। बर छंडै कविचंद॥ छं०॥ २३०॥
हठ लग्गौ चहुआन नृप। अंगुलि मुष्ष फुनिंद॥
तिहुंपुर तुअ अति संचरैं। कहै बनै कविचंद॥ छं०॥ २३१॥
जौ पुच्छै कविचंद सों। तौ ढंकी न उघारि॥
अब कित्ती उषर चंपौ। सिंचन जानि गमारि॥ छं०॥ २३२॥

चन्द के स्पष्ट वाक्य।

सेस सिरप्पर स्हर तन। जौ पुच्छै नृप एस॥
दुहुं बोलन मंडन मरन। कहौ तौ कव्वि कहेस। छं०॥ २३३॥
होता नत कविचंद सुनि। तूं साचौ बरदाइ॥
कहि मंची कैमास सौ। क्यों मार्‍यौ अप धाइ॥ छं०॥ २३४॥

गाथा॥ कहना न चंद [1]चित्तं। नर भर सम राज जोइयं नयनं॥
आचिज्ज मूढ़ [2]वत्तं। प्रगट भवसि अवसि आरिष्टं॥ छं०॥ २३५॥

कवित्त॥ एक बान पहुमी। नरेस कैमासह मुक्यौ॥
उर उप्पर [3]थर हर्‍यौ। बीर कष्षं तर चुक्यौ॥
बियौ बान संधान। हन्यौ सोमेसर नंदन॥
गाढ़ौ करि निग्रह्यौ। षनिव गड्यौ संभरि धन॥
यल छोरि न जाइ अभागरौ। गाड्यौ गुन गहि अग्गरौ॥
इम जंपै चंद बरद्दिया। कहा निघट्टै इय [4]प्रलौ॥ छं०॥ २३६॥

---

(१) मो.- वित्तं। (२) ए. कृ. को.- मंत्तं, मंतं।
(३) ए. कृ. को.-षरहर्‍यौ। (४) मो.-प्रलै।

राजा का संकुचित होना ।

दूहा ॥ सुनि न्त्रपत्ति कवि के वयन । अनन बीय अवरेष ॥
कविय [1]वचन सम्ही भयौ । सूर कमोदनि देष ॥ छं० ॥ २३७ ॥

गाथा ॥ झंझामि झार लग्गी । संझ्या वंदामि भट्ट बचनानि ॥
बुझझासि हाम को इनं । षम दम उर मझझ रष्षियं राजं ॥
छं० ॥ २३८ ॥

सब सामंतों का चित्त संतप्त और व्याकुल होना ।

कवित्त ॥ भट्ट वचन सुनि श्रवन । कन्ह धुनि सीस ग्रेह गय ॥
विसम परिग सामंत । सुनिय साचं जु तत्त भय ॥
कोन काज इह षेह । हुऔ मंची इह राजन ॥
निसि अड्डी आषेट । कियौ किं कीऐ भाजन ॥
किं भट्ट बीर जान्यौ सु रिन । कह सुझ्यौ संभरि धनी ॥
अंगुरी दंत चंपी सकल । अप अप ग्रेह उठि भनी ॥ छं० ॥ २३९ ॥

सब सामंतों का खिन्न मन होकर दरबार से उठ जाना ।

वाघा ॥ सुनि सुनि श्रवन चंद चहुआनं । कलिमलि चित्त सुभट सब्बानं ॥
के अवलोइ सु मुष्यं चंदं । निरषे नयन के विभूत दंदं ॥छं०॥२४०॥
के भय मूढ़ जड़ बर अप्पं । के भय चित विरत्त सु दप्पं ॥
समुझि न परे सूर सामंतं । गंठन गुन नन आवै अंतं ॥
छं० ॥ २४१ ॥

निरषे द्रग मुष रत्त करूरं । असही तेज अजेज सनूरं ॥
निरषे अन्यौ अन्य सजरं । भय भय चित्त सुभट्ट सपूरं ॥
छं० ॥ २४२ ॥

गहके बहर गज्जि गुहीरं । भय न्त्रिघात तरित तन भीरं ॥
भय गंमीर सुहीर समीरं । उड्डे कर सर रेन सनीरं ॥ छं० ॥ २४३ ॥
घट्टी मद्ध पंच पल सेषं । विन भद्रवै भयानक भेषं ॥

(१) मो.-षेचन ।

दिसि नैरत्ति कि गहि गोमायं। दिसि धूमंत सिवा सुर तायं॥
छं० ॥ २४४ ॥

बही देवि चकोरन भासं। गज्जे छोनि ओनि आयासं॥
मन्न सह आरिष्ट अपारं। उपज्यौ किन कारन कत्यारं॥
छं० ॥ २४५ ॥

भुव अवलोकि कन्ह नर नाहं। उट्ठे आसन हुंत अराहं॥
चले अप्प निज मग्ग सु ग्रेहं। फुनि गोयंदराज उठि तेहं॥
छं० ॥ २४६ ॥

[१]उनमन मन्न उट्ठि सामंतं। कलमलि विकल उकल सा चिंतं॥
कहै चंद बरदाइ सकोहं। [२]हनि कैमास दासि रिस दोहं॥
छं० ॥ २४७ ॥

सुनि सुनि वचन भट्ट न्नप बानं। अप्पअप्प गए ग्रेह परानं॥
जुग्गिनि पुर [३]जग्गत चहुआनं। भइ निसि चार जाम जुग मानं॥
छं० ॥ २४८ ॥

सब के चले जाने पर कविचन्द का भी राजा को धिक्कार कर घर जाना।

कवित्त॥ राजन मझ्झ [४]संपरिय। पट्ट दरबार परट्ठिय॥
बहुरे सब सामंत। मंत भग्गिय सिर लट्ठिय॥
रह्यौ चंद बरदाइ। विमुष पग डगन सरक्यौ॥
ग्रभ्भ तेज वर भट्ट। रोस जल षिन षिन सुक्यौ॥
रत्तरी कंत जागंत रै। भई घरंघर बत्तरी॥
दाहिम्म दोस लग्गयौ परौ। मिटै न कलि सौं उत्तरीं॥छं०॥२४९॥

चौपाई॥ इह कहि ग्रेह चंद संपन्नौ। बर कैमास आसु भलपन्नौ॥
मित्रद्रोह भट उर सपन्नौ। दाहिम वरन बरन संपन्नौ॥
छं० ॥ २५० ॥

(१) मो.-"उते मत मन्न उठे सामंत। (२) ए. कृ. को.-हति।
(३) मो.-जग्गे। (४) ए. कृ. को.-संभारिय।

पृथ्वीराज का शोकग्रस्त होकर शयनागार में चला जाना और नगर में चरचा फैलने पर सब का शोकग्रस्त होना।

पद्धरी ॥ निज रहन अंग साला सु एक। आवास रंग रचन विवेक ॥
अंदर महल्ल अंतर अवास। अति [1]रचन चित्र आसासि तास ॥
छं० ॥ २५१ ॥

पर्यंक उभय आभासि भासि। [2]अति ऊक गंध रसु रस्स वासि ॥
आरोहि अप्प सोहै सु राज। बिन तहनि कहन सुष छंडि राज ॥
छं० ॥ २५२ ॥

दर रष्षि बील आएस दीन। रुक्यौ सु अप्प पर वच्च चिन्ह ॥
किय सयन पेम न्रप जंपि अप्प। रष्यौ सु थान निज दुष्ष रप्प ॥
छं० ॥ २५३ ॥

बैठो सु पिट्ठ [3]पट सूर घट्ट। रष्षे सु जक्खि सब थान थट्ट ॥
भय चकित चित्त अंदर बहाज। भयभीत मंन मन्नै अकाज ॥
छं० ॥ २५४ ॥

इह क्रत्य चित्त नयरी निवास। सब लोक दोष उद्दार रास ॥
रूंधे सु हट्ट पट्टन सु बान। बिन रूप दिक्खि दिट्ठिय डरान ॥
छं० ॥ २५५ ॥

सब पत्त सूर सामंत ग्रेह। क्रत्या सु क्रत्य मन्नेव एह ॥
इह क्रम्यौ दुष्ष विते चिजाम। भयभीति निसा मन्नी [4]सङ्गाम ॥
छं० ॥ २५६ ॥

भइ [5]षिनद जाम चव जुग समान। सब लोक दुष्ष वित्तौ डरान ॥
कैमास ग्रेह चिंत्यौ सु दोस। गड्यौ सु दासि षूनह सरोस ॥ छं० ॥ २५७ ॥
चंदिन चिंति निज नाह सत्त। चढ़ि चलिय ग्रेह बरदाइ जत्त ॥
छं० ॥ २५८ ॥

(१) ए. कृ. को-चरन। (२) ए. कृ. को.-"अति ऊक गंध रव सुर सवास"।
(३) ए. कृ. को.-पट्ट। (४) ए. कृ. को.-महाभ। (५) ए. कृ. को. षिमद।

उग्गियं मान पायान पूर। बज्जियं देव ¹दर संघ तूर ॥
*कलत्र कैमास चढ़ि वरन साल। बरदाइ देवि वर मंगि बाल ॥
छं° ॥ २५९ ॥

कवि का मरने को उद्यत होना।

चंद्रायन ॥ चलै चीय बर मंगन भट्ट सु भट्ट बर।
अप्पावै कैमास मिले जाइ अंग बर ॥
न्हर छुट्टी कवि छित्त घरी पल बरनि बर।
तौ जन जन सह चिंत सत्ति तुअ देव बर ॥ छं° ॥ २६० ॥

रोला ॥ चंद बदनि ये चंद सीष कोमंगि उचारी।
मरन टरे जो भट्ट राज कैमास विचारी ॥
हम तुम दुहुन मिलंत सुनी अंगन तुम धारी।
दंपति सम्हौ बचन तब्ब बर बरनि उचारी ॥ छं° ॥ २६१ ॥

गाथा ॥ बाला न अच्छि लग्गी। हुं बरदाइ कड्डिया अग्गी ॥
तंबाल विरस लग्गी। लच्छिन षुरसान रष्यिया मग्गे ॥छं°॥२६२॥
आदर दीन सु कब्बी। आसन आछादि रोहि तिय तथ्यं ॥
निज प्रारथना राजं। गोमभ्भ्के ग्रेह साजनं साजः ॥ छं° ॥ २६३ ॥

कविचंद की स्त्री का समझाना।

चौपाई ॥ तब ग्रेहनि बरदाइ सु आइय। अंचल गंठि विलग्गिय धाइय ॥
को ²अति जात अप्प जम आनै। अनि सिर सत्थ अप्प सिर तानै॥
छं° ॥ २६४ ॥
जिन कैमास रिद्धि रज रष्षी। जिन कैमास मंच सिर सष्षी ॥
जिन कैमास देस नव आने। सो कैमास हत्यौ निज बाने ॥छं°॥२६५॥

(१) मो-दरबार नूर।

* इस छन्द को चारों प्रतियों भुजंगी नाम से सम्बोधन किया गया है। मूल पाठ भी "उग्गियं भान पायान पूरं, बज्जियं देव दर संख तूरं। कलत्र कैमास चढ़ बरन साला। देवी बरदाय वर मंगबाला।" यह है परन्तु यह भुजंगी नहीं है। भुजंगी छन्द में चार यगण होता है। मालूम होता है लेख की भूल से कुछ हेर फेर होगया है अस्तु हमने इस छन्द को पूर्व्वोक्त पद्धरी में मिला कर पाठान्तर दे दिए हैं।

(२) ए. कृ. को.-अनि।

तू भूल्यौ बरदाय विचारं। अच्छिर सुद्धिमुद्ध मन हारं ॥
जे जमग्रेह न अप्प ढुंढाने। सो जग्गवै काय विनसाने ॥
छं० ॥ २६६ ॥

कवित्त ॥ जा जीवन कारनह। भ्रम्म पालहि ब्रत टारहि ॥
जा जीवन कारनह। अथ्थि दै चित्त उबारहि ॥
जा जीवन कारनह। द्रुग्ग हय देसति [1]अप्पहि ॥
जा जीवन कारनह। होम करि नव ग्रह जप्पहि ॥
जा जीवन सांई सुपन। न्रपति बहुत जाचिय अभौ ॥
सुक्के सु सरोवर हंस गौ। कलि बुझ्झै अधियार [2]भौं ॥ छं० ॥ २६७ ॥

जो मनुच्छ धर भ्रम्म। मरम जानै न मरम जप ॥
सास आस बंधयौ। आस आसना करै अप ॥
जग्ग जोग तप दान। सास बंधन जग्गो जुअ ॥
मोर बीर अनुकार। सास नन असन बंध धुअ ॥
छिन देह भंग विज्जल छटा। सजय विजय [3]बंधय सु जिय ॥
गुर गल्ह रहै भल पत सुचौ। दुष्य न करो महंत पिय ॥ छं० ॥ २६८ ॥

मात गरभ बस करी। जम्म बासुर बस लभ्भय ॥
षिनन नग्गि पिरुंदाय। मुदय षिन हंस अलुभ्भय ॥
बपु विसष्य बढ्ढयौ। अंत रुढ्ढह डर डरयौ ॥
कच तुच दंत जरार। धार किम किम उच्चरयौ ॥
मन भंग मग्ग सुक्कत सयल। निषत निमेषन चुक्कयौ ॥
पर कज्ज अज्ज मंगौ न्रपति। सकै न [4]प्रान षमुक्कयौ ॥ छं० ॥ २६९ ॥

दूहा ॥ समरि जाय कविचंद बर। बर लद्धौ हुंकार ॥
राज दरह सम्हौ चलै। मरन सुमंगल भार ॥ छं० ॥ २७० ॥

स्त्री के समझाने पर कवि का दरबार में जाना और राजा से कैमास की लाश मांगना।

(१) मो.-अथ्थह। (२) मो. सौं।
(३) मो.-वंधिय। (४) ए. कृ. को.-"प्रान पमुक्कयौ।

कवित्त ॥ रष्षि सरनि सह गवनि। मरन मंगल अपुब्ब किय ॥
दरनि पिष्षि दरबार। रुक्कि सक्यौ न मग्ग दिय ॥
अग्गि जलनि प्रथिराज। नैन नेनं जब दिष्यौ ॥
अति करना रस बीर। करी संकर रस लिष्यौ ॥
बुल्ल्यौ न बेन तब दीन हुअ। कनक काम कवि अच्छयौ ॥
तुम देव कित्ति कुहलिय कामल। धरनि धरनि तन मुक्कयौ ॥
छं० ॥ २७१ ॥

दूहा ॥ रहि सु भट्ट अंतर करन। कविन भ्रम्म धर भूर ॥
इह अधम्म लग्गहि उरह। क्रम्म उरक्कहि जर ॥ छं० ॥ २७२ ॥

गाथा ॥ बाला.न मंगि बरयौ। काउ वासंत भट्ट [1]सियाइं ॥
ना तुअ गति संभरवै। संभरि वै राय रायसं ॥ छं० ॥ २७३ ॥

पृथ्वीराज का नाहीं करना।

दूहा ॥ पढ़िय कित्ति बुल्लिय बयन। दिल्ली पुरइ नरिंद ॥
दाहिम्मौ दाहर जहर। की कट्टै कविचंद ॥ छं० ॥ २७४ ॥

कवि का पुनः राजा को समझाना।

कवित्त ॥ रावन किन गड्डयौ। क्रोध रघुराय बान दिय ॥
बालि सु कित गड्डयौ। चीय सुग्रीव जीय लिय ॥
चंद किन्न गड्डयौ। कियौ [2]गुरवारस हिल्लह ॥
[3]रविन पंग गड्डयौ। पुच्छि सहदेव पहिल्लह ॥
गड्डयौ न इंद्र गोतम रिषह। सिव सराप छंडन जनी ॥
इन दोस रोस प्रथिराज सुनि। मति गड्डय संभरि धनी ॥
छं० ॥ २७५ ॥

ना राजन कुर नंद। [4]नाक वत्ती [5]क्रन कट्टी ॥
अधम्म बीर विक्रम्म। सक्क बंधी कल [6]मिट्टी ॥
पंजर सद्द सु रारि। दिष्षि गंध्रव न्रप भंजों ॥

(१) ए. कृ. को.-सिरयाई, सिरपाई। (२) कृ.-गुरवास हिल्लह।
(३) ए.-रवनि।
(४) ए. कृ. को.-नाक वित्ती। (५) मो.-कट्ठी। (६) मो.-कट्ठी

तमकि तास अगि मारि। किति पुत्त सुकिय अज्जों ॥
सो सत्ति बात आतम धुरिसि। तासस इह आपुन मिटै ॥
किं जान खोय किं किं [1]जपह। किति तोय बहु न्रप नटै ॥
छं० ॥ २७६ ॥

कवि का कैमास की कीर्ति वर्णन करना।

मति कैमास मति मेर। दोस दासी न हनिज्जै ॥
मति कैमास मति मेर। सामि द्रो ह्रौ न गनिज्जै ॥
मति कैमास मति मेर। दंड कुब्बेर भरिज्जै ॥
मति कैमास मति मेर। दाग बिन धरनि धरिज्जै ॥
बहि गई सरक नगौर की। मंच जोर सेवर कहर ॥
चहुआन राव चिंतारि चित। गह्यौ कह्वि दै कारि न हर ॥
छं० ॥ २७७

दूहा ॥ दासि संग कैमास कढि। जग दिष्षवै नरिंद ॥
बरै बरनि अंगन षरी। बर मंगै कविचंद ॥ छं० ॥ २७८ ॥

कैमास की लाश उसके परिवार को देना।

कवित्त ॥ रोस मेल्ही दासी सु। राज लिन्नौ अध लिष्यौ ॥
सो नट्ठी तिन बेर। कह्वि कैमासह दिष्यौ ॥
कविय हथ्थ अप्पयौ। अप्प बरनी बर लिन्नौ ॥
पुत्र बीर दाहिम्म। हथ्थ कविचंद सु दिन्नौ ॥
तिहि तरुनि मिलत तारुनि करिनि। पेम पंति विधि विधि करै॥
कविचंद छंद इम उच्चरै। भावी गति को उब्बरै॥ छं०॥ २७९॥

राजा का कैमास के पुत्र को हाँसीपुर का पट्टा देना।

कविय पुत्र कैमास। राज हांसीपुर दिन्नौ ॥
पुब्ब धनं पन अप्पि। गोद नरसिंह [3]सु किन्नौ ॥
तिहि सु दिनह प्रथिराज। बीर दुरबार सजोइय ॥
बरनि बज्जि नीसान। रोस छिम सात्वक होइय ॥

(१) ए. कृ को.-जपियं। (२) मो.-कैवास। (३) ए. कृ. को.-सु दिन्नौ।

सुरतान गहन मोषन न्रपति। पंग बीय पातुर दरसि॥
दिषि चीय सभा मन पंग कौ। छबि संमुह बरि बरि बिरसि॥
छं०॥ २८०॥

दूहा॥ प्राहारी कैमास न्रप। सो अप्पे विह सत्त॥
न्रप पुच्छत कबिचंद कौं। अरु गुर राज सहित्त॥छं०॥२८१॥

पृथ्वीराज का गुरुराम और कविचन्द से पूछना कि किस पाप का कैसे प्रायश्चित्त होता है।

तुम गुर न्रप अरु गुर कबी। तुम जानौ बहु काम॥
किहि परि गह लंछन लगै। [1]को मेटै लगि साम॥ छं०॥ २८२॥

कविचन्द का उत्तर देना। (सामयिक नीति और राज नीति वर्णन)

पद्धरी॥ उच्चरै चंद गुर राज साज। कल कहै बत्त सो नीत राज॥
संभरहु सूर सोमेस पुत्त। कल धूत धूत [2]जग धूत धुत्त॥
छं०॥ २८३॥

सम वर प्रधान सम तेज राज। सम दान मान सामत्ति साज॥
पलटै कि राज लछन्न लीन। बहु भंति कुलह विग्गरै तीन॥
छं०॥ २८४॥

विग्गरै सूत्र हंकार मभ्भ। बर जाय अप्प रस भ्रम्म रज्ज॥
विग्गरै राज राजन अन्याइ। विग्गरै ग्रेह चीया अछाय॥
छं०॥ २८५॥

उद्दिम सु हीन न्रप राज राइ। तिन चंद चंद मातह दिपाइ॥
विग्गरै इष्टपन कट्ठ नेह। विग्गरै सोय निज खोभ ग्रेह॥
छं०॥ २८६॥

विग्गरै मोह भर समर साज। विग्गरै लच्छि बौहरे लाज॥
प्रसठ्ठै अभ्रम्म विगरै भ्रम्म। संभरि सु राज राजन सु ध्रम्म॥
छं०॥ २८७॥

(१) मो.-"कै मैटन लग्गी काम"। (२) ए. कृ. को.-गज।

साधृम्म सेव गरुअत्त जीव। चिय राज नीति राजह न सीव ॥
बिग्गरै पुन्य धीरह सु ह्रव। मादक ग्रेह बहु इष्ट ह्रव ॥
छं० ॥ २८८ ॥

बिग्गरै राज परदार [1]पान। लोभिष्ट चित्त चंचल प्रमान ॥
बिग्गरै राज सुय बाल ह्रर। संचरै बहुत सषि मझ्झ दूर ॥
छं० ॥ २८९ ॥

बिग्गरै दुज्ज ग्रह अंत दान। बिग्गरै तप्प क्रोधह प्रमान ॥
बिग्गरै राज राजन सु जानि। जो सुनै बत्त दुष्टं सु बानि ॥ छं० ॥ २९० ॥

परनारि [2]चित्त आचरन होइ। बिग्गरै राज निज संच सोइ ॥
तन सहै राज चिंतन प्रमान। पुच्छहि सु बोल कनवज्ज जान ॥
छं० ॥ २९१ ॥

पुच्छि मंच राय संभरि नरेस। तत ग्रहै राज नीतह सुरेस ॥
उच्चऱ्यौ राव जंबू नरेस। संभरिय राज संभरि नरेस ॥ छं० ॥ २९२ ॥

[3]तव बंस भाव जरतित्त मान। संभरी हुत ऊपत्ति थान ॥
तिहि सेन राअनीतह सु राज। सो नीत राज जित [4]सुरग राज ॥
छं० ॥ २९३ ॥

रिसराज जोर तिन तह प्रमान। बंधयौ सकल तिन राज [5]थान ॥
कसि असक ओर कसि द्रव्य दंड। दिज्जियै ओर जोगिंद डंड ॥
छं० ॥ २९४ ॥

भंजियै बंक कै बंक साल। भजि कठिन कंक कै कठिन बाल ॥
बल पुच [6]माय सम सुमति जाइ। आनयौ पुष सम रहिस धाय ॥
छं० ॥ २९५ ॥

[7]पंडिय सु दोस दुज दान प्रीय। न्रप दुरै झूठ कित्ती सु [8]दीय ॥
न्रप मीति भ्रम्म समकाल लोय। बंकै कटाछ्य बंके न कोय ॥
छं० ॥ २९६ ॥

(१) ए. कृ. को.-थान। (२) ए. कृ. को.-चित्त। (३) ए. कृ. को.-तम।
(४) ए. कृ. को.-सुग्गि। (५) ए. कृ. को.-ग्रान। (६) ए. कृ. को.-न्याय।
(७) ए. कृ. को-"मंडिय सुदेस हुज दान प्रीति"। (८) ए. कृ. को.-दीत।

संसार नीति किय तत्त पंथ। विभ्भूत नीति सुनि नीति ग्रंथ॥
सह भ्रम्म पुच्छ तत्तं प्रमान। नित साम षास ब्रह्मा सु ध्यान॥
छं० ॥ २९७ ॥

रषिये सु भ्रत्य रष्षन सु लच्छि। फिरि हीत ताहि हित तत्त अच्छि॥
न्रिप भजै नीति उमराव हीति। न्रिप [1]रहै नीति जो हैत प्रीति॥
छं० ॥ २९८ ॥

न्रप जानि बीर भौ ताहि भेद। दुह भरनि बीर ज्यों पुबह षेद॥
न्रप मेटि करै समता सरीर। बुभ्झवै अगनि जिम बरसि नीर॥
छं० ॥ २९९ ॥

भोग वै राज परिगह संजुत्त। मति प्रान करै सा भ्रम्म पुत्त॥
रिषियै सु भ्रत्य इन भांति मान। ते सामि काम अमरित्त जान॥
छं० ॥ ३०० ॥

सा भ्रम्म सहै सो मित्त सेव। आनै न सामि उत्तर न देव॥
न्रप पास बत्त इह भंति जानि। कवि बहि लज्जि गंभीर बानि॥
छं० ॥ ३०१ ॥

न्रप सुनी बत्त परि कहि न जाइ। ज्यों जल तरंग जल में समाइ॥
हय गय सु मांहि धुत्र परी छत्र। सम्माइ जेम जल छांह कूत्र॥
छं० ॥ ३०२ ॥

समसान अग्गि निधि न्रपति जीय। न्रप चित्त भंग कीटी [2]सु लीय॥
रष्यो सु अंब जौ न्रपत रूप। वय ससी चित्त लज्जी सरूप॥
छं० ॥ ३०३ ॥

जन हथ्थ आन पंकी सु रंग। तामंस लोह जनि [3]मनित पंग॥
सुरतान चित्त जब होय लोय। उन चित सदा कलपंत होइ॥
छं० ॥ ३०४ ॥

सा भ्रम्म बिना परि गहन काच। रूपं न रत्त दरबार साच॥

(१) ए. दहै। (२) मो.-तीय।
(३) ए. कृ. को. मन पतंग।

दुज सफर जम्म ¹नाहो सनान । संसार रतन नृप परष बान ॥
छं० ॥ ३०५ ॥

दूहा ॥ इह मंची नृप काज अरु । सब परिगह इन भीत ॥
राजनीति राजन रहै । जस धन ग्रहन न जीत ॥ छं० ॥ ३०६ ॥

राजा का कहना कि मुझे जैचन्द के दरबार में ले चलो ।

होय कंठ लग्गिय अगनि । नयन जलग्गि ललान ॥
अंब जीव बंछै अधिक । कहि कबि कोन सयान ॥ छं० ॥ ३०७ ॥
तौ अप्पों कैमास तो । जो मेटै उर अंदेस ॥
दिष्या वहि पहु पंगुरौ । जै जैचंद नरेस ॥ छं० ॥ ३०८ ॥

कवि का कहना कि यह क्यों कर हो सकता है ।

पिनक न मन धीरज धरहि । अरि दिष्पत तिन काल ॥
अति बर बर बुल्लै नहीं । सुकिम ²चलहि भूपाल ॥ छं० ॥ ३०९ ॥

पृथ्वीराज का कहना कि हम तुम्हारे सेवक बन कर चलेंगे ।

मुरिल्ल ॥ चलौं भट्ट सेवक होइ सथ्थह । जौ बोलूं तो हथ तुम मथ्थह ॥
जबह जानि संमुह हुअ । तब संम्भरु अंग करौं दोउ भूअ ॥
छं० ॥ ३१० ॥

कवि का कहना कि हां तब अवश्य हमारे साथ जाओगे ।

अरिल्ल ॥ अब उपाय समझयौ इह संचौ । सुनि कवि मरन मिटै नह रंचौ ॥
समर तिथ्थ गंगाजल पंचौ । अवसर अवसि पंग ग्रह नंचौ ॥
छं० ॥ ३११ ॥

राजा का प्रण करना ।

दूहा ॥ आनंद्यौ कवि के वयन । न्रप किय संच विचार ॥

(१) ए. कृ. को.-तीही । (२) मो.-चलहु ।

मरन गरुअ सिर हरुअ है। जियन हरूअ सिर भार ॥छं०॥३१२॥

*चान्द्रायन॥ अप्पौ पहु कैमास सती सत्त संचर्‌यौ।
मरन लगन विधि हथ्थ तत्थ कवि उच्चरयौ॥
धर भर पंग प्रगट्ट रुठट्ट विहंडिहौं।
इन उपहास विलास न प्रानय पंडिहौं॥ छं०॥ ३१३॥

कैमास की स्त्री का उसका मृतकर्म करना, राज महलों की शुद्धता होनी, सब सामंतों का दरबार होना।

पद्धरी॥ अप्पौ सु कविय कैमास राज। बरदाय कित्ति मन्यो सु काज॥
दीनौ सु हथ्थ सह गमनि तथ्थ। लै चली बाहि 'क्रत न्नि सथ्थ॥
छं०॥ ३१४॥

बोलयौ सुतन कैमास हंस। दुअ तिय बरष्ष अति रूअ रंस॥
दीनौ जु तथ्थ सिर राज हथ्थ। यप्पौ सु यान परि तुय परथ्थ॥
छं०॥ ३१५॥

दुअ घटिय पंच पल आदि जाम। किन्नौ सु महल चहुआन ताम॥
बोले सु सब्ब सामंत सूर। आदर अदब्ब दिय अत्ति ऊर॥
छं०॥ ३१६॥

कयमास घात अपराध दासि। सब कही सुभट सुभ्भा सु भासि॥
अप्पान कत्य मन्यो सु अप्प। जानहु सु रीति राजंग दप्प॥
छं०॥ ३१७॥

इम कहिय कन्ह नरनाह बोलि। अप्पी सु तेग हमकों सु पोलि॥
किय सुमन रूर सामंत सब्ब। हुअ ग्रेह ग्रेह आनंद तब्ब॥
छं०॥ ३१८॥

सब नैर बासि आनंद मन्नि। पोले किपाट न्नप जुगति गन्नि॥
उठ्यौ सु महल सब सुचित कीन। पारनें काज द्वादसी दीन॥
छं०॥ ३१९॥

*इस छन्द को चारों प्रतियों में मुरिछ्ल करके लिखा है। (१) मो.-क्रम।

कैमास के कारण सबका चित्त दुखी होना।

बहुरेब सूर सामंत ग्रेह। कयमास दोस मन्यो सु देह॥
कौने सुभट्ट सब सुचिंत राज। उर मन्यौ अप्प आनंद काज॥
छं० ॥ ३२० ॥

पालहि सु नीति बिधि कित्ति अंग। बिन सच्च रच्च दाह्मिम रंग॥
भंगीर धीर मति बीर अत्ति। [1]सुभ्भ्भै सुमन्न अंतर उरत्ति॥
छं० ॥ ३२१ ॥

राजा का कैमास के पुत्र को कैमास का पद देना।

दूहा॥ उरसल्लौ कैमास नृप। पुच परठ्ठिय पट्ट॥
चित चंचल अव्वल करिय। दिय हय गय बर थट्ट॥
छं० ॥ ३२२ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके चावंडराय बेरी भरन क्रन्नाटी दासी षून कैमास बधनो नाम सत्तावनवों प्रस्ताव संपूरणम्॥ ५७॥

(१) मो.-मुझ्झै।

अथ दुर्गा केदार सम्यौ लिष्यते ।

(अट्ठावनवां समय ।)

पृथ्वीराज का कैमास की मृत्यु से अत्यंत शोकाकुल होना ।

दूहा ॥ नह सच मुष्य गवष्य यह । नह सच अंदर राज ॥
उर अंतर कैमास दुष । सामंता सिरताज ॥ छं० ॥ १ ॥

कवित्त ॥ न्रप क्रीड़त चौगान । सथ्थ सामंत सूर भर ॥
जब रामति रसरंग । तब्ब संभरै मंचि बर ॥
जब क्रीड़त जल्ल केलि । चित्त कैमास उहासै ॥
बारावन्नि बिहार । तथ्थ दाहिम बर भासै ॥
जब जब सु गान कोतिग कला । पुहप सुगंधह [1]वास रस ॥
जब जबह अवर सुष संभवै । तब उर सल्लै सहिय तस ॥ छं० ॥ २ ॥

दूहा ॥ अति उर सालै मंचि दुष । करै न प्रगट समुझ्झ ॥
मानो कूआ छांह ज्यौं । रहत रात दिन मझ्झ ॥ छं० ॥ ३ ॥

सामंतों का गोष्टी करके राजा के शोक निवारण का उपाय विचारना ।

कवित्त ॥ तब सु कन्ह चहुआन । राव जैतह सम बुझ्झय ॥
षीची राव प्रसंग । जाम जद्दव घन सुझ्झय ॥
चंद्र सेन पुंडीर । राव गोयंद राज बर ॥
लोहानौ आजान । राम रामह बड़गुज्जर ॥
पुछ्यौ सु मंच सब मंच मिलि । राज दुष्य कैमास मिति ॥
नन कहै [2]कवन सो मन वचन । मिटै सोइ मंडौ सुमति ॥
छं० ॥ ४ ॥

सामंतों का राजा को शिकार खेलने लिवा जाना ।

---

(१) ए. कृ. को.-बीस ।   (२) ए. कृ. को.-वचन ।

कही जाम जद्दो जुवान। सुनि कन्ह नाह नर॥
चंद्र सेन पुंडीर। राय गोयंद राज बर॥
आषेटक प्रथिराज। सह अंतर गति आदै॥
दै समद्धि संक्रमौ। करौ इन बुद्धि सवादै॥
मन्त्री सु सब्ब सामंत मिलि। थपि सामंतन सत्ति करि॥
बरनौ सु जाम जद्दव न्रपति। तबहि राज म्रगया सुभरि॥छं०॥५॥

सज्जि सब्ब सामंत। चल्यौ चहुआन पान भर॥
अटल अवनि आभंग। सज्जि सक कन्ह नाह नर॥
गरुअ राव गोयंद। अतत्ताईय ईस बर॥
चढ़िय निडर रट्ठौर। सलष लष्षन बघेल भर॥
सामंत सूर मिलि इक हुअ। चले सथ्थ राजन ररिय॥
औछंग अंग सन्नाह लै। इम सु राज म्रगया करिय॥ छं० ॥ ६ ॥

प्रनित सब्ब सामंत। चल्यौ चहुआन अनब्बर॥
सथ्थ सूर सामंत। विरद अन्नेक बहत सिर॥
सथ्थ लीन सन्नाह। अवर परकार साथ सजि॥
बानगीर हथ नारि। धारि दिढ़ मुट्ठि [1]हथ्थ रजि॥
घन लीन सज्जि सथ्थें [2]सयन। करि टामंक सु कूचकिय॥
क्रीड़न सु राज म्रगया चल्यौ। सब आषेटक साजलिय॥छं०॥७॥

पृथ्वीराज के शिकारी साज सामान का वर्णन।

पद्धरी॥ आषेट चल्यौ प्रथिराज राज। सथ लिये सूर सामंत साज॥
रस अग्ग सून्य सौ तुंग एक। सथ लिये तुंग सो भषन तेक॥
छं० ॥ ८ ॥

पंच सै मद्धि नाहर पछारि। जीव लैं जाव वचछंतिवार॥
इक सहस बधन वादाह तेज। जुटि पटकि भुम्मि कढ्ढत करेज॥
छं० ॥ ९ ॥

(१) मो.-रथ्थ। (२) ए. कृ.- को.-सथन।

सारद्ध सहस बल गनै कौन। धावंत भूंमि भुल्लाइ पौन॥
छल छेद भेद जीवन लषंति। जुट्टंति अंत पसु पल भषंति॥
छं०॥ १०॥

पय तरह रत्त मुष अग्र नास। रत्ती सु रसन कोमल सु भास॥
नष बीह अग्र कै बीय चार। चौंरार पुंछ तिष्षे सु तार॥छं०॥११॥
कर पदह थोर जड्डे सजोर। नष तिष्य विद्ध गिरि वज्ज रोर॥
कटि कुसल थूल नित्तंव जानि। उर थूल लंक केहरि समान॥
छं०॥ १२॥

गररत्त गहअ विसाल भाल। तिष्षे सु दसन दंपति कराल॥
कप्पोल सरल बल प्रथुल रुच्च। सोभंत गात वैताल रुच्च॥
छं०॥ १३॥

बिन अंग रोम के प्रथुल रोम। अन्नेक जाति दिसि विदिसि भोम॥
द्रिग अनत तेज जोतिष्य जास। जघनं सु गत्ति खगराज ग्रास॥
छं०॥ १४॥

जर हेम पट्ट के डोरि पट्ट। सेवक्क एक प्रति उभय घट्ट॥
धावंत धरनि आजानवाह। बर बेग पवन मन लच्छि गाह॥
छं०॥ १५॥

नर जान रोह के अस्व जान। आरुढ़ सकट के वृषभ यान॥ शकट॰
तुंगह सु पंच तोमर पहार। अन्नेक देस साजोति सार॥
छं०॥ १६॥

सत तुंग भषन संगौस राव। तुंगह सु पंच आमानि ताव॥
पम्मार जैत चव तुंग सथ्थ। द्वै तुंग भषन चोहान तथ्थ॥
छं०॥ १७॥

चय तुंग चंद पुंडीर धीर। द्वै तुंग राम गुज्जर (१)गहीर॥
बलिभद्र एक सारद तुंग। परसंग राव द्वै तुंग जंग॥ छं०॥ १८॥
द्वै तुंग महन परिहार सार। चय तुंग बरुन बंधव सहार॥
षेलंत सब्ब प्रथिराज संग। गिरवर विहार थल बढ्ढि रंग॥
छं०॥ १९॥

(१) ए. कृ. को.-गहीर।

सारद्ध दून सें चिच साज। बर साज बहल के भास भाज ॥
हय रोय केय आरोहि पिट्ठ । स्री गोस केस जन्नाव यट्ट ॥
छं० ॥ २० ॥

फंदैत कुरँग सें दून सार। जर हेम [1]पट्ट डोरी मषार ॥
जुर बाज कुही तुर मतिय जुत्त। को गनै अवर पंषी अभुत्त ॥
छं० ॥ २१ ॥

[2]षेदा सु सहस सारद्ध एक। तरिया सु सहस चौ जूवि मेक ॥
सें पंच मूल धारी अभूल। द्रिग दिट्ठ अंत आनै समूल ॥ छं० ॥ २२ ॥
आवै सु मध्य पावै न जानि। क्रीड़ंत राज सम विषम थान ॥
.... । .... ॥ छं० ॥ २३ ॥

शहाबुद्दीन का दिल्ली की ओर दूत भेजना।

कवित्त ॥ मन चिंतै सुरतान। मान संभरिपति भंजिय ॥
पानी पन्न प्रवास। सबै सुष तिन दुष तज्जिय ॥
तिन सु बैर उर चिंति। प्रात अप्पिय सम [3]दूतन ॥
तुम दिल्लिय पुर जाहु। जहँ चहुआन सु धू तन ॥
लिषि पच साह ध्रम्मान सम। मुष वानी इम रट्टियौ ॥
कैमास कृत्य सामंत सम। षबरि विवरि सब पट्टियौ ॥ छं० ॥ २४ ॥
दूहा ॥ दूत सपत्ते साहि तब। जहं कायथ ध्रम्मान ॥
भेद राज सामंत कौ। लिषि दीजै अब्बान ॥ छं० ॥ २५ ॥

धम्मायन कायस्थ को शाह का दिल्ली की सब कैफियत लिखना।

ध्रम्माइन काइथह तब। जो [4]कछु वित्त कवित्त ॥
चाहुआन सामंत के। सब लिखि दिये चरित्त ॥ छं० ॥ २६ ॥

दूतों का गजनी पहुंच कर शाह को धम्मायन का पत्र देना।

(१) ए. कृ. को.-घट्ट। (२) ए. कृ. को. दोषा।
(३) ए. कृ, को.-दूतह, धूतह। (४) ए. कृ. को. चिन्त।

दूत सपत्ते गज्जनै। जहं गोरी सुरतान ॥
तपैं साह साहाब बर। मनों भान मध्यान ॥ छं० ॥ २७ ॥

दिन चढ़तें साहाब दर। आनि कगर कर दीन ॥
मुदित चित्त भए मीर सब। मन उछाह सब कीन ॥ छं० ॥ २८ ॥

दुर्गा भाट का देवी से कविचन्द पर विद्या वाद में विजय पाने का वर मांगना।

कवित्त ॥ निसा एक निज ग्रेह। भट्ट साहाब दुग्ग वर ॥
धरिय देवि उर ध्यान। इष्ट चिंतन सु अप्प करि ॥
निसा अद्ध सुत जानि। देवि आई सुद्दित्त धरि ॥
कहै चंडि सुनि चंड। मुझ्झ विग्यान इक्क बर ॥
बरदाइ चंद चहुआन कौ। सुनिय अपूरब कथ्य तस ॥
सम बाद विद्य मंडौ रसन। जौ पाऊं देवी दरस ॥ छं० ॥ २९ ॥

देवी का उत्तर कि तू और सब को परास्त कर सकता है, केवल चन्द को नहीं।

कहै देवि सुनि दुग्ग। उभय पुत्तह नह अंतर ॥
दीरघ चंद सु चारु। अनुज केदार कलाधर ॥
वाद विवाद जु कोइ। जाय चंदह सम मंडै ॥
छीन होइ मति हीन। ख्याति तिन वानी पंडै ॥
जित्तनह अवर जग मझ्झ तुम। एक चंद अंतर सुचिर ॥
अनि वस्त विवह अप्पों अनत। पुच सु पुज्जन प्रेम धर ॥ छं० ॥ ३० ॥

हनूफाल ॥ उच्चरिय देविय गाजि। सुनि भट्ट तूं कविराज ॥
कविचंद दीरघ सेव। तुम अनुज अंतर भेव ॥ छं० ॥ ३१ ॥
नन करहु तिन सम वाद। आनि देस जिप्पन स्वाद ॥

दुर्गा का कहना कि मैं पृथ्वीराज से मिलना चहता हूं इस पर देवी का उसे वरदान देना।

केदार अष्यय एम। चहुआन देषन प्रेम ॥ छं० ॥ ३२ ॥

जो हुकम अप्पै मात। सुविद्दान पुच्छौं बात॥
बोली सु देवी बेन। तुम चलौ दिल्लिय चेन॥ छं०॥ ३३॥
साहाब दैहै सीष। चहुआन पेम परीष॥
हय गय सु वाहन हेम। ग्रामेक पच परेम॥ छं०॥ ३४॥
सत बाज हथ्यिय तौस। समपै सु दिल्लिय ईस॥
अषेट लभ्भय राज। पानीय पंथ समाज॥ छं०॥ ३५॥

प्रातःकाल दुर्गा भाट का दरबार में जाना।

गाथा॥ निसि गत जग्गिय भट्टं। उर आनंद मानि मन अप्पं॥
जहां साहिब सुरतानं। तहां स चलि अप्पयं कब्बी॥ छं०॥ ३६॥
दूहा॥ मुक्कि ग्रहं निय ग्रह दिसा। सयन अप्प तजि बंध॥
ज्यौं कंचन जिय चिंतइय। ज्यौं पंडित गुन अंध॥ छं०॥ ३७॥
गाथ॥ कबि पहुंच्यौ दरबारं। करि सलाम साह बर गोरी॥
दिष्टे धासब सेनं। पेंसत दिट्ठाइ गोरियं साहिं॥ छं०॥ ३८॥

दुर्गा भट्ट का शहाबुद्दीन से दिल्ली जाने के लिये छुट्टी मांगना।

कोलाहल कवियानं। सनमानं साहिबं होयं॥
[1]वारिज विपनह मझ्झै। ना सूझंत हरुअ गरुआई॥
छं०॥ ३९॥
भुजंगी॥ दिषे साहि गोरी दरब्बार थानं। करै भट्ट केदार [2]ताके बषानं॥
मनो पावसं अंत आभा सु रंगं। दिषे साहि दरबार बहु मेछ रंगं॥
छं०॥ ४०॥
कही बागबानी प्रमानी सु अल्ली। दियौ साह सीषं चलै भट्ट दिल्ली॥
.... । .... ॥ छं०॥ ४१॥

तत्तार खां का कहना कि शत्रु के घर मांगने जाना अच्छा नहीं।

(१) मो.-ज्यो बाज दिन संझाने। (२) ए. कृ. को.-ताकि।

कवित्त ॥ सुनिय बचन सुरतान । दिष्षि बोल्यौ ततार बर ॥
भट्ट चलै मंगना । जहां बंध्यौ सु अप्प कर ॥
अरिसौं ना हिय मिलन । मगन तिन ठाउन जाइय ॥
मान भंग जहां होइ । पास तिन मग नन पाइय ॥
अप्पिहै दान अप्पन कुटिल । अप्प कित्ति तौ [1]हान मम ॥
बरदाय भट्ट द्रुग्गा सु तुम । इच्छ होइ तौ करहु गम ॥ छं० ॥ ४२ ॥

शाह का कविचन्द की तारीफ करना ।

दूहा ॥ सुनि सहाब हसि उच्चरिय । दिष्षहु चंदह सत्त ॥
सुपनेंऊ धर गज्जनें । मंगन नायौ इत्त ॥ छं० ॥ ४३ ॥

इस पर दुर्गा भट्ट का चकित चित्त होना ।

सु'नय बयन सुरतान मुष । कवि उत्तर नन आइ ॥
मानौं उरग [2]छछोंदरी । डारैं बनै न षाय ॥ छं० ॥ ४४ ॥

शहाबुद्दीन का दुर्गा भट्ट को छुट्टी देना और भिक्षावृत्ति की निन्दा करना ।

घरी एक बिसमति भयौ । मुष दिष्षै सुरतान ॥
मोहि भट्ट पुंछहु कहा । जाहु जहां तुम जान ॥ छं० ॥ ४५ ॥
तिन तें तुस तें तूल तें । फेंन फूल तें जानि ॥
हसि जंपै गोरी गरुअ । मंगन है हरुआन ॥ छं० ॥ ४६ ॥

दुर्गा केदार का दरबार से आकर दिल्ली जाने की तैय्यारी करना ।

सुनत बचन सुरतान मुष । भट्ट संपतौ धाम ॥
तजि विराम चित्तह चल्यौ । जुग्गिनिवै पुर ठाम ॥ छं० ॥ ४७ ॥
पिता पुत्र सों बत्त कहि । मंगन मन चहुआन ॥
स्वामि बैर दातार घन । साहि कही इह बानि ॥ छं० ॥ ४८ ॥

(१) ए. कृ. को. दान मम । (२) ए. कृ. को. छछुंदरी ।

कवित्त ॥ [1]चलिय भट्ट बर ताम। नाम द्रुग्गा केदार बर ॥
संभरेस अवदेस। लष्य अप्पै विलष्य गुर ॥
अति उतंग चहुआन। मान मरदन षल पानं ॥
अरब षरब उप्परैं। कोरि अप्पै करि दानं ॥
संभरिय राउ सोमेस सुअ। आसमान अभिलाष पल ॥
भिदै न [2]जाहि माया प्रबल। मनों नीर मझ्झैं कमल ॥ छं० ॥ ४९ ॥

दुर्गा केदार का ढाई महीने में पानीपत पहुंचना।

दूहा ॥ [3]पष्य पंच पंथह गवन। आतुर षरि उत्ताव ॥
सुनिय राज संभर धनी। पानी पंथ प्रभाव ॥ छं० ॥ ५० ॥
गिरिवर झुंगर [4]गहर बन। नद विहार जल थान ॥
क्रीड़त देसह आनि किय। पानी पंथ मिलान ॥ छं० ॥ ५१ ॥

शिकार में मृत पशुओं की गणना।

कवित्त ॥ पानी पंथह राइ। आय षेलत आषेटक ॥
सत्त एक एकल बराह। हत्ते सु गात सक ॥
अवर सत्त घट तथ्य। घत्त हत्ते करवानह ॥
सौ कुरंग संग्रहै। [5]दून सौ हनै चितानह ॥
को गनै अवर सावज [6]अनंत। हनें [7]पह्व अरु पंषि जहां ॥
उत्तंग छाह जल थान पिषि। चित्त उल्हस अनु सरिय तहां ॥
छं० ॥ ५२ ॥

राजकुमार रेणसी का सिंह को तलवार से मारना।

नीसानी ॥ अहो सिंघ न वल्ल ढूक आया निथ्थारे।
संभरू हक्क गहक्क ही उथ्था [8]भूभारे ॥
उत्तरिया असमान थी किनि कस्या भूफारे।
कंध बिबथ्था प्रथु कपोल तिष दंत करारे ॥ छं० ॥ ५३ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-चल्यौ। (२) ए. कृ. को.-नाहि।
(३) ए. कृ. को.-पक्ष। (४) ए. कृ. को. गहन। (५) मो.-दूत।
(६) ए. कृ. को. अनंग। (७) ए. कृ. को.-अनंतीति। (८) ए. कृ. को.-मारे।

जीह झाक झक झकै मनों बीज पथारे ।
नैन विसोहै जामिनी गुरु सुक्रह तारें ॥
लग्गी भट्ट टगट्टगी मनों [1]मुस्सारे ।
संभरिया पंच मुष्ष थापें देष्षा दस बारे ॥ छं० ॥ ५४ ॥
आया कुंअर उप्परे षावास निहारे ।
आडा आया संकडा परवार पचारे ॥
आवत [2]सीस उझक्किया सिर सिंगी झारे ।
हथ्थल षग्ग पछट्टिया कोय पिंड पलारे ॥ छं० ॥ ५५ ॥
रेंनि करष्षे कोपिया झुक्या असि झारे ।
बहिया कंध विसंध होय दोय टूक निनारे ॥
मनों सारे स्रत पिंड हो धग्गा कुल्लारे ।
पड़िया सीस धरट्ट हे परसद्द पहारे ॥ छं० ॥ ५६ ॥
जानि परे गिरि शृंग होहारि वज्र प्रहारे ।
जानि कि कन्हा कोपिया दोइ मल्ल पछारे ॥
कै अप्प कुपे रघुनाथ ने सिर रावन झारे ॥
जानि अलुझझी गुज्जरी दधि मट्ट फुटारे ॥ छं० ॥ ५७ ॥
क्रूर कबारी कुट्टिया तरु उंच कुठारे ।
रेनि कहंदै धन्य हो जै सद्द उचारे ॥ छं० ॥ ५८ ॥

पानीपत के मैदान में डेरा पड़ना ।

कवित्त ॥ आषेटक संभरिय । कुंअर मगराज प्रहारे ॥
जामदेव जहों । पुंडीर का कन्ह विचारे ॥
दस दिस अरिय प्रचंड । तुच्छ सिकार सध्य हम ॥
मिलि चिन्तय चहुआन । अप्प षिल्लियै भोमि क्रम ॥
सुनि राज अप्प मन फिरन हुअ । मानि मंत सामंत किय ॥
सित माह प्रथम बर पंचमी । पानीपंथ मेलान दिय ॥ छं० ॥ ५९ ॥

गोठ रचना ।

(१) ए. कृ. को.-मुछारे । (२) ए.-सीर।

दूहा ॥ तहां उतरि प्रथिराज पहु। करिय गोठि तथ्थाहु ॥
घन पकवान सुअन अनत। गनै कोन जी हांहु ॥ छं० ॥ ६० ॥

गोठ के समय दुर्गा केदार का आ पहुंचना।

कवित्त ॥ भई गोठि जब राज। सद्द परिहार सबन किय ॥
आय सूर सामंत। अवर बरदाय बोल लिय ॥
तथ्थ समय इक भट्ट। नाम द्रुग्गा केदारह ॥
सपत दीप दिन जरहि। सथ्थनी सर नीसारह ॥
सिर हेम छच उप्पर उरग। अंकुस तस कर दंड सम ॥
आसीस आय दीनी न्रपति। मिलि पहु पुच्छिय मति मरम ॥
छं० ॥ ६१ ॥

चौपाई ॥ आषेटक संभरि न्रप राई [1] बट छाया बैठे [1]तहां आई ॥
दानवंत बलवंत सलज्जौ। सुबर राज राजन प्रथिरज्जौ ॥छं०॥६२॥

कवि के प्रति कटाक्ष वचन।

दूहा ॥ भट डिंभी आडंबरह। अरु पर जानन वित्त ॥
अप्प सु कवि कब्बी कहै। किय न्रप सम्हौ चित्त ॥ छं० ॥ ६३ ॥

कवि की परिभाषा।

गाथा ॥ भट्ट उचरियं बानी ॥ [2]उगतिं लहरि तरंगं रंगं ॥
[3]जुगतिं जल जंभायं। रतनं तर्क वितर्कयं जानं ॥ छं० ॥ ६४ ॥

कवित्त ॥ आनन तर्क वित्तर्क। सरल बानी सुभ अच्छिर ॥
च्यारि बीस अरु च्यार। रूप रूपक गुन तच्छिर ॥
सुंदर अठ गन ग्रेह। लघू दीरघ बल नच्चै ॥
जुगति उगति घन संचि। लेइ गुन औगुन [4]बच्चै ॥
बुधि तोम बान बर भलक करि। वर विधान मा बुद्धि कबि ॥
बिय गुनिय देषि ग्रब्बह गरै। ज्यौं तम भगत देषंत रबि ॥
छं० ॥ ६५ ।

(१) ए. कृ. को.-नृप छाई। 　(२) मो.-उकतं लहर तरंगयं रंगं।
(३) मो-जुगत। 　(४) मो.-वंचै।

दुर्गा केदार कृत पृथ्वीराज की स्तुति और "आशीर्वाद" ।

पद्धरी ॥ मिलि भट्ट दिट्ठ न्रपती प्रमान । बुलि छंद बंध सम चाहुआन ॥
तुहि इंदप्रथ्थ आजानबाह । तुहि अग्गि तूल चालुक्क दाह ॥
छं० ॥ ६६ ॥

तुंहि भंजि जुद्ध परिहार धाइ । तुंहि पंच पथ्थ प्रथिराज राइ ॥
तुंहि भंजि मान जैचंद पंग । तुंहि बीर मुरबि तुंहि काम अंग ॥
छं० ॥ ६७ ॥

तुंहि सूर रूप तुंहि अम्मराइ । तुंहि भेद अभेदन बेद गाइ ॥
तुंहि मौज त्याग दिथ्यौ न ईस । नन सर वरीस धन्नाधि तीस ॥
छं० ॥ ६८ ॥

विक्रम्म पच्छ सब बंध तूंहि । तुंहि साल पंग सुरतान तूंहि ॥
मम दिट्ठ वाद श्रोतान लग्ग । सोइ देषि आज प्रथिराज द्रिग्ग ॥
छं० ॥ ६९ ॥

दूहा ॥ दिय असीस प्रथिराज कों । बहुत भाव गुन चाव ॥
साम दाम दंड भेद करि । तब तिन बेध्यौ राव ॥ छं० ॥ ७० ॥

कवित्त ॥ बैनह बेध्यौ राव । चाव बेध्यौ चहुआनं ॥
गगन भान गाहतौ । भोमि गाहै पल पानं ॥
सूर गरूअ [1]गुर बीर । बीर बीराधि सु बीरं ॥
छत्रपती छिति सोभ । सूर सामंत सु धीरं ॥
सुरतान गहन मोषन सुबर । उभय बेद एकत्त कर ॥
हिंदवान लाज सोभै सु उर । कहै भट्ट द्रुग्गा सु बर ॥ छं० ॥ ७१ ॥

पृथ्वीराज का दुर्गा केदार को सादर आसन देना ।

करि जुहार चहुआन । भट्ट आदर बहु किन्नौ ॥
मुक्कि न्रपति आषेट । चिंति मुक्काम सु दिन्नौ ॥
संझ महल परमान । भट्ट दोऊ रस बढ्ढे ॥

(१) मो.-गुर, उर ।

उन उचार उच्चरत। वाद दोऊ तब बढ्ढे ॥
उच्चर्‍यौ द्रुग्गा केदार बर। क्यौं बरदा अप्पन ग्रहै ॥
मानो तो साच बरदाय पनु। जो द्रुग्गा सेंमुष कहै ॥ छं० ॥ ७२ ॥

दुर्गा केदार का निज अभिप्राय कथन।

दूहा ॥ कहै भट्ट न्रप राज सुनि। मुहि मति बुद्धि अगाध ॥
सुनिय चंद बरदाय है। आयौ बद्दन बाद ॥ छं० ॥ ७३ ॥

उसी समय कविचन्द का आना और राजा का दोनों कवियों मे बाद होने की आज्ञा देना।

कवित्त ॥ दिय असीस कविचंद। आय तिन बेर प्रमानं ॥
उभय ध्रम्म हिंदवान। आइ बेठे इक थानं ॥
उभय बेद रह जानि। उभय बरदाय उभय बर ॥
उभय बाद जित वान। उभय वर सूर सिद्ध नर ॥
न्रप राज ताम पुच्छै दुअनि। गुन प्रबंध कवितह रचिय ॥
बरनौ दुबीर तुम बाद बद। ध्यान धरे [1]उभया सचिय ॥
छं० ॥ ७४ ॥

दोनों कवियों का गूढ़ युक्ति मय काव्य रचना।

दूहा ॥ यल्ल अप्पौ सु दुहून कवि। ससि बरनौ इक बाल ॥
इक पूरन बरनौ ससी। इक जंपो वै काल ॥ छं० ॥ ७५ ॥
इक्क कहौ रितु राज गुन। जुगतें जुगति प्रमान ॥
कहै राज कविराज हौ। तत्तहि तत्त बषान ॥ छं० ॥ ७६ ॥
मिलिय चंद भट तास सम। किय सादर सनमान ॥
सु गुन [2]प्रसंसिय अप्प कर। करौ वाद विधान ॥ छं० ॥ ७७ ॥
बाल चंद अरु बाल ससि। द्वै विधि चंद सु मत्ति ॥
वर वसंत पूरन्न ससि। विधि द्रुग्गा किय सत्ति ॥ छं० ॥ ७८ ॥

(१) ए. क्रु. को.-उमया। (२) मो.-प्रसंसित।

कविचन्द का वचन।

कवित्त ॥ चंद चंद बिध कही। सुनो प्रथिराज राज बर ॥
मदन बाज नष लख्यौ। मदन बांन्यौ [1]नवक्क सर ॥
समर सार कत्तरी। दिसा सुंदरि नष षित पिय ॥
चक्र काटि मनमथ्थ। उभय किय तोरि ताहि बिय ॥
दसि अधर बधू मानोज ससि। सिंघ काटि नष बद्धियौ ॥
कटाच्छ सुरति बंकै विषम। कै काम दीप हुप सद्धियौ ॥छं०।७६॥

गाथा ॥ जं कहियं कविचंदं। संभरि रायान रावतं कहियं ॥
द्यौपानं सह राजन। सा जंपी कित्तियं भट्टं ॥ छं० ॥ ८० ॥

दुर्गा केदार का वचन (वैसन्धि)

कवित्त ॥ कहै भट्ट द्रुग्गा प्रमान। वैसंधि उचारिय ॥
पत्र झार अंकुरित। डार नव सुभित कुँमारिय ॥
कोकिल सुर सजि रहिय। भंग सजि पंष उड़ावन ॥
सीतल मंद सुगंध। पवन विममौ [2]भौ भावन ॥
वासंत बिना इन सकल बुधि। सब्ब मनोरथ रच्यौ मन ॥
लहरी समुद्र हंस समुद्र में। उलसि उलसि मध्यें सु तन ॥छं०॥८१॥

कविचन्द का उत्तर देना।

कहै चंद वयसंधि। आय ऐसें गति धारिय ॥
सैसब वपु सिकदार। सु वन पत्तह [3]उत्तारिय ॥
सिसिर थान छुट्टयौ। पट्ट जोवन लै धारित।
काम न्रपति दै आन। कढ्ढि सैसब तन पारित ॥
जागित्त जुब्ब तब भंग तर। [4]सिसिर कढ्ढि भए बंधयौ ॥
नव भए सगुन अचिज्ज तन। आन दीप दोय रंधयौ ॥ छं० ॥ ८२ ॥

दूहा ॥ के छुट्टा तुट्टाति के। के अति घोट उचार ॥

---

(१) ए. कृ. को.-निवक्क।
(२) मो.-मैं।
(३) ए. कृ. को.-उच्चारिय।
(४) ए.-ससिर।

अष्षर कुकवि कवित्त ज्यौं। गति जुन तुट्टाहार ॥
विधि विधि [1]बरन सु अर्थ लिय। अति ढंक्यो न उघारि ॥
अष्षर सु कवि कवित्त ज्यौं ज्यों। चतुर स्त्री हार ॥ छं० ॥ ८४ ॥

दोनों कवियों में परस्पर तन्त्र और मंत्र विद्या सम्बन्धी वाद वर्णन।

सो सरसत्तिय सुष दियन। बाद बरन्न न भट्ट ॥
चित्त मंडि का करन पल। मत कवित्त बढ़ि घट्ट ॥
छं० ॥ ८५ ॥

केदार के कर्त्तव्य से मिट्टी के घट से ज्वाला का उत्पन्न होना और विद्याओं का उच्चार होना।

पद्धरी ॥ केदार कहै सुनि चंद भट्ट। सत अग्र मुष्ष इक मंडि घट्ट ॥
सब मुष्ष होंहि ज्वाला प्रचार। [2]मुष मुष्ष वेद विद्या उचार ॥
छं० ॥ ८६ ॥
कविचंद कहै सुनि भट्ट राज। प्रगटौ जु अप्प विद्या सु साज ॥
केदार ताम मंड्यौ जु घट्ट। उच्चऱ्यौ मुष्ष प्रति अंग षट्ट ॥
छं० ॥ ८७ ॥
सब मुष्ष प्रगटि पावक्क ज्वाल। किल किला सद्द श्रुति बंचि नाल ॥
मंड्यौ सु घट्ट बरदाय चंद। उच्चऱ्यौ मुष्ष प्रथु प्रथुल छंद ॥
छं० ॥ ८८ ॥
दस च्यार मुष्ष विद्या उचार। ज्वाला सु मड्डि सब वारि धार ॥
हुंकार सद्द किलकार हांक। पूरी सु चंद देवी भिलाष ॥
छं० ॥ ८९ ॥
बंधी जु गत्ति जब चंद भट्ट। केदार ताम करि अवर थट्ट ॥
केदार कहै सुनि कवि विवेक। [3]बुल्लाउं बाल जो मास एक ॥
छं० ॥ ९० ॥

---

(१) मो.-ब्रन्नन।
(२) ए. कृ. को.-सब मुष्ष वेद विद्या विचार। (३) ए. कृ. को. बुल्लाउ।

कविचन्द के बल से घोड़े का आशीर्वाद पढ़ना।

कविचंद कहै सुनि चंडिपाल। जंपै छ भाष दिन एक बाल॥
ठढ्ढौ जु अग्ग जकि वाज राज। दिय अषित सीस केदार साज॥
छं०॥ ९१॥

है राज राज दीनी असीस। उट्ठे विचंद दिप कुसुम सीस॥
उच्चर्‍यौ बाज गाथा सु एक। आसीस राज बर विधि [1]विवेक॥
छं०॥ ९२॥

गाथा॥ जिन सारथ सजि पथ्थौ। निज रष्यौ सु ग्रभ्भ उत्तरया॥
जिन रष्यौ प्रहलादौ। सो करौ रष्या राज प्रथिराजं॥ छं०॥ ९३॥

दुर्गा केदार का पत्थर की चट्टान को चलाना और उसमें अंगूठी बैठार देना।

हनूफाल॥ वै संधि बाल प्रमान। घट घटिय द्रुग्गा पान॥
पढ़ि छंद मंच विसाल। नर रीझि देवन माल॥ छं०॥ ९४॥
भय अग्ग जंगम अंग। गति लही थावर जंग॥
रिंगि चल्यौ पाहन पंग। नय जानि जमुन तरंग॥ छं०॥ ९५॥
[2]थुति करत सामँत सूर। धनि चंद मंच गरूर॥
कढ़ि मुद्र कीनिय पानि। नंषीति मध्य प्रमान॥ छं०॥ ९६॥
गुन पढ़त रहिय सुभट्ट। भय प्रथम उपल सु घट्ट॥
कर मंगि मुद्रिक चंद। नन दई मुद्रि कविचंद॥ छं०॥ ९७॥
कीनी सु विद्य प्रमान। फिरि बाद मंडिय जान॥ छं०॥ ९८॥

कविचंद का शिला को पानी करके अंगूठी निकालना।

दूहा॥ प्रथम वाद पाहन कियो। फिरि मंड्यौ बिय बाद॥
चंद सिला पानी करी। दुग्गा आनि प्रसाद॥ छं०॥ ९९॥

साटक॥ छत्रं सीस विराजमान बरयं राजेंद्र राजं बरं॥

(१) ए. कृ. को.-विसेक। (२) ए. कृ. को.-छत, छुत, छुति।